

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182292

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No **H81**
R140 Accession No **G.H.1315**
Author **रघुपति सहाय**
Title **जंजीरे टूटती हैं** 1953

This book should be returned on or before the date
last marked below

ज़ंजीरें टूटती हैं

[उर्दूकी नई कविताएँ]

सम्पादक

रघुपतिसहाय 'फिराक'



प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

१९५३]

[मूल्य ढाई रुपया

प्रथम संस्करण १९५३

मुद्रक और प्रकाशक
जे० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

सभलो कि वो जिन्दाँ गूँज उठा,
भपटो कि वो कैदी छूट गए
उट्टो कि वो बैठी दीवारे,
दौडो कि वो टूटी जजीरे

—'जोश' मलीहाबादी

भूमिका

ये कविताएँ

‘जजीरे टूटती है’ के नामसे ये कविताएँ वर्तमान उर्दू कवियोंकी रचनाओमें सकलित है । प्रगतिशील साहित्यने उर्दू कवियोंको किस सुन्दर और सफल रूपमें प्रभावित किया है, ये सब कविताएँ इस बातके उदाहरणमें पेश की जा सकती हैं । प्रगतिशील-साहित्य-आन्दोलन और योजना कुल पन्द्रह-मोलह वर्षकी चीजे हैं । किसी साहित्यके इतिहासमें पन्द्रह-मोलह वर्षको एक लम्बा समय भी माना जा सकता है और (अगर हम शताब्दियोंकी कल्पना करे तो) एक बहुत छोटा समय भी । यह आन्दोलन साहित्यके लिये कितना उर्वर, रचनात्मक, कल्याणकारी और क्रान्तिकारी साबित हुआ इसका काफी अन्दाजा इन कविताओसे मिल जाता है जिनमें तीन चौथाई कविताएँ सन् १९५०में १९५३के अन्दर लिखी गई हैं । प्रगतिशील-साहित्य-आन्दोलन क्या है इसे समझनेके लिये प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि अली सरदार जाफरीका निम्नलिखित वयान बहुत सहायक हो सकता है —

“प्रगतिशील साहित्यके आन्दोलनकी उम्र पन्द्रह सालकी हो चुकी है और अब वह नौजवान होकर नई शक्तियाँ और नया मौन्दर्य प्राप्त कर रहा है । इस सत्यसे इनकार नहीं किया जा सकता कि यह देशका सबसे बड़ा साहित्यिक आन्दोलन और सबसे बड़ी आयोजना है जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तानकी किसी एक भाषा तक सीमित नहीं । हमारा समस्त सजीव और सुन्दर साहित्य इस आन्दोलनसे सम्बन्धित है । इस आन्दोलनके लिए यह शुभ घटना भी कुछ कम नहीं कि इसको टैगोर, प्रेमचन्द, जोश

मलीहाबादी और दक्षिणके गाधीवादी महाकवि बल्लथूलके आशीर्वाद मिले और इकबालसे प्रोत्साहन मिला ।

“देशकी कई भाषाओ और खासकर दक्षिण भारतमे यह आन्दोलन इतना फैल चुका है कि इसकी जडे कारखानो और खेतोमे फैल गई है । उर्दूमे इसका प्रभाव-क्षेत्र बहुत बढा हुआ है । नये-नये लिखनेवाले इस आन्दोलनसे प्रभावित हो रहे हैं । आज कालेजो और स्कूलोमे तरक्की-पसन्द साहित्यकारोकी किताबे अधिकसे अधिक पढी जा रही है । जो लोग इस आन्दोलनके खिलाफ है या इससे अलग है वे भी इस बातपर ज़ोर देते हैं कि उन्हे भी प्रगतिशील समझा जाय । इस आन्दोलनका सीधा-सीधा सम्बन्ध उस तमाम श्रमजीवी जनतासे है जिसकी उँगलियोकी पोरोमे इतिहास और सस्कृतिकी गंगा बहती है और सारा समाज सींचा जाता है ।

“प्रगतिशील आन्दोलनका एक अन्तर्राष्ट्रीय और विश्वव्यापी पहलू भी है जो जातीय गीमाओ और भौगोलिक सरहदोको तोड़ देता है और मनुष्य जातिकी एक ऐसी कल्पनापेश करता है जो न्याय, प्रेम, और आजादीकी उमंगो और बलबलोसे मालामाल है और जो किसी जातिसे किसी दूसरी जातिकी श्रेष्ठताका कायल नही है । ऐसा यूँ हुआ कि आज गुलामी, मुनाफाखोरी और जनताको लूटने और बर्बाद करनेकी सस्थाएँ भी अन्तर्राष्ट्रीय बन चुकी हैं । इन राक्षसी शक्तियोके खिलाफ आजादी और तहज़ीबकी लड़ाई एक मुल्क या कौम तक बन्द नही रह सकती ।

“जब मलाया और बर्माकी जनता जाग उठती है तो अमरीकामे रबड़ और तेलके व्योपारियोकी नींद हराम हो जाती है, जब न्यूयार्कमें सोनेका भाव चढता है तो हिन्दुतानके गाँव-गाँवमे गल्ला महँगा हो जाता है । जग छिडती है भारतसे दस हज़ार मील दूर और सारे भारतमे महँगाई बढ जाती है, बगालमे चावल मडियोसे गायब हो जाता है, ३५ लाख

आदमी देखते-देखते भूखसे एडियाँ रगड़-रगड़कर मर जाते हैं। तब कृष्णचन्द्र एक कहानी, भट्टाचार्य एक नाटक, अनेक कवि भूखा बगालके शीर्षकपर कविताएँ और अहमद अब्बास एक फिल्म तैय्यार करते हैं इनमेंसे बहुतसी चीजे अनुवादित होकर विदेशोमें पहुँच जाती हैं और सोवियत युनियनका शायर ताजकिस्तानकी ज़बानमें हिन्दुस्तानपर एक शानदार नज़्म लिखता है और इस अन्तर्राष्ट्रीय सहानुभूतिसे हमको प्रोत्साहन मिलता है और हमें इसका अटल सबूत मिलता है कि आजादीकी लड़ाईमें हम अकेले नहीं हैं। अमरीकाका तेजस्वी लेखक होबर्ड फास्ट हमारे लिये हमारे नये जीवनका स्वागत करते हुए कहानियाँ लिखता है। जगत्प्रसिद्ध हब्शी संगीतकार पालराव्सन अपने कथित स्वरोमें भारतको नया सन्देश देता है। तुर्किस्तानका सबसे बड़ा कवि नाज़िम हिकमत अपने देशमें बरसो जेल काटकर भारत-यात्रा करता है और अपनी अमर कविताओंमें हमें नये जीवनका पैगाम देता है। आजादीके ये सजीव विचार ऐसे हैं जो हिन्दू धर्म, इस्लाम या देश देशान्तरोके दरिया पहाड़ या हुकूमतो द्वारा या भाषाओंके अन्तरोके द्वारा रोके नहीं जा सकते। जाति, धर्म, भाषाके भेदोंको ऐसे विचार भेदते हुए भूतलपर फैल जाते हैं। ये ख्यालात इतिहासके परोपर उड़ रहे हैं। इसी तरह हमारे साहित्यकारोंकी रचनाएँ दूसरे देशोंके लोगोंका दिल बढाती हैं। आज मसारके साहित्यकार एक दूसरेके स्वरसे स्वर मिलाकर अपनी आवाज़ ससार भरकी दुखी जनताके दिलोंमें उतार रहे हैं।”

हमारा राष्ट्रीय जीवन तो अभी बहुत कमजोर है। लेकिन पिछले महायुद्धके बादसे ससारके अत्यन्त शक्तिशाली देशोंपर भी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिका इतना जबरदस्त असर पड़ रहा है कि वहाँ उथल-पुथल मच जाती है। अमरीकाके मडियोंके भाव जब चढते हैं तो दुनिया भरमें महँगाई भयानक रूप धारण कर लेती है, जब गिरते हैं तो दुनिया भरके बाज़ारोंमें मदी भयानक रूप धारण कर लेती है। दुनियामें कहीं लड़ाई

छिड़ जातो है तो हर देशमें हाहाकार मच जाता है। पूँजीवादी देशोंके लिये साम्राज्यवादी होना अनिवार्य हो गया है, यहाँ तक कि शक्तिशाली पूँजीवादी देश कमजोर पूँजीवादी देशोंको अपना उपनिवेश बना लेना चाहते हैं। जब हमारा जीवन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिसे इस तरह गुँथा हुआ है तो दुनिया भरसे न्यारे रहकर हम किसी भारतीयता या पृथक और अलग राष्ट्रियताको परवान नहीं चढ़ा सकते। आज भारत-को, एशियाको और दुनियाभरको सबसे बड़ा खतरा तीसरे महायुद्ध छिड़ जानेकी सम्भावनासे है। प्रगतिशील साहित्यका विचार और कल्पना में वह भारत नहीं हो सकता जो अपनी खालमें मस्त रहे। हम ~~उस~~ भारतको प्रगतिशील साहित्यमें झलका और दर्शा सकते हैं जो विश्वव्यापी साम्राज्यवादी शक्तियोंका अखाड़ा बन गया है। अकेले जीनेवाले भारतका आज अस्तित्व ही नहीं है। इन कविताओंमें राष्ट्रियता और अन्तर्राष्ट्रीयता आपसमें आँखमिचौनी खेलती हुई नजर आयेगी। अन्तर्राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और भारतीयताको कमजोर बनानेके बदले और सजीव बना देती है। नई भारतीयता रामराज्य, अशोक, हर्ष और विक्रमादित्यके राज्यकी कल्पनामें बहुत पृथक और बहुत बड़ी चीज है। नई भारतीयतामें करोड़ों किसान, मजदूर, श्रमजीवी और तकलीफसे जीनेवाले पढ़े लिखे, सम्पन्नसे सम्पन्न शिक्षित जीवनकी कल्पना करते हुए नजर आते हैं। उस जीवनकी कल्पना करते हुए जो वर्ग मुक्त होगा और जिसका स्तर प्रत्येक भारतीयके लिये बहुत ऊँचा होगा। नई भारतीयता गोल-मोल भारतीयता नहीं है। यह सत्य इन कविताओंमें झलक रहा है। इस सत्यने हमारे कवियोंको नये स्वर, नई ध्वनियाँ, नई काव्य-चेतना और कलाके नये आदर्श दिये हैं। प्रगतिशील कवि डकेकी चोटपर यह घोषित कर रहे हैं कि भारत उनकी मातृभूमि है आदिकालसे अब तककी भारतीय सस्कृति उनकी जागीर है। रूस और चीनकी क्रान्तियाँ और साम्यवादी देशोंकी

इसलिये दौड़ा देती है कि ससार भरकी जनता जीवनके सग्राममे एक दूसरे-को प्रोत्साहन और बढ़ावा देती है। चिरागसे चिराग जलता है। इसलिये प्रगतिशील साहित्य रूस, चीन और दूसरे साम्यवादी देशोसे उदासीनता नहीं बरत सकता। दुनियाकी कल्याणकारी शक्तियो, प्रयामो और योजनाओसे गाँठ जोड़कर हमे आगे बढ़ना है। दुनिया भरकी सभ्यता एक साँचेमे ढल रही है इसलिये यह इलजाम गलत है कि हम साम्यवादी देशोके जीवनका अनुकरण क्यों करें, जो लोग यह इलजाम देते ह वह इस खुली हुई मच्चाईसे आँखे बन्द करते हैं कि जिस भारतकी वह प्रशंसा करते हैं या स्वप्न देखते हैं वह पूँजीवादी और साम्राज्यवादी देशोका एक घटिया और मरियल या अधमुआ मस्करण होनेके सिवा और कुछ नहीं है। भारतकी उन्नतिके नियम दुनियाके किसी देशकी उन्नतिके नियमसे पृथक्, भिन्न और विपरीत कदापि नहीं हो सकते। अपनी अपनी डफली अपना अपना रागके दिन लद गये। हमारी कलाएँ अनेक भारतीय विशेषताओसे अलकृत होती हुई भी दुनिया भरकी उच्च मस्कृतिको अपनाकर ही फल सकती है।

प्रगतिवादके सम्बन्धमे यह भ्रम भी रहा है कि यहाँ मोन्दर्य उपासना नहीं है। प्रेम-रस, रूप-रस, प्राकृतिक दृश्य इत्यादि जो प्राचीन साहित्यको सुमज्जित और अलकृत करते हैं वह बातें प्रगतिशील साहित्योमे नहीं है। लोग प्रगतिशील साहित्यको रोटी-दाल साहित्य बताते हैं। ऐसा केवल असफल प्रगतिशील साहित्यके लिए ही कहा जा सकता है, सफल प्रगतिशील साहित्यके लिए नहीं। प्रगतिशील साहित्यका विषय सम्पूर्ण मानवता है और दुनियाके दो अरब आदमियोकी तकदीरोको चमका देना है। मानवताका स्तर बहुत ऊपर उठा देना ही उसका लक्ष्य है। यह विषय और यह लक्ष्य किसी तरह प्राचीन साध-साहित्यके विषय और लक्ष्यसे कम नहीं। ये कविताएँ इसी विषय और लक्ष्यकी ओर मकेत करती हैं।

ये कवितायें कैसे पढ़ी जाँय ?

जब इनमेंसे कोई कविता पढ़ना शुरू करे तो उसके छन्दके ताल-सम एव भनकार और छन्दकी लयको पकड़िये। इसका ध्यान रखिये कि छन्दकी मात्राओं और छन्दके खटकोके अनुसार निम्नलिखित मात्राये कभी बढ़ाकर (दीर्घ स्वरसे) कभी घटाकर (लघु या ह्रस्व स्वरसे) पढ़ना जरूरी है —

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

जहाँ इन्हें छोटा करके पढ़ना छन्दके अनुसार आवश्यक है वहाँ इनकी अलगसे मात्रा गिनी नहीं जाती जैसे—‘दोहरा’ में ‘ओ’ की मात्रा गिनी नहीं जाती यानी यह शब्द पाँच मात्राओंका नहीं बल्कि चार मात्राओंका माना जाता है। ‘द’ के उच्चारणमें ही ‘ओ’ का उच्चारण मिला दिया जाता है। ऐसा ही ‘तेहरा’ के उच्चारणमें भी करना पड़ता है। मिमालके तौरपर उर्दूकी निम्नलिखित पक्तियोंको देखिये —

न कुछ हम हँसके सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं
जो कुछ थोड़ा-सा सीखे हैं किसीके होके सीखे हैं

पहली पक्तिमें दो बार ‘के’ शब्द आया है और दोनों स्थानोंपर यह शब्द एक मात्राका है यानी ‘ए’ की मात्राको ह्रस्व करके पढ़ना चाहिये। दूसरी पक्तिमें ‘सा’ में ‘आ’ की मात्रा ह्रस्व है और ‘थोड़ा-सा’ बराबर है ‘थोड़ा-स’के। लेकिन पहली और दूसरी दोनों पक्तियोंमें ‘सीखे’ में ‘ए’ की मात्रा दीर्घ है और दूसरी पक्तिमें ‘होके’ में ‘के’ की मात्रा ह्रस्व है।

तुम्हारी तहजीब अपने हाथोंसे आप ही खुदकुशी करेगी
जो शाखे-नाजूक पै आशियाना बनेगा नापायदार होगा

पहली पक्तिमें ‘तुम्हारी’ की ‘ई’ ह्रस्व, ‘अपने’ में ‘ए’ ह्रस्व, ‘से’ में ‘ए’ ह्रस्व, ‘खुदकुशी’ और ‘करेगी’ में ‘ई’ और ‘ए’ दीर्घ। दूसरी पक्तिमें

‘जो’ मे ‘ओ’ ह्रस्व, ‘शाखे’ मे ‘ए’ ह्रस्व, ‘पै’ मे ‘ऐ’ ह्रस्व, ‘बनेगा’ मे ‘आ’ ह्रस्व, ‘ए’ दीर्घ, बाकी शब्दोमे हर स्वर दीर्घ ।

‘औ’ की मात्रा कहाँ दीर्घ और कहाँ ह्रस्व करके पढ़नी चाहिये ?
गालिबके इस मिसरेके —

क्या खूब कयामतका है गोया कोई दिन और

‘और’ शब्दमे ‘औ’ की मात्रा दीर्घ है लेकिन गालिबके इस शेरके —

तू और आराइशे-खमे-काकुल

मैं और अन्देशहाय दूर-ओ-दराज

दोनों मिसरोके ‘और’ शब्दमे ‘औ’ को ह्रस्व करके पढ़ना पड़ेगा ।
यहाँ और दो मात्राका शब्द हो जाता है और ‘आ’ या ‘का’ के बराबर हो जाता है । ‘ऊ’ की मात्रा दीर्घ है लेकिन गालिबके इस मिसरेके —

मैं हूँ और अफसुर्दगीकी आराजू गालिब कि दिल

‘और’ मे ‘औ’ की मात्रा ह्रस्व है और ‘हूँ’ मे ‘ऊ’ की मात्रा ह्रस्व है जिसे ‘हुँ’ पढ़ना चाहिये । ‘ऐ’ की मात्रा —

कन्या अब कामिनी है होने वाली

आँखोको नयन बनाने वाले दिन है

पहली पक्तिमे ‘है’ मे ‘ऐ’ की मात्रा ह्रस्व है दूसरी पक्तिमे ‘है’ मे दीर्घ है । ‘बनाने’ मे ‘ए’ की मात्रा ह्रस्व है ‘वाले’ मे दीर्घ । ‘दिन है’ मे ‘ऐ’ की मात्रा दीर्घ है ।

‘यह’ और ‘वह’ के शब्द जब उर्दू कवितामे आते हैं तो प्रायः ‘ह’ का उच्चारण नहीं किया जाता और ये शब्द बोले जाते हैं—‘ये’ और ‘वो’ । ‘ये’ मे ‘ए’ की मात्रा कभी ह्रस्व होती है कभी दीर्घ, और ‘वो’ मे भी ‘ओ’ की मात्रा कभी ह्रस्व कभी दीर्घ ।

हिन्दीके जितने छन्द हैं उन सबमे उर्दू शायरी हो सकती है और एकाध छन्द छोड़कर सबमे सुन्दरसे सुन्दर उर्दू शायरी हो चुकी है ।

इन छन्दोके अतिरिक्त उर्दूमे अनेक ऐसे छन्दोका भी प्रयोग किया गया है जिनमे खड़ी बोली बहुत सुगम और स्वाभाविक रूपसे ढल गई है। हिन्दी कवि यदि इन छन्दोकी ओर ध्यान दे तो हिन्दी और उर्दू एक दूसरेके बहुत निकट आ जायँगी।

आजकल प्रयोगवादकी एक फुलभूडी हिन्दी कवितामे कुछ लोगोने छोड़ रखी है। इन लोगोने प्रयोगवादकी जैसी मिसाले पेश की हैं उसे मे “भ्रूखमारवाद” कहता हूँ।

अत्फ और इजाफत

हमारी बोलीमे अधिकसे अधिक शब्द तद्भव और देशज है। इन शब्दोके बाद जो शब्द सबसे अधिक हमारी बोलीमे घुल-मिल गये हैं वे फारसीके शब्द हैं। फारसी भी आर्यभाषा है और फारसीके शब्द भी तत्सम् मस्कृत शब्दोके तद्भव रूप हैं। फारसीके बाद हमारी बोलीमे लगभग एक हजार सरल और सुगम अरबी शब्द घुल-मिल गये हैं। तत्सम् मस्कृत शब्द हमारी बोलीमे सबसे कम हैं। उर्दूमे फारसी-अरबी शब्द अधिकतर फुटकर रूपमे आते हैं। कुछ शब्दोके जोड़े होते हैं। मस्कृत और हिन्दीमे य जोड़े शब्द बिना किसी सयोजकके, समासके रूपमे आते हैं जैसे —धन-धान्य, मान-मर्यादा। यहाँ तक कि जब एक शब्द मस्कृत या हिन्दीका हो और दूसरा फारसी या अरबीका हो तब भी ये शब्द बिना किसी सयोजकके साथ-साथ आते हैं जैसे —धन-दौलत, इज्जत-पानी, रंग-रूप, खेल-तमाशा, बाल-बच्चे, शादी-व्याह। लेकिन जब जोड़े शब्दोमे या समासके रूपमे साथ लाये जानेवाले दोनो शब्द फारसी या अरबीके हो तो ‘ओ’ का सयोजक बीचमे लाया जाता है ‘ओ’ का अर्थ है ‘और’। हम गंगा-जमुना कहते हैं लेकिन फारसीमे इसे ‘गंग-ओ-जमन’ कहते हैं, हम ‘आग-पानी’ कहते हैं, फारसीमे इसे ‘आतिश-ओ-आब’ कहते हैं, इस ‘ओ’ के सयोजकको ‘अत्फ’ कहते हैं यानी सज्ञाओको मिलानेवाला। इन कविताओमे अनेक स्थानोपर ‘अत्फ’ का प्रयोग किया गया है। ‘अत्फ’-

का 'ओ' कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है यह बात छन्दपर निर्भर है।

यो तो समास आठ तरहके होते हैं और इन सबमें जो विभक्तियाँ छपी हुई हैं वह आठ तरहकी होती हैं। समासके स्थानपर उर्दू कवि अक्सर 'इजाफत' का प्रयोग करते हैं जिसका सूचक 'ए' का अक्षर है जो कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है। इजाफतमें शब्दक्रम बदल जाता है जैसे हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिल कहेंगे, प्रेमीके हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिले-आशिक कहेंगे। हिन्दीमें इजाफतको अर्थ करनेका सीधा ढग यह है कि पहले अन्तिम शब्दका अर्थ किया जाय और उसके बाद 'का' या 'के' लगाकर पहले आनेवाले शब्दका अर्थ किया जाय। इस तरह दर्दे-दिले-आशिकका अर्थ हुआ आशिकके दिलका दर्द। गालिबके इस शेरकी पहली पक्तिमें इजाफत और अत्फ दोनोंकी मिसालें साथ ही मिल जायँगी —

**कैदे-हयात-ओ-बन्दे-गम, अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी गमसे निजात पाये क्यों**

“अर्थात् जीवनका बन्धन और गमका बन्धन वास्तवमें दोनों एक हैं इसलिए मौतसे पहले आदमीको गमसे मुक्ति या छुटकारा कैसे मिले।” पहली पक्तिमें “कैदे और बन्दे” में 'ए' की मात्राएँ इजाफत हैं और दोनोंको ह्रस्व पढ़ना चाहिये। 'ओ' का शब्द 'अत्फ' है जिसका अर्थ है और। 'अत्फ'को व करके न कभी लिखना चाहिये न कभी पढ़ना चाहिये। उपरोक्त पक्तिमें 'ओ' को भी ह्रस्व पढ़ना चाहिये। लेकिन छन्दके अनुसार इजाफत में 'ए' की मात्रा और अत्फमें 'ओ' की मात्रा दीर्घ करके भी पढ़ी जा सकती है।

कविताका नया दृष्टिकोण

“हमे सौन्दर्यकी कसौटी बदल देनी है।”

—प्रेमचन्द

“जनतासे अलग रहकर हम बिल्कुल अजनबी बन जायेंगे। साहित्यकारोको मनुष्योसे मिलजुलकर उन्हें पहचानना है। मेरी तरह एकान्तवासी रहकर उनका काम नहीं चल सकता। मैंने एक मुद्दत तक समाजसे अलग रहकर अपनी साधनामे जो गलती की है अब मैं उसे समझ गया हूँ और यही वजह है कि आज यह सन्देश दे रहा हूँ। मेरी चेतनाका तकाजा है कि मानवता और समाजसे लगाव रखना चाहिये और प्रेम करना चाहिये। अगर साहित्य मानवतासे तादात्म्य स्थापित न कर सका तो वह अपने लक्ष्य और आकाक्षाओको पानेमे विफल रहेगा। यह सत्य मेरे दिलमे उस चिरागकी तरह रोशन है जिसे कोई दलील या तर्क वितर्क बुझा नहीं सकता।”

—रवीन्द्रनाथ टैगोरका पत्र
प्रगतिशील लेखकोके नाम

विषय-सूची

		पृष्ठ
	भूमिका	५
	ये कविताएँ कैसे पढ़ी जाय	१०
	कविताका नया दृष्टिकोण	१४
१	बंगालका काल	३ कविताएँ १-८
२	भूठी आजादी	६ " ६-५५
३	साम्प्रदायिक हत्याकांड	५ " ५६-७३
४	विश्व शान्ति	८ " ७४-१०२
५	गजले और गीत	१७ " १०३-१२०
६	नई चेतना	६० " १२१-२५४

नोट . प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत कविताओंकी सूची उसके साथ दी गई है ।

बंगाल का काल

यह विचार निर्मूल है कि उर्दूके कवि भारतसे प्रेम नहीं करते। मन् १९४३ में बंगालके विदेशी शासकों और वहाँके चोर बाजारियोंने ऐसा षड्यन्त्र रचा कि पूरे बंगालसे चावल और दूसरे अनाज गायब हो गये। बंगालकी ६ करोड़की आवादीमें हाहाकार मच गया। कुछ ही दिनोंके अन्दर ३५ लाख बंगाल निवासी भख्से तड़प-तड़पकर मर गये। ऐसा महाकाल इस पीढ़ीके लोगोकी यादमें पहले कभी नहीं आया था। उर्दूमें बंगालके कालपर सैकड़ों कविताएँ लिखी गईं, दर्जनों कहानियाँ लिखी गईं और कुछ नाटक भी लिखे गये। इससे उर्दू लेखकोके दिलका दर्द और उनका भारत-प्रेम साफ-साफ प्रकट होता है। उर्दूमें इस विषयपर जैसा और जितना कुछ लिखा गया है वह हमारे साहित्यके लिये गौरवकी चीज है। इस पुस्तकमें हम केवल तीन कविताएँ बंगालके कालपर शामिल कर रहे हैं। हर कवितामें एक नये अन्दाजसे शायरका दिल खून होता हुआ और धड़कता हुआ दिखाई और सुनाई देता है। तीनों शायरोने एक दूसरेकी बात कही भी दोहराई नहीं। तीनोंकी आवाजे अलग अलग हैं। हर कविताकी ध्वनि, दृश्य-चित्रण और भावचित्रण एक दूसरेसे बिल्कुल जुदागाना है। एक ही विषयपर एक दूसरेसे इतनी अलग कविताएँ पढ़नेमें बहुत आनन्द आयेगा। दुख भरा साहित्य भी कितना रगा-रग हो सकता है, मिसरोकी बन्दिश, चुस्ती और रवानी और भावके चुटीले-पन और सगीतके अनेक गुजनोपर ध्यान दीजिये। हर कविताकी शैली अलग होते हुए भी हर एककी भाषा किस तरह सॉंचेमें ढली हुई है इसे भी देखिये। अगर पहली बार पढ़नेमें कविताकी ध्वनि आप पकड़ न सके तो कई बार इन कविताओको पढ़िये और उनके स्वरोमें अपना स्वर मिला दीजिये।

सूची

	पृष्ठ
१ भूखा है बगाल—‘वामिक’ जौनपुरी	३
२ कहते-बगाल—कमाल अहमद सिद्दीकी	५
३ कलकत्ता—‘कैफी’ आजमी	७

भूखा है बंगाल

‘वामिक’ जौनपुरी

पूरब देसमें डुग्गी बाजी फैला दुखका जाल
दुखकी अगिनी कौन बुझाये सूख गये सब ताल
जिन हाथोने मोती रोले आज वही कगाल रे साथी
आज वही कगाल
भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

पीठसे अपने पेट लगाये लाखो उलटे खाट
भीख-मँगाईसे थक-थककर उतरे मौतके घाट
जियन मरनके डाँडे मिलाये बैठे हैं चडाल रे साथी
बैठे हैं चडाल
भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

नद्दी नाला गली डगरपर लाशोके अबार
जानकी ऐसी महँगी शय^१ पर उलट गया ब्योपार
मुट्ठी भर चावलसे बढ़कर सस्ता है यह माल रे साथी
सस्ता है यह माल
भूखा है बगाल रे साथी भूखा है। बगाल

^१चीज़, वस्तु

कोठरियोमे गाँजे बैठे बनिये सारा नाज
 सुन्दर नारी भूखकी मारी बेचे घर-घर लाज
 चौपट नगरी कौन सँभाले चार तरफ भौंचाल रे साथी
 चार तरफ भौंचाल
 भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

पुरखोने घर बार लुटाया छोड़के सबका साथ
 माएँ रोई बिलख-बिलखकर बच्चे भये अनाथ
 सदा सुहागिन विधवा बाजे खोलके सरके बाल, रे साथी
 खोलके सरके बाल
 भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

अत्ती पत्ती चबा-चबाकर जूझ रहा है देस
 मौतने कितने घूँघट मारे बदले सौ-सौ भेस
 काल विकट फैलाय रहा है बीमारीका जाल रे साथी
 बीमारीका जाल
 भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

धरती माताके सीनेमें चोट लगी है कारी
 माया कालीके फन्देमें वक्त पडा है भारी
 अबसे उठ जा नींदके माते देख तो जगका हाल रे साथी
 देख तो जगका हाल
 भूखा है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

कहते-बंगाल

(बंगालका काल)

कमाल अहमद सिद्दीकी

हाय दोशीज़ए-बंगालकी^१ यह धज ए दोस्त
जिसकी जुल्फोके खुनक^२ सायेमे टँगोरके^३ गीत
पैहम^४ अँगडाइयाँ लेते थे बहारोकी तरह
जिसके तरशे हुए होठोकी दिलावेज़ीमे
नज़हलइसलामके^५ नगमात^६ रचे रहते थे
लाला-ओ-गुलके^७ शफकबार^८ शरारोकी^९ तरह
हाय दोशीज़ए-बंगालकी यह धज ए दोस्त
आज उसपर किसी बेवाका गुमाँ होता है

भूखने उसके जवाँ जिस्मकी रअनाईको^{१०}
इतना रौंदा है कि अब भूखकी तस्वीर है वो
जो हसी जिस्म^{११} सितारोने भी देखा न कभी
आज एहसास^{१२} नही है उसे उरियानीका^{१३}
सरे-बाज़ार चला आया है बिकनेके लिये

^१बंगालकी कुमारी ^२ठंडे ^३गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ^४बार-
वार ^५मनोहरता ^६बंगालके प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि ^७गीत
^८‘लाल रंगके फूलको लालअ कहते हैं, गुल=फूल ^९‘लालिमा बरसाती
^{१०}‘चिनगारियो ^{११}‘सुन्दरता ^{१२}‘सुन्दर शरीर ^{१३}‘अनुभव
^{१४}नग्नता

कलकत्ता

कैफी आजमी

*“कलकत्ताका जो जिक्र किया तूने हमनशी^१
एक तीर मेरे सीने पे मारा कि हाय-हाय”
रस्तो पे रेंगते हुए भूखे हजार हैफ^२
गुरबतका^३ जांगुदाज नजारा^४ कि हाय-हाय
वह खाकपर बिलखते हुए तिफले-जाँ-ब-लब^५
वह डूबता हर एक सितारा कि हाय-हाय
बच्चे जवान औरते बे आस हैं सभी
आराम इस तरहसे सिधारा कि हाय-हाय
सडको पे वह पडी हुई भूखोकी मैयते^६
लाशोसे पुर^७ हर एक किनारा कि हाय-हाय
होती हुई तबाह वह गुजान^८ बस्तियाँ
चढता हुआ वह कहत्^९ का धारा कि हाय-हाय
इन्साँ तरस रहे हैं निवालेके^{१०} वास्ते
जीनेका यो मिटा है सहारा कि हाय-हाय
जलते हुए वो पेट वो आँखें धँसी हुई
भडका हुआ क़त्लाका^{११} शरारा^{१२} कि हाय-हाय

*ये पक्तियाँ महाकवि गालिबकी हैं 'साथी' 'अफसोस' 'गरीबी'
'जानको घुला देनेवाला, दर्दनाक' 'बच्चे जिनके होठोपर जान हो'
'शव' 'भरा हुआ' 'घनी' 'काल' 'ग्रास, कौर' 'मृत्यु' 'चिनगारी'

वह कहत-ओ-बेकसी वो हुकूमतकी बेहिमी^१
 वो ताजिराने-मस्त-ओ-खुदारा^२ कि हाय-हाय
 लटके हुए गुदामोमे वो कुपले-आहनी^३
 वो नफअका जलील नजारा कि हाय-हाय
 'कैफी' तडप उठी है वतनकी जमाअते^४
 भखोने इस तरहसे पुकारा कि हाय-हाय

^१बेपरवाही ^२मस्त और घमडी व्यापारी ^३लोहेके ताले ^४सस्थाएँ

भूठी आज़ादी

किमी अत्याचार या अन्यायके बारेमें यह नहीं समझना चाहिये कि उसका एक ही रूप होता है। भारतपर अंग्रेजी राज और हमारी गुलामी, साम्राज्यवादी और पूँजीवादी दूसरे देशों द्वारा हमारी बरबादी और हमारा शोषण ऐसे विषम सत्य हैं जो अनेक भेस बदला करने हैं और जो अनेक तरीकोसे अपने बहुरूप दिखाते हैं। गुलामी या दामता इस नई दुनियामें और इस नये युगमें भूठी आजादी या भूठे स्वराजका रूप भी धारण कर लेती है। कभी गुलामी साकार रूपमें रहती है, कभी निराकार रूपमें हमारा खून चूसती है। आज सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता हमारे लिये यह है कि करोड़ों प्राणियोंमें इस बातकी जीती जागती चेतना पैदा हो जाय कि हमारी आजादी गुलामीका एक बहुरूप है। अभी हमारा जीवन साम्राज्यवादी देशोंकी पकड़ और जकड़में मुक्त नहीं हुआ है। आर्थिक सहायताके रूपमें, देशकी अनेक योजनाओंमें सलाहकारों और विशेषज्ञोंके रूपमें, हमारी फौजमें फोड फॉस करनेवालोंके रूपमें, भारतमें दूसरे देशोंके स्वतंत्रता संग्रामको मिटानेके लिये गोरखोंकी भरती करनेकी अनेक आढते स्थापित करनेके रूपमें, हमारे बहुतसे व्यवसायोंको दाब रखने और अपना रखनेके रूपमें विदेशी अब तक हमारे ऊपर छाये हुए हैं और हमारी उन्नतिका गला घोट रहे हैं इसलिये हमें अपनी भूठी आजादीको सच्ची आजादी बनानेके लिये एक दूसरी लड़ाई लड़नी है।

प्रगतिशील साहित्य इस अतिआवश्यक चेतनाको जगानेका एक प्रबल साधन है। साहित्यको अगर गलत विचारधाराओंका नशा चढ़

गया तो समाजको जगानेके बदले ऐसा साहित्य समाजको भुलावे दे-देकर सुलाता रहता है। जगानेकी भैरवी बननेके बदले साहित्य सुलानेकी लोरियाँ बन जाता है। भूठी आजादीपर ये कविताएँ सुलानेकी लोरियाँ नहीं हैं, जगानेकी भैरवी हैं। उर्दू साहित्य इन कविताओमे इस बातका सबूत दे रहा है कि वह भूठी राष्ट्रीयता, भूठी जातीयता, भूठे देशप्रेम या भूठे कौमी घमडके बदले सच्ची राष्ट्रीयता, सच्ची जातीयता, सच्चे देश-प्रेम और सच्चे कौमी घमडका शखनाद है। आजका उर्दू साहित्य और देश भरका प्रगतिवादी साहित्य क्रान्तिआत्मक हो चुका है।

ये कविताएँ राजनैतिक व्यंग्य, सामाजिक असतोष, नई राष्ट्रीय चेतना, क्रान्तिआत्मक विचारधाराकी सूचक हैं। यहाँ भी उर्दू कवियोंकी आवाजे रगारग हैं, कल्पनाएँ विविध प्रकारकी हैं, कलाएँ नई-नई जगमगाहटों और नये-नये चमत्कारोंसे झलक रही हैं। कही बँधी टकी वाते नहीं कही गई है। आजादीकी सच्ची कल्पना कविताके लिये कितनी उर्वर होती है, किस तरह इस कल्पनामे अनेक काव्यस्रोत फूट पडते हैं, इन कविताओमे कितनी सुबहोंकी पवे फट रही हैं, उनकी आवाजे कितनी जागती हुई आवाजे हैं, इन आवाजोंके चढाव उतारमे आनेवाले जमानेके दिलकी धडकने किस तरह सुनाई दे रही हैं, भारतीय जन-क्रान्ति इन कविताओमे किस तरह अगडाइयाँ ले रही हैं ये सब बातें, नई जागृति के ये सब लक्षण इन कविताओमे विद्यमान हैं।

सूची

	पृष्ठ
१ मातमे-आजादी—‘जोश’ मलीहावादी	१३
२ फरेब—अली सरदार जाफरी	३०
३ जजीर टूटती है—‘मखमूर’ जालन्धरी	३४
४ नया सूरज—मुईन अहसन ‘जज्बी’	३६
५ आजादी—जॉनिसार अस्तर	३८
६ आजादीका दिन—मसऊद हुसैन	४३
७ तिशनगी—नियाज हैदर	४५
८ आजादीकी पूजा—‘फिक्र’ तौसवी	४८
९ १५ अगस्त एक कहानी—‘फिराक’ गोरखपुरी	५०

मातमे-आज़ादी

‘जोश’ मलीहावादी

(१)

ए हमनशी^१ फसानए-हिन्दोस्ताँ^२ न पूछ
रूदादे-जाम-बस्त्रिये-पीरे-मुगाँ^३ न पूछ
बरबतसे^४ क्यो बलन्द हुई है फुगाँ^५ न पूछ
क्यो बागपर मुहीत है अब्ने-खिजाँ^६ न पूछ
क्या-क्या न गुल खिले रविशे-फैजे-आमसे^७
काँटे पड़े ज़बानमे फूलोके नामसे

(२)

शाखे हुई दो-नीम^१ जो ठंडी हवा चली
गुम हो गई शमीम^२ जो बादेसबा^३ चली
अंगरेज़ने वह चाल ब-जौर-ओ-जफा^४ चली
बरपा हुई बरातके घरमे चलाचली
खूने-चमन बहारके आते ही बह गया
उतरा जो तौक^५ और भी दम घुटके रह गया

^१साथी ^२हिन्दुस्तानकी कहानी ^३साकीके जाम देनेका हाल,
^४सितार ^५कराह, दुखकी आवाज ^६छायी ^७हेमन्त ऋतुकी बदली
‘व्यगके स्वरमे कहा गया है कि लोक हितके इस तरीकेसे क्या-क्या
गुल नही खिले, फूलोका नाम लेनेसे भी ज़बानमे काँटे पड़ गये ^८दो
टुकड़े ^९सुगंधित ^{१०}सुबह को चलनेवाली हवा ^{११}जबरदस्ती और
जुल्म के साथ ^{१२}गुलामी का पट्टा या जुआ

(३)

भूमी घटा—फिजा शरर-आमेज^१ हो गई
 खोली खुशीने जुल्फ^२—गमअगेज^३ हो गई
 मचली नसीम^४ अक्ल जुनूं-खेज^५ हो गई
 सायेमें धूप और भी कुछ तेज हो गई

पारा, चली जो सदैव हवाएँ तो चढ़ गया
 दरमाँ^६ हुआ तो दर्दे-जिगर और बढ़ गया

(४)

एक दिलनशी^७ कली जो सरे-बाग^८ खिल गई
 तो खाकमे लताफते-गुलज़ार^९ मिल गई
 पहनी कबाए-नर्म^{१०} तो जित्द^{११} और छिल गई
 ठहरा जो दिल तो सबकी बुनियाद हिल गई

शबनम उधर गौहर वरके-गुलपै^{१२} जड़ गई
 गुलज़ारे-जिन्दगीपै^{१३} इधर ओस पड़ गई

(५)

बाजे बजे तो शोरे-फुगों^{१४} दूर तक गया
 कश्ती^{१५} मिली तो खैरसे दरिया बिचक^{१६} गया

ऐसा वायुमंडल जिसमे चिनगारियाँ मिलीं हो ^१बाल, केश ^२दुख
^३पूर्ण ^४पवन ^५पागलपनसे पूर्ण ^६इलाज, चिकित्सा ^७मनोहर ^८बागमे
^९वाटिकाकी सजावट, पवित्रता ^{१०}मुलायम वस्त्र ^{११}खाल, त्वचा
^{१२}फूलकी पखुडीपर मोती ^{१३}जीवन-वाटिका ^{१४}चीत्कार, फरियादका
 शोर ^{१५}नाव ^{१६}उथला हो गया

शबनम गिरी, दिले-समन-ओ-सर्व^१ पक गया

बूंदे पडों तो और भी गुलशन दँदक^२ गया

अपना गला खरोशे-तरझुमसे^३ फट गया

तलवारसे बचा तो रगे-गुलसे^४ कट गया

(६)

दौलत मिली तो और भी नादार^५ हो गये

सेहत^६ हुई नसीब तो बीमार हो गये

उतरा जो बार^७ और गराँबार^८ हो गये

आजाद यूँ हुए कि गिरफ्तार हो गये

पिघला जो आस्माँ तो ज़मी सग^९ हो गई

पौ यूँ फटी कि सुबहे-चमन दग हो गई

(७)

बातिल^{१०} हुआ जो खौफ तो दिल और डर गया

भोगी मसे^{११} तो जीस्तका^{१२} मुँह और उतर गया

पाया सुबू^{१३} तो उम्रका पैमाना^{१४} भर गया

पुरसाँ हुए मसीह^{१५} तो बीमार मर गया

नगमे छिडे तो शोरिशे-पैकार^{१६} बन गये

गूँजे जो राग, तेगकी भकार बन गये

^१चमेली और सनोवर (एक वृक्ष जो बिलकुल सीधा होता है)
^२धधक ^३चीखकर गानेसे ^४फूलकी नस ^५निर्धन ^६स्वास्थ्य ^७भार ^८और भी
भारी बोझके नीचे दब गये ^९पत्थर ^{१०}निर्मूल ^{११}रेख ^{१२}जीवनका ^{१३}घड़ा,
मटका ^{१४}गिलास, प्याला ^{१५}हकीम, चिकित्सक, हजरत ईसाको मसीह
भी कहते हैं जो मुर्दोंको भी जिला देते थे ^{१६}लडाईका शोर

(८)

चहके जो एतमादके^१ गुलज़ारमे तयूर^२
 बेएतमादियोका गया शोर दूर-दूर
 दौडा रुखे-फसुर्दापै^३ जब ज़िन्दगीका नूर^४
 दी मौतने सदा कि “नमस्ते श्री हुज़ूर
 “बाकी रहे जगह न कोई सौतके लिये
 “लौंडी सभामे आई है डडौतके^५ लिये”

(९)

फितने मिटे तो अम्नकी^१ दौलत नही रही
 इन्सानकी वो कद्र^२ वो कीमत नही रही
 हासिल हुआ उरूज^३ तो इज़्जत नही रही
 पाई जो हुरियत^४ तो हरारत^५ नही रही
 जब रोज़गार नर्म हुआ सग^६ हो गये
 वुसअत^७ मिली तो और भी दिल तग हो गये

(१०)

छिटकी जो चाँदनी तो बढी जुल्मतोकी^१ शान
 बाज़ार जब खुला तो हुई बन्द हर दुकान
 छेडे जो राग सरपै कडकने लगी कमान^२
 छतकी लगी जो डाट तो शक^३ हो गया मकान
 दरमाँसे और दिल हम तन-दर्द^४ हो गया
 फूटी किरन तो सुबहका मुँह ज़र्द^५ हो गया

^१विश्वासके ^२पक्षीगण ^३उदास मुखपर ^४ज्योति, चमक ^५दडवत
^६भगडे ^७शान्ति ^८मान, प्रतिष्ठा ^९उत्थान, उन्नति ^{१०}स्वाधीनता ^{११}गर्मी
^{१२}कडे, पत्थर ^{१३}फैलाव, विस्तार ^{१४}अधिकारो, अधियारियो ^{१५}धनुष
^{१६}फट गया ^{१७}साकार पीडा ^{१८}पीला

(११)

शादी हुई तो गमके खजाने लुटा दिये
कुछ यूँ दिये जलाये कि दिल ही बुझा दिये
सेहरा बँधा तो शर्मके पर्दे उठा दिये
मेहदी लगी तो खूनके दरिया बहा दिये

दूल्हा बने तो हँसे-मसरतसे^१ बढ गये
घोड़ेको लात मारके सूलीपे चढ गये

१ (१२)

दहके तो सोजे-मौजे-तकल्लुम^२ नही रहा
चहके तो लह-ओ-रग-ओ-तरझुम^३ नही रहा
लहके तो रक्स-ओ-रग-ओ-तबस्सुम^४ नही रहा
महके तो बूए-गुलका तलातुम^५ नही रहा

काँपे जो तार—देवे-महन^६ बोलने लगा
खेमे हुए जो नस्ब^७ तो रन बोलने लगा

(१३)

उभरे तो जोशे-बादा-गुसाराँ^८ नही रहा
बादल घिरे तो रगे-बहाराँ^९ नही रहा
रातें खिली तो रक्से-निगाराँ^{१०} नहीं रहा
बोतल खुली तो मजमए-याराँ^{११} नही रहा

^१प्रसन्नताकी सीमा ^२हम इस तरह दहके कि बात करनेकी गर्मी भी जाती रही ^३यो चहके कि संगीतका स्वर और साज लुप्त हो गया ^४यो लहके कि नाच, रग, मुस्कराहट सब कुछ जाता रहा ^५फूलों की सुगंधका तूफान ^६दुखका देवता ^७गडे ^८शराब पीने वालोंका जोश ^९बसन्तका रग ^{१०}सुन्दरियोंका नृत्य ^{११}दोस्तोंका जमघटा

कोई सबीले-बादा-परस्ती^१ नहीं रही
मस्तीकी रात आई तो हस्ती^२ नहीं रही

(१४)

जब बागवाने-कौम^३ ज़फरमन्द^४ हो गया
हर बर्गे-नर्म^५ खाकका पैवन्द^६ हो गया
आशिक जो वस्ले-यारसे^७ खुरसन्द^८ हो गया
फालिज^९ गिरा दिमागपे, दिल बन्द हो गया
उतरा बुखार,^{१०} अक्लको ताऊन^{११} हो गया
पैदा हुआ लहू तो जिगर खून हो गया

(१५)

बखिया^{१२} हुआ तो और भी चादर उधड़ गई
बन्धन खुले तो जिस्मकी रग-रग जकड़ गई
भरने लगे जो शह तो बस्ती उजड़ गई
टूटी रसन^{१३} तो अक्लमे ज़जीर पड़ गई
ताकत मिली तो कोई तवाना नहीं रहा
बरसा जो मेह^{१४} तो खेतमे दाना नहीं रहा

(१६)

बारिश हुई, ज़मीन दँदक^{१५} कर उबल गई
ऊदी घटा उठी तो हरी दूब जल गई

^१शराब पीनेका उपाय, ^२जिन्दगी, जीवन ^३राष्ट्र (वाटिका)का माली ^४विजयी ^५मुलायम पत्ता ^६प्रेमिकाके मिलाप ^७खुश, प्रसन्न ^८सन्निपात ^९ज्वर ^{१०}प्लेग ^{११}सिलनेपर, सिलाई होनेपर ^{१२}रस्ती ^{१३}पानी ^{१४}दहक

उभरी ह्यात^१ मौतके साँचेमे ढल गई
 बाँहे पडी गलेमे कि तलवार चल गई
 आबे-बकासे^२ जहकी लहरे उबल पडी
 बोसे मिले तो मुहसे जबाने निकल पडी

(१७)

दुश्मन गये तो दोस्त बने दुश्मने-वतन^३
 शबनम जो पी तो खौल गये लाला-ओ-समन^४
 सनकी हवाए-सर्द^५ तो कजला गया चमन
 खिलअतको^६ तह खुली तो बरामद^७ हुआ कफन
 नगमे छिडे तो शोर सरेबाम^८ मच गया
 चटकी कली तो बागमे कोहराम^९ मच गया

(१८)

हर मूए-जुल्फ^{११} ऐठ गया, मार^{१२} बन गया
 हर मेहका खतीब^{१३} जफाकार बन गया
 हर सुब्हाका रसूल^{१४} शबे-तार^{१५} बन गया
 हर लोच एक उपी^{१६} हुई तलवार बन गया
 “बदली निगाह तौरसे बेतौर हो गये
 “हम तो जवान होते ही कुछ और हो गये”

^१जीवन ^२अमृत जल ^३चुम्बन ^४देशका शत्रु ^५लाल रंगके और चमेलीके
 फूल ^६शीतल पवन ^७सुन्दर वस्त्र ^८निकला ^९कोठेपर ^{१०}हाहाकार
^{११}केशका प्रत्येक बाल ^{१२}साँप ^{१३}दयाका उपदेशक, मेह=दया,
 खतीब=व्याख्यानदाता ^{१४}अवतार ^{१५}अँधेरी रात ^{१६}नगी,
 चमकती

(१९)

सिखने गुरूके नामको बट्टा लगा दिया
 मन्दिरको बरहानके चलनने गिरा दिया
 मसजिदको शेखजीकी करामतने ढा दिया
 मजनूँने बढके पर्दे-महमिल गिरा दिया

एक सूए-जनको गुलगुलए-आम कर दिया
 मरियमको खुद मसीहने बदनाम कर दिया

(२०)

सिक्कोकी अजुमनमे खरीदार आ गये
 सेठोके खादिमाने-वफादार आ गये
 खदर पहन-पहनके बद अतवार आ गये
 दरपर सफेदपोश सियहकार आ गये

तारीकियोंको छोडके रोशनजबी गये
 जो लोग आस्मान थे जेरे-जमी गये

ब्राह्मण ऊँटके कजावेपर पर्दा डालकर पर्दानशीन स्त्रियोंके लिये जो जगह बनाई जानी है उसे महमिल कहते हैं। इस पक्षितका मतलब यह है कि मजनूँने उस महमिलको जिसमे लैला सवार थी उसका पर्दा गिरा दिया।^१ भलाईकी कपोल कल्पित धारणाको एक शेरके रूपमे फैला दिया या उसका भूठा । मचा दिया । मरियम ईसा मसीहकी माँ थी वे कुमारी ही रही और उनके गर्भसे ईसाके जन्मको लोगोंने ईश्वरका चमत्कार माना था ईसाई लोग उनके पुत्र ईसाको ईश्वरका पुत्र मानते हैं।^२ ईसा मसीह सभा स्वामिभक्त सेवक दुराचारी^३ श्वेत वस्त्र धारी किन्तु काले कार्य करनेवाले जमीनके नीचे झडर-ग्राउड

(२१)

पल भरमे सूए-दशते-जनूँ मुड गया समाज
अपने वतनकी शर्म न अपने गुरूकी लाज
रस्मे बदल गई तह-ओ-बाला हुए रिवाज
वह गुप्तगू रही न वो लहजे न वह मिजाज

घर अपना घर गृहस्थ ही खुद मूसने लगी
हृद है जबाने-देव परी चूसने लगी

(२२)

नसरीन-ओ-गुलको शोले बेबाक कर दिया
सर्व-ओ-चनारको खस-ओ-खाशाक कर दिया
छोडे अनार लाखका घर खाक कर दिया
खुद बूए-गुलने दामने-गुल चाक कर दिया

“शोले भडकके उठने लगे दिलके दागसे
“इस घरको आग लग गई घरके चिरागमे”

(२३)

खायन हुए हरीमे-अमानतमे बारयाब
शैताँ बने फराजे-हिदायतके आफताब

‘पागलपन के जगलकी ओर ‘उलट-पुलट वात-चीत ‘स्वर ‘यहाँ गृहणीसे मतलब है ‘राक्षसकी जीभ ‘जगली गुलाब और अन्य फल ‘निर्भीक लपट ‘सनोवर और चनार, पहाडी पंड ‘कूडा-करकट ‘आतशवाजीके अनार ‘स्वयं फूलोकी सुगन्धने फूलोका दामन चाक कर दिया ‘जिनके पास कोई चीज धरोहरके रूपमे जमा की जाय और वह उसे हडप कर जाय ‘अमानत धरोहर रखनेकी जगह ‘पहुच गये ‘पथप्रदर्शनके आकाशके स्थानपर ‘सूर्य

बेडे डुबो चुके हैं जो बेहद-ओ-बेहिसाब
उन जालिमोका हजरते-इलयास^१ है खिताब

वह जो तमाम राहजनोका^२ इमाम है
वह शरस आज खिज्र अलैहिस्सलाम^३ है

(२४)

देते थे सुबह-ओ-शाम सजाएँ जो नासजा^४
गर्दन पे जिनकी खून है मर्दाने-राहका^५
कल जिनकी डपटियोका निशाना थे रहनुमा^६
उन डिप्टियोको हमने कलक्टर बना दिया

कैदी छुटे तो खैरसे बरबाद हो गये
जो कैद कर रहे थे वो आजाद हो गये

(२५)

हुक्काम मुजरिमोके है दामन सिये हुए^७
“सी० आई० डी०” है बादए-गफलत^८ पिये हुए
दारोगाजी है कौल बदोको^९ दिये हुए
चोरोसे कोतवाल है साजिश^{१०} किये हुए

ब्रिटिशके खादिमोको उछाले हुए है हम
साँपोको आस्तीनमे पाले हुए है हम

^१एक महापुरुष जो समुद्र और पृथ्वीपर भूले भटके लोगोको राह बताते हैं ^२चोरो, लुटेरो ^३एक पैगम्बर जो भूले भटकोको राह बताते हैं ^४दिन रात जो गलत और अनुचित सजाएँ देते थे ^५स्वतन्त्रताकी राहके बहादुरोका ^६नेता जिनकी डाँट-डपटका निशाना बने हुए थे ^७बुराइयाँ छिपाये हुए ^८बेपरवाही-की शराब ^९बुरे लोगोको आश्वासन दिये हुए ^{१०}षड्यन्त्र

(२६)

गद्गार थे जो कल वो मुहिब्बे-वतन^१ हैं आज
बदल्वाहे-बाग^२ हमदमे-सर्व-ओ-समन^३ हैं आज
कल तक थे जो समूम,^४ नसीमे-चमन हैं आज
खसरो^५ के जो गुलाम थे वह कोहकन^६ हैं आज

लछमनका दिल है शिद्वते-गमसे फटा हुआ
 दरपर है रामचन्द्रके रावन डटा हुआ

(२७)

मुफसिद^० है फौजे-अमनके^१ सालार^२ आजकल
डाकू है सीम-ओ-ज़रके^३ निगहदार^४ आजकल
जाग-ओ जगन^५ है मुतरिबे-गुलजार^६ आज कल
अफसर है बलबलोके चिड़ीमार आजकल

चगेजखाँ^{१०} है ईसिये-दौराँ^८ बने हुए
काँटे है चोबे-खेमए-बुस्ताँ^९ बने हुए

'देशप्रेमी १' वागकी बुराई चाहनेवाले पेड़ों और फूलोंके शुभ-
 चिन्तक बने हैं २' लू, गर्म हवा ३' वागकी ठडी हवा ४' ईरानका
 बादशाह, जो शीरीका पति था ५' फरहाद, शीरीका प्रेमी जिसने
 पहाड़ काटकर नहर निक्वाली थी और इसी कारण कोहकन
 (पहाड़ खोदनेवाला)के नामसे प्रसिद्ध है ६' लक्ष्मणका ७' दुखकी
 तीव्रता ८' दगाई, भगडालू लोग शान्ति-सेनाके सेनापति
 ९' चांदी सोनेके रखवाले १०' कौवे और चील ११' बाटिकाके मधुर
 स्वरमे गाने, चहचहानेवाले १२' प्रसिद्ध मंगोल बादशाह जो अत्यन्त
 निर्दयी था १३' युगके ईसा १४' बाटिकाके शामियानेकी डोर और
 खम्भे

(२८)

बरतानियाके खास गुलामाने-खाना-जाद^१
 देते थे लाठियोसे जो हुब्बे-वतनकी^२ दाद^३
 जिनकी हर एक जर्ब^४ है अब तक सरोको याद
 वह "आई० सी० एस०" अब भी है खुशवक्त-ओ-बा-मुराद^५

शैतान एक रातमे इन्सान बन गये
 जितने नमकहराम थे कप्तान बन गये

(२९)

सीनोसे उठ रही है वही बेदिलीकी भाँप
 अब भी बगलमे पुनको दबाये हुए है पाप
 माथेपर अब भी दौलते "तागूत" की है छाप
 बटे है उसके आज भी हम लोग और वह बाप

आजादियाँ हे बूए-गुलामी^१ लिये हुए
 अब भी सरो पे ताज है साया^२ किये हुए

(३०)

भोकोमे रक्स-ओ-कैफ^१ है मौसममे एतदाल^२
 लहका हुआ है बाग तो निखरा हुआ हिलाल^३
 लेकिन ब-ई सुरूर-ओ-ब-ई कसरते जमाल^४
 उश्शाककी रविश है निराली शबे-विसाल^५

^१घरका पैदा हुआ गुलाम, लौडीका वच्चा ^२देशप्रेम ^३इनाम,
 शाबाशी ^४चोट ^५मुखी, सम्पन्न ^६कामन-वेलथ ^७दासताकी गन्ध ^८छाया,
 ब्रिटिश कामन-वेलथ, जिसका भारत आज भी एक सदस्य है ^९नाच
 और मस्ती ^{१०}अतिस बचे रहने का गुण ^{११}द्विजका चाँद ^{१२}इस आनन्द
 और सौन्दर्यका बाहुल्य होते हुए भी ^{१३}प्रेमियो, आशिकोके ढग
 मिलनकी रातमे बडे निराले है

माशूका हे वफूरे-हया^१ से गडी हुई
अगियारके^२ गलेमे हें बाँहे पडी हुई

(३१)

अरबाबे-इक्तिदारका^३ अत्लाह रे कमाल
देखो तो सरबलन्द^४ टटोलो तो पायमाल^५
कालोके आरिजो पे हें गोरोके खत्त-ओ खाल^६
भारतका रग-रूप है ब्रिटिशकी चाल-ढाल

हाथोमे फूल, जेबमे ढेले लिये हुए
सारी गुरूकी शान हे चले लिये हुए

(३२)

गो हुक्म है कि बन्द शबिस्तोंका दर न हो
जो आये एतराज किसी शस्सपर न हो
कदगन है यह मगर कि लबे-खुश्क^७ तर न हो
इन्दर सभामें लाल परीका गुज़र न हो

रोशन थे कल जो मुख पियालोके सामने
गुल आज वो चिराग हे कालोके^८ सामने

(३३)

वहशत रवा,^९ एनाद रवा, दुश्मनी रवा
हलचल रवा, खरोश^{१०} रवा, सन्सनी रवा

^१प्रेमिका अत्यधिक लज्जासे गडी हुई है ^२गैरो, दूसरो
^३शासनारूढ लोगो ^४ऊँचे ^५गिरे हुए ^६गालो ^७नयन नक्शा
^८वह स्थान जहाँ रात हो गई हो ^९रोक, मनाही ^{१०}सूखे होठ
^{११}यहाँ कालोका मतलब काला साँप भी है, साँपके आगे चिराग नहीं
जलता ^{१२}पागलपन, बर्बरता भी उचित है ^{१३}वैर ^{१४}चित्लाना,

रिशवत रवा, फसाद रवा, रहजनी^१ रवा

अलकिस्सा हर वो शय कि है नाकरदनी^२ रवा

इन्सानके लहूको पियो इज्ने-आम^३ है

अगूरकी शराबका पीना हराम है

(३४)

जिनके कलम है तेग-ओ-तबरसे^४ लडे हुए

जिनकी लडाइयोके है भडे गडे हुए

हकपर है जो पहाडकी सूरत अडे हुए

जिल्लत^५ के गारमे है वो अब भी पडे हुए

शायर हो, या अदीब,^६ कलन्दर^७ है आज भी

अंगरेजका गुलाम गवर्नर है आज भी

(३५)

वो शायराने-कौम, गरों कद्रो-ओ-मोतबर^८

रहते हैं जिनकी जेबमे असरारे बह-ओ-बर^९

सूरज पे जिनका हाथ है और पाँव चाँदपर

रोटी वो ढूँढते हुए फिरते हैं दर-ब-दर

क्या चीज है अदब^{१०} ये कोई जानता नहीं

जाने वो क्या जो हर्फ^{११} भी पहचानता नहीं

^१लूटना, चोरी करना ^२जो न करना चाहिये ^३सबको
खुली अनुमति ^४तलवार और कुल्हाड़े ^५सत्य ^६बेइज्जती,
नाकदरी ^७साहित्यकार ^८निर्धन, फाकामस्त ^९सम्मानके योग्य और
विश्वासपात्र ^{१०}सागर और पृथ्वीके रहस्य ^{११}साहित्य
^{१२}अक्षर

(३६)

वह जिनकी बसअतोकी^१ कोई इन्तहा^२ नहीं
सबसे सिवा उन्हीके लिये तग है जमी
दफ्तरमे कोई कद, कोई बोरियानशी^३
वह अबतरी^४ है कोई कही है कोई कही

लोग आये और गये भी गिजा^५ बाँटते हुए
ये रह गये दवात कलम चाटते हुए

(३७)

जाहिल^६ हुज्जको नजर आता है दूरबी^७
आलिमको आँख उठाके कभी देखते नहीं
बातिल^८ जभी तो हक^९ पे चढाये है आस्ती
बैठी है आस्माँको दबोचे हुए जमी

कौवा है जमजमोकी^{१०} तराजू बना हुआ
मुर्गे-चमन^{११} है काठका उल्लू बना हुआ

(३८)

छाई हुई है जेरे-फलक^{१२} बद हवासियाँ
आखे उदास-उदास तो मुह है धुआँ-धुआँ^{१३}
मनके^{१४} ढले हुए है तो ऐठी हुई जबों
वह जोफ^{१५} है कि मुँहसे निकलती नहीं फुगाँ^{१६}

^१व्यापकता ^२सीमा बोरियोपर सोनेवाला अर्थात् गरीब
^३गडबड, परेशानी ^४जीविका, भोजन ^५अपट ^६दूरदर्शी ^७विद्वान
^८असत्य ^९सत्य ^{१०}सगीत ^{११}बाटिका, चहचहानेवाले पक्षी ^{१२}आकाशके
नीचे ^{१३}चिन्तित, परेशान ^{१४}रीढका ऊपरी भाग, मनका ढलना
अर्थात् मरते समय गर्दनका एक ओर लुढ़क जाना ^{१५}दुर्बलता
^{१६}चीत्कार, रुदन

एक दूसरेकी शक्लको पहचानता नहीं
मैं खुद हूँ कौन यह भी कोई जानता नहीं

(३९)

खामोश हैं तयूरे चमन सुर्मा दरगुलू^१
शाखे फमुर्दा,^२ खोशए-अगूर जर्द-रू
फूलोको अब नहीं है तमन्नाए-रग-ओ-बू
बुलबुलको आशियाँमे^३ कफसकी हे आरजू^४

गारतगरे-बहारका^५ मुँह चूमने लगे
आई जो आँधियाँ तो चमन भूमने लगे

(४०)

फिर जलजले हैं राकिबे-तमकीने-जिन्दगी^६
बेआइनी हैं नाजिमे आईने-जिन्दगी^७
फिर जुर्म बन चुके हे कवानीने-जिन्दगी^८
फिर मौत हैं पयामबरे-दीने-जिन्दगी^९

फिर शक्ले-जिन्दगीसे डरे जा रहे हैं लोग
बस ए हयात^{१०} बस कि मरे जा रहे हैं लोग

^१वाटिकाके पक्षियोंको सुर्मा खिला दिया गया है, सुर्मा खिलानेसे
आवाज बन्द हो जाती है ^२मुरभाई हुई ^३अगूरके
गुच्छे पीले हैं ^४नीड, घोंसले ^५पिजडे ^६चाह, अभिलाषा
^७बहारका विनाश करनेवाला ^८भूचाल जीवनके ठहराव और
विश्रामपर सवार है ^९अव्यवस्था जीवनकी व्यवस्था निश्चित
कर रही है ^{१०}जीवनके नियम ^{११}मृत्यु जीवन-धर्मका
सन्देश बन गई है ^{१२}जीवन

(४१)

फुटपाथ, कारखाने, मिले, खेत, भट्टियाँ
गिरते हुए दरख्त, सुलगते हुए मक़ाँ
बुझते हुए यकीन,^१ भडकते हुए गुमाँ^२
इन सबसे उठ रहा है बगावतका फिर धुआँ

शोलोके पैकरोसे^३ लिपटनेकी देर है
आतशफ़शाँ पहाडके फटनेकी देर है

(४२)

वह ताज़ा इन्कलाब हुआ आगपर सवार
वह सनसनाई आँच, वो उडने लगे शरार^४
वह गुम हुआ पहाड, वो गलताँ हुआ गुबार^५
ए बेखबर, वो आग लगी आग—होशियार

बढता हुआ, फिज़ा पै कदम गाडता हुआ
भूँचाल आ रहा है वो फुनकारता हुआ

^१विश्वास
^२चिनगारियाँ

^३भ्रम
^४छा गया

^५आकारो
^६धूल

^७ज्वालामुखी

फरेब

(१५ अगस्त और उसके बाद)

अली सरदार जाफरी

नागहों^१ शोर हुआ

लो शबे-तारे-गुलामीकी सहर^२ आ पहुँची

उँगलियाँ जाग उठी

बरबत-ओ-ताऊसने अँगडाई ली

और मुतरिबकी^३ हथेलीसे शुआएँ^४ फूटी

खिल गये साजमे नगमोके महकते हुए फूल

लोग चिल्लाये कि फरियादके दिन बीत गये

राहजन हार गये

राहरौ^५ जीत गये

काफिले दूर थे मजिलसे, बहुत दूर, मगर

खुदफरेबीकी^६ घनी छाँवमे दम लेने लगे

चुन लिया राहके काँटोको खजफ-रेजोको^७

और समझ बैठे कि बस लाल-ओ-जवाहर^८ है यही

राहजन हँसने लगे छिपके कमीगाहोमे^९

^१अचानक ^२गुलामीकी काली रातका सवेरा ^३सितार और
मोरकी शकलका एक साज ^४सितार-सरोद बजानेवाला ^५किरने
^६डाकू, चोर ^७राही, पथिक ^८स्वयंको धोखा देने ^९ककडो
^{१०}लाल जवाहर ^{११}छिपकर हमला करनेकी जगह

हमनशी^१ यह था फिरगीकी फरासतका^२ तिलिस्म
 रहबरे-कौमकी^३ नाकारा कयादतका^४ फरेब
 हमने आजुर्दगिए-शौकको^५ मजिल जाना
 अपनी ही गर्दे-सरे-राहको महमिल^६ जाना
 गर्दिशे-हलकए-गिरदाबको^७ साहिल जाना
 अब जिधर देखो उधर मौत ही मँडलाती है
 दर-ओ-दीवारसे रोकनेकी सदा आती है
 ख्वाब ज़ल्मी है उमगोके कलेजे छलनी
 मेरे दामनमे है ज़ल्मोके दहकते हुए फूल
 खूँ मे लुथडे हुए फूल
 मैं जिन्हे कूचा-ओ-बाज़ारसे चुन लाया हूँ
 कौमके राहबरो राहज़नो ।
 अपने ऐवाने-हुकूमतमे^८ सजा लो इनको
 अपने गुलदाने-सियासतमे^९ सजा लो इनको
 अपनी सदसाला तमन्नाओका हासिल^{१०} है यही
 मौजे-पायाबका^{११} साहिल है यही
 तुमने फिरदौसके^{१२} बदलेमे जहन्नम^{१३} लेकर
 कह दिया हमसे गुलिस्ताँमे^{१४} बहार आई है
 चन्द सिक्कोके एवज़, चन्द मिलोकी खातिर
 तुमने नामूसे-शहीदाने-वतन^{१५} बेच दिया
 बागबाँ बनके उठे और चमन बेच दिया

^१साथी ^२चालाकी ^३राष्ट्रके नेता ^४निकम्मा नेतृत्व ^५यात्राकी थका-
 वटको मजिल जाना ^६अपने ही चलनेपर पीछे उड़नेवाली धूलको महमिल
 समझ लिया ^७भँवरके चक्करको किनारा समझ लिया ^८राजभवन ^९राज-
 नीतिके गुलदस्ते ^{१०}अपनी सौ वर्षीय कामनाओका यही फल है ^{११}घुटनो तक
 पानीवाली लहर ^{१२}स्वर्ग ^{१३}नरक ^{१४}बाटिका ^{१५}देशपर शहीद होनेवालोकी इज्जत

(२)

कौन आजाद हुआ
 किसके माथेसे सियाही छूटी
 मेरे सीनेमे अभी दर्द है महकूमीका^१
 मादरे-हिन्दके चेहरेपे उदासी है वही
 खजर आजाद है सीनेमे उतनेके लिये
 मौत आजाद है लाशोपे गुजरनेके लिये
 चोर बाजारोमे बदशक्ल चुडैलोकी तरह
 कोमते काली दुकानो^२ पे खडी रहती है
 हर खरीदारकी जेबोको कतरनेके लिये
 कारखानो पे लगा रहता है
 साँस लेती हुई लाशोका हुजूम^३
 बीचमे उनके फिरा करती है बेकारी भी
 अपने खूखार दहन^४ खोले हुए
 और सोनेके चमकते सिक्के
 डक उठाये हुए, फन फैलाये
 रुह^५ और दिल पे चला करते हैं
 मुल्क और कौमको दिन रात डसा करते हैं
 रोटियाँ चकलोकी कहबाएँ^६ हैं
 जिनको सरमायेके^७ दल्लालोने
 नफाखोरीके भरोखोमे सजा रक्खा है

^१पराधीनता ^२भारत-माता ^३ब्लैक मार्केटकी दुकानो ^४भीड़
^५मुंह, जबड़ा ^६आत्मा ^७वेश्याएँ ^८पूँजी

बालियाँ धानकी गेहूँके सुनहरे खोशे^१
 मित्र-ओ-यूनानके मजबूर गुलामीकी तरह
 अजनबी देसके बाजारोंमें बिक जाते हैं
 और बदबस्त^२ किसानोंकी बिलखती हुई रूह
 अपने अफलासमें^३ मुँह ढाँपके सो जाती हैं
 हम कहाँ जाएँ कहे किससे कि नादार^४ हैं हम
 किसको समझाएँ गुलामीके गुनहगार^५ हैं हम
 तौक^६ खुद हमने पिन्हा^७ रक्खा है अरमानोंको
 अपने सीनेमें जकड़ रक्खा है तूफानोंको
 अब भी जिन्दाने-गुलामीसे^८ निकल सकते हैं
 अपनी तकदीरको हम आप बदल सकते हैं

(३)

आज फिर होती है जल्मसे जबाने पैदा
 तीरा-ओ-तार फिजाओसे^९ बरसता है लहू
 तारे आकाश पे कमजोर हवाबोंकी^{१०} तरह
 शबके सैलाबे सियाहीमें^{११} बहे जाते हैं
 फूटनेवाली है मजदूरके माथेसे किरन
 सुख परचम^{१२} उफके-मुब्ह^{१३} पे लहराते हैं

^१गुच्छे ^२अभागे ^३दरिद्रतामें ^४निर्धन ^५गुलामीका पाप करनेवाले
^६पट्टा, ^७जजीर ^८पहना ^९गुलामीके वन्दीगृह ^{१०}अन्धकारपूर्ण वायुमंडल
^{११}पानीके बुलबुलो ^{१२}रातके अन्धकारकी बाढ़ ^{१३}लाल झंडे
^{१४}प्रातःकालके क्षितिज

जंजीर टूटती है

‘मग्नमूर’ जालन्धरी

हम आँसू हैं जलते हुए खूनके सुख^१ मोती
टपकते रहे हैं, टपकते रहेगे
ये आँसू हैं—हम चीथड़े हैं कबाए-दरीदाके लाखो परखचे^२
उधड़ते रहे हैं, उधड़ते रहेगे
ये आँसू हैं, ये चीथड़े—और हम जलम हैं ज़िन्दगीके बदनपर
तपकते रहे हैं, तपकते रहेगे
हमारा तयक्कुन^३ ! बरसते रहेगे, उधड़ते रहेगे, तपकते रहेगे
हमे तुमने क्यो डगमगाया
हमे तुमने छोडा, हमे तुमने नोचा, हमे तुमने छीला
हम अपने कनाअतके^४ गोशोमे^५ बेसुध पडे थे
हम आँसूसे पर जी तो हलका किये जा रहे थे
ये आँसू थे हम चीथड़े थे, बरहना-तनी^६ अपनी जूँ तूँ ढके जा रहे थे
ये आँसू थे, ये चीथड़े और हम जलम थे, गिरते पडते जिये जा रहे थे
हमे—तुमने छोडा
कि जंजीर टूटी तो कांटोकी कलियाँ बनेगी बिखर जाएँगी रास्तोपर
नकाहतके^७ मारे हुए बाँझ खेतोमे दाने नही अब ज़मुरद^८ उगेंगे
उँडेंलेगे खाना-बरअन्दाजे-गुलशन^९ चमनके चमन भोलियोमे

^१लाल ^२फटे कूर्ते ^३चिथड़े, धज्जी-धज्जी ^४जलने,
दुखने और खटकने ^५विश्वासके ^६मतोपके ^७कोनोमे ^८शरीरकी
नग्नता ^९दुर्बलताके ^{१०}हीरे जवाहर ^{११}गुलशनको, बागको लूटने,
बरवाद करनेवाले

उतारे हुए मातमी जोड़ा^१ रातें उरूसी-लिबादेमे^२ आया करेंगी
 ये अरमान सीनेमे घोपे हुए तेज खजर न होंगे
 तमझाएँ रोजे^३ न रक्खेगी इसके बजाए फरावानिये-सेरचश्मीका^४ शिफवा
 करेंगी

न होगी खनकती हुई जेब भी मोल दोशीजगीका
 जो तलवार उट्ठी तो उट्ठेगी हिफजे-हमीयतकी खातिर

हमें तुमने नोचा
 तपक भी वही है, कसक भी वही है, जलन बढ गई है
 पकाई थी जो काठकी हँडिया तुमने कई मरतबा चढ गई है
 हमारा बहुत एतबार^५ आजमाया गया है
 बहक तो गये हैं, फरेबे-गलतकार^६ खा तो गये हैं
 यहाँ तक पहुँचकर मगर लौट जाएँ ये मर्दानगी तो नहीं है
 तुम्हारे लिये जो निबर्द-आजमा^७ हो गये थे वो अपने लिये क्या नहीं कर सकेंगे
 अभी तुमने यह भेद पाया नहीं है
 कि हमने तुम्हे दूसरा रूप अपना अभी तक दिखाया नहीं है
 हम आँसू हैं—जलते हुए तेल के छीटे बनकर उडेगे
 ये आँसू हैं हम चीथडे हैं अभी ताजियानोमे^८ तब्दील होकर बरसने लगेंगे
 ये आँसू हैं ये चीथडे—और हम जख्म हैं रिस पडेगे हलाकतमे^९ बनेंगे
 कि लोहेसे कटता है लोहा—

^१शोककी पोशाक ^२दुल्हनकी लाल पोशाक ^३आशाएँ, अभि-
 लाषाएँ व्रत न रक्खेगी, अर्थात् निराशामे परिणत न होगी ^४अधिक
 पेटभर खानेकी शिकायत ^५कुमारियोंकी लाज ^६लाज, इज्जतकी
 रक्षा ^७विश्वास ^८गलत कार्य करनेवालोका धोखा ^९लड़नेको
 तैयार हो गये, लडने लगे ^{१०}कोडोमे ^{११}विनाश, हत्या

नया सूरज

मुईन अहसन 'जज्बी'

बड़े नाज़से आज उभरा है सूरज
हिमालयके ऊँचे कलस जगमगाये
पहाड़ोके चश्मोको^१ सोना बनाया
नये बल, नये ज़ोर इनको सिखाए
लिबासे-ज़री^२ आबशारोने^३ पाया
नशेबी ज़मीनो^४ पं छोटे उडाये
घने ऊँचे-ऊँचे दरख्तोका मज़र^५
ये हैं आज सब आबे-ज़रमे^६ नहाए
मगर इन दरख्तोके सायेमे ए दिल
हज़ारो बरसके ये ठिठुरेसे पौदे
ये हैं आज भी सदैव बेहाल बेदम
ये हैं आज भी अपने सरको झुकाए
अरे ओ नई शानके मेरे सूरज
तेरी आबमे^७ और भी ताब^८ आये
तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
जो ऐसे दरख्तोमे भी राह पाये
जो ठिठुरे हुआओको जो सिमटे हुआओको
हरारत भी बख्शे^९ गले भी लगाये

^१स्रोत ^२मुनहरा वस्त्र ^३भरनो ^४नीची ज़मीन ^५दृश्य
^६सोनेके पानी ^७पानी ^८चमक ^९गर्मी प्रदान करे

बड़े नाज़से आज उभरा है सूरज
हिमालयके ऊँचे कलस जगमगाये
फिजाओमे होने लगी बारिश-ज्वर^१
कोई नाज़नीं जैसे अफशाँ^२ छुड़ाए
दमकने लगे यो ख़लाओके^३ ज़रें
कि तारोकी दुनियाको भी रश्क आये
हमारे अकाबोने अँगड़ाइयाँ ली
मुनहरी हवाओमे पर फडफडाये
फज़ूँ तर^४ हुआ नशआ-कामरानी^५
तजस्सुसकी^६ आँखोमे डोरेसे आये
कदम चूमने बर्क-ओ-बाद-आब-ओ-आतश
बसद शौक दौड़े, बसद इज्ज^७ आये
मगर बर्क-ओ-आतशके सायेमे ए दिल
ये सदियोके खुदरफता नाशाद तायर
ये सदियोके परबसता बरबाद तायर
ये हैं आज भी मुज्जमहिल^८ दिल गिरफता^९
ये हैं आज भी अपन सरको छिपाय
अरे ओ नई शानके मेरे सूरज
तेरी आबमें और भी ताब आये
तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
उन्हे पंज-ए-तेज़से जो बचाये
उन्हे जो नये बाल-ओ-पर आके बल्लशे
उन्हे जो नये सरसे उडना सिखाये

^१स्वर्ण वर्षा ^२कुमकुम ^३शून्य ^४और बड़ा ^५सफलता का नशा
^६जिज्ञासा ^७विनम्रताके साथ ^८उदास, शिथिल ^९उदास मनवाले

आज़ादी

जॉनिसार अख्तर

मैं तो यूँ खुश था कि आज़ाद हुआ मेरा वतन

मैं तो यूँ खुश था कि छूटा वह गुलामीका गहन^१

मैं तो यूँ खुश था कि अब रातने खीचा दामन^२

मैं तो यूँ खुश था कि अब सुबह हुई जलवाफिगन^३

ढल गया नूरके साँचेमे चमन आज मेरा

अपने गुलशनकी बहारो पै है अब राज मेरा

मैं तो यूँ खुश था कि वह वक्त नहीं है अब दूर

जब हर एक कास-ओ-सागरसे^४ उठे मौजे-सरूर^५

चेहरए-खाक पै उतरे गुहर-ओ-सीमका नूर^६

रगे-गुलसे^७ हो शराबोर जबीने-मजदूर^८

देर ही क्या है कली दिलकी खिली जाती है

खुद गले स्वाबके ताबीर^९ मिली जाती है

मैं तो यूँ खुश था कि फूलोकी गुंधेगी हैकल^{१०}

चौदनी खाक पै डालेगी रुपहला आँचल

मौजके पाँवमे मोतीकी बजेगी छागल^{११}

लबे-जू^{१२} नर्म हवा आके जलायेगी कमल

जाल ज़रतार शुआओका^{१३} बना था मैंने

कितनी हँसती हुई किरनोको चुना था मैंने

^१ग्रहण ^२अचल ^३जलवा दिखाने लगी ^४कटोरे और प्याले ^५सुरुरकी लहर ^६मोती और चाँदीकी चमक ^७फूलके रंग ^८मजदूरका माथा ^९स्वप्न फल ^{१०}फूलोका हार ^{११}पायल ^{१२}तालाबके किनारे ^{१३}सुनहरी किरन

मैं तो यूँ खुश था कि अब गूँज उठेंगे वह साज
 फ़ैल जायेगी फ़िज़ाओमें अमलकी^१ आवाज
 ज़र्रे-ज़र्रेमें समा जायेगा ज़ौके-परवाज़^२
 ज़िन्दगी अपनी अदाओं पे करेगी खुद नाज़
 एक लय सीना-ए-आलममें मचल जायेगी
 आजसे वक्तकी रफ़्तार^३ बदल जायेगी

न सही आज, हरेक जुल्फ़ सँवर जायगी कल
 आज रगत है जो फूलोंकी निखर जायगी कल
 नब्ज खाशाककी^४ गुलशनमें उभर जायगी कल
 मौज गंगाकी^५ हिमालयसे गुज़र जायगी कल
 अपना हर रंग धनक^६ खाक पे बरसा देगी
 कल ज़मी हिन्दकी^७ ख़ुशीदको शर्मा देगी

क्या खबर थी कि नज़र खुद हैं नज़ारोका^८ तिलिस्म
 रातकी रात है यह चाँद सितारोका तिलिस्म
 ये बरसते हुए मोती हैं शरारोका^९ तिलिस्म
 यूँ ख़िज़ाँ^{१०} छिपके रचायेगी बहारोका तिलिस्म
 टूट जायेगा कोई दममें ये अफ़सूने-बहार^{११}
 नोके-हर ख़ारसे^{१२} टपकेगा अभी खूने-बहार^{१३}

हाथ लगते ही तो रंगे-गुले-तर^{१४} छूट गया
 हार गुँधनेभी न पाया था अभी, टूट गया

^१क्रिया, कार्य ^२उड़नेका चाव, इच्छा, रुचि ^३दुनियाकी छाती ^४चाल, गति
^५सूखे तिनको पत्तोंकी नाडी ^६गंगाकी लहर, धारा ^७इन्द्रधनुष
^८भारत-भूमि ^९सूर्य ^{१०}दृश्यो ^{११}चिनगारियो ^{१२}पतझड़, हेमन्त
^{१३}बसन्तका जादू ^{१४}प्रत्येक काँटेकी नोक ^{१५}बहारका खून ^{१६}गीले
 फूलका रंग

जाम लब^१ तक भी न आया था अभी, फूट गया
मेरे स्वाबोको नही, कोई मुझे लूट गया
मैंने जिस नक्शमे^२ भर दी थी शफककी^३ तनवीर^४
वक्तने सामने रख दी वही जलती तस्वीर

तुन्द शोलोमे^५ ये लिपटी हुई अर्ज-पजाब^६
जर्-जर्से उबलता हुआ बह्ने-खूं-नाब^७
करवट कर्बसे^८ लेते हुए रावी व चनाब
गमके तूफानसे सतलजके किनारे बेताब
जुलमते-मर्गसे^९ छाया हुआ जेहलमपं हरास^{१०}
कशियाँ आगकी सीनेपं लिये रौदे-ब्यास^{११}

फिर से लुटता हुआ यह शाहजहाँका गुलज़ार^{१२}
खून रोती हुई यह लाल किलेकी दीवार
यह हमेशाको उजडता हुआ उर्वू बाज़ार^{१३}
लाख जानोको समेटे यह हुमायूँका मज़ार^{१४}

कौन यह छोड़ चला खित्त-ए-पाके-देहली^{१५}
किसके कदमोसे लिपटती है ये छाकेदेहली^{१६}

अमनसे बरहम-ओ-बरगशता^{१७} ये तेगोका^{१८} मिर्जाज
रस्म-ओ-तहज़ोबकी^{१९} होती हुई कदरें ताराज^{२०}

^१प्याला, होठो तक ^२मूर्ति ^३सध्याकी लालिमा ^४ज्योति
^५तेज शोलो, लपटो ^६पजाबकी ज़मीन ^७रक्त-सागर ^८कण्टसे
^९मृत्युके अँधेरे ^{१०}आतक ^{११}पजाबकी एक नदी ^{१२}बाग
^{१३}जुमा मस्जिद दिल्लीके पास उर्वू पुस्तकोकी दुकानोंका बाज़ार
^{१४}हुमायूँका मकबरा जहाँ दगेके समय पीड़ितोंने शरण ली थी
^{१५}दिल्लीकी पवित्र भूमि ^{१६}दिल्लीकी मिट्टी ^{१७}रुष्ट और बिगड़े हुए
^{१८}तलवारो ^{१९}सम्भ्यता ^{२०}रीत-रिवाज और सम्भ्यताके मूल्य नष्ट होते हुए

हिन्दीकी कोहना-रवायातकी^१ लुटती हुई लाज
 खाके-जमना^२ पै ये बेहोशसा होता हुआ ताज
 एक सियाही रुखे-खुशीद^३ पै फिरनेके करीब
 चाँद खुद टूटके अफलाकसे^४ गिरनेके करीब

गिर गये खाक पै थरकि मिनारे^५ कितने
 रह गए टूटके तूफाँमे किनारे कितने
 हो गये गर्क^६ अँधेरेमे नजारे कितने
 खूनमें डूब गये चाँद सितारे कितने

तुन्द होता हुआ हर लमहा लहका सैलाब^७
 जैसे शमशीरकी यह प्यास न होगी सेराब^८

क्या खबर थी कि गिरफ्तारे-फुमू^९ होना है
 सैदको^{१०} और अभी सैदे-जबू^{११} होना है
 इस चमनको अभी आलूद-ए-खू^{१२} होना है
 गमके शोलेको अभी और फजू^{१३} होना है

क्या खबर थी कि फकत नाम है आज्ञादीका
 यह भी एक तर्ज है सैयादकी^{१४} सैयादीका^{१५}

क्या खबर थी कोई तदबीर न काम आयेगी
 गर्दिशे-वक्त^{१६} लिये खूनका जाम आयेगी
 नूरकी मौज न हरगिज तहे-दाम^{१७} आयेगी
 सुब्ह होने भी न पायेगी कि शाम आयेगी

^१पुरानी परम्पराओ ^२यमुना किनारेकी भूमि ^३सूर्यके चेहरे
^४आस्मानोसे ^५मीनार ^६डूब ^७रक्तकी बाढ तृप्त
^८जादूमें फँसना ^९शिकार ^{१०}शिकार, जिसकी दशा और भी
 बिगड़ जाय ^{११}रक्तमे लथपथ ^{१२}बढ़ना ^{१३}शिकारी ^{१४}शिकार
^{१५}समयकी गति ^{१६}जालके नीचे

किसको मालूम था यह ज़ह्र' भी पीना होगा
सर्द फिर हिन्दके माथेका पसीना होगा

कुछ हो, उम्मीदकी सीनेमे झलक आज भी है
दिलमे बुझते हुए शोलेकी लपक आज भी है
पर्द-ए-अन्नमे^१ हलकीसी धनक^२ आज भी है
फूल खिलनेकी हवाओमे महक आज भी है

एक जरा सन्न कि गुलरग घटा छायेगी
इस गुलिस्ताँमे कोई सुख बहार आयेगी

^१विष ^२बादलके पर्दे ^३इन्द्रधनुष

आज़ादीका दिन

मसऊद हुसैन

मैंने आज़ादीके दिन देखा था
एक सैलाबे-निशात'
बग़ियाँ, घोड़े, एक अबोहे-कसीर
कारे^३ फूलोंसे ढँकी
और बेकारोंके सीने पे उछलते हुए हार
आ गई जैसे बहार
कौमके ताज़ा निहाल^४
हिन्द माताके सपूत, उसके लाल
आर्यावर्तके बेदार ख़याल'
जिनका दिल तग़ था और जिस्म निढाल
जाममे अपने लिये शबनम थे
ज़र्रे^५ ज़्यादा थे सितारे कम थे
बीबियाँ चन्द उदास
जिनकी आँखोंमे न नशशा^६ न गरूर
लज्जते-शौक्रे-ग़ुलामीसे^७ जो अबतक थी चूर
सरकशी^८ जिनके न सीनेमे, न दिलमे भरपूर
यौमे-आज़ादीने^९ बरूशा^{१०} न जिन्हे ज़बे-सरूर^{११}

^१खुशीकी बाढ़ ^३भारी भीड़ ^३मोटर कारे ^५नये पीछे
^२जाग्रत विचार ^६कण ^६नशा ^७ग़ुलामीके शौकका स्वाद, मज़ा
^८उड़ड़ता ^९स्वतंत्रता दिवस ^{१०}प्रदान किया ^{११}प्रसन्नताकी भावना

लाला-ओ गुलका ये पजमुर्दा हजूम^१
 देखकर और भी दिल था मगमूम^२
 खाके-रह^३ आज भी बेदार न होने पाई
 ऐसी आजादीका आया न समझमें मफहूम^४
 कैसा सैलाबे-निशात
 एक भी मौज थी तेज ?
 मिलके चलते थे मगर फिर भी थे सब कम-आमेज^५
 मैंने आजादीके दिन देखा था
 बुलबुले चन्द नमूदार^६ हुए
 सितहपर रक्स^७ किया
 फूट गये
 और दरियाको खबर तक न हुई

^१लाल सफेद फूलोका उदास समूह ^२दुखी ^३राहकी धूल ^४अर्थ
^५कम मिलेजुले ^६प्रकट ^७नृत्य

तिशनगी

(प्यास)

नियाज हैदर

यह छलकता हुआ जाम
मैं इसे पी न सकूंगा साकी
आजमाई हुई शय^१
जायका तलब^२ नशा फीका है
चन्द लमहोका^३ सख्खर
जैसे एक माहेजबी दोशीजा^४
मुस्कराती हुई तेजीसे गुज़र जाती है
चन्द लमहोका सख्खर
तिशनगी सागरे-मयसे भी कही जाती है
तोड़ दे जाम-ओ-सबू
तिशनगी नाम है जीनेका मुझे जीने दे
तिशनगी रोज़े-अज़लसे^५ है रफीक़े-दिल-ओ-जाँ
तिशनगी वजहे-तलब,^६ जौके तलब,^७ हुस्ने तलब^८
तिशनगीपर है ज़मानेका मदार^९

^१चीज़ ^२कटु ^३क्षणो ^४चाँदसी सुन्दर कुमारी ^५माँदराके
प्याले ^६शराबका प्याला और सुराही ^७जिस दिन समारकी रचना
हुई ^८दिल और जानका साथी ^९माँगका कारण ^{१०}माँगकी
रुचि ^{११}मागका सुन्दर ढग ^{१२}निर्भरता

राते—जो आँखो ही आँखोमे बसर होती है
 राते—जो पिछले पहर अश्कोसे^१ तर होती है
 सुबह होती है तो पी जाता है सूरज उनको
 रात ढल जाती है शबनमके हसी कतरोमे^२
 सुब्ह-दम^३—फूलोके लाखो सागर^४
 मुन्तजिर^५ होते है सूरजके लिये
 यह सबूही^६ कि जिसे पीके दमक उठता है
 रूए-खुरशीदे-जहाँताब^७—शुआएँ जिसकी
 नागिने बनके हर एक बूँदको पी जाती है
 बूँद—आँसूकी हो या शबनमकी
 कुरए-अर्ज पै बाकी नहीं रहने पाती
 खुश्क^८ हो जाते है सब
 गुले-तर^९
 दीदए-तर^{१०}
 कोई खुशीदकी सफ़ाक-तपिश^{११} पी जाये
 रातके चाँदका आलम देखो^{१२}
 चाँद एक घूँटमे पी जाता है सूरजकी तपिश
 शबनम-ओ-अश्क दुआ करते है^{१३}
 कि ज़मानेमे सहर^{१४} हो न कभी
 और यह सिलसिलए-तिशना-लबी^{१५}
 ए खुदा दह्लमे^{१६} जारी है न जाने कबसे

^१आँसू ^२सुन्दर बूँदा ^३प्रात काल ^४प्याले ^५प्रतीक्षा करते हैं ^६सुबहकी
 शराब ^७ससारको जगमगानेवाले सूर्य ^८किरने ^९पृथ्वीके गोले ^{१०}शुष्क ^{११}गीले
 फूल ^{१२}गीले नयन ^{१३}निर्दय गर्मी ^{१४}दशा ^{१५}प्रार्थना ^{१६}प्रभात ^{१७}प्यासे होनेका
 सिलसिला ^{१८}ससार

कैसे मानूँ लबे-लालीके^१ हज़ारों बोसे^२
 रुहकी^३ प्यास बुझा सकते हैं
 इश्क़ सेराब^४ नहीं हो सकता
 यह छलकता हुआ ज़ाम
 मैं इसे पी न सकूँगा साकी

^१लाल होठ ^२चुम्बन ^३आत्मा ^४प्रेम तृप्त नहीं हो सकता

आज़ादीकी पूजा

‘फिक्र’ तौसवी

राजमदिरमे मुसलसल^१ बज रही है घटियाँ
और बुलावेपर बुलावा दे रहे हैं—“आओ, आओ
“अपने जौके-सजदा रेज़ीको^२ ज़रा तस्कीन दो
एक बुते-नौ^३को तुम्हारी बन्दगीका^४ इम्तहाँ मकसूद^५ है
तुम—कि सदियो तक रहे है बन्द जिनपर ये सुनहरे बाम-ओ-दर^६
तुम—कि ज़जीरोमे, आहोमे रहे अब तक असीर^७
आजसे आज़ाद हो
आज ये ज़रतार^८ चौखट और तिलाई-दायरे^९ तुमको न रोकेंगे कभी
—आओ आओ, फूल चुन लाओ, अगरबत्ती जलाओ
थालियाँ काँसीकी छनकाओ, जलाओ प्रेमके खूँसे चिराग
आरतीकी धुनमे गाओ—गाओ, गाओ, भूम जाओ
नाच उट्ठो, माथा रगड़ो, सर झुकाओ
और भक्तीके सुरीले मदभरे सगीत रसमे डूब जाओ”

(२)

मैं—कि था सदियोसे ज़जीरोमे, आहोमे असीर^७
और उस आज़ाद लमहेके^{१०} तसव्वुरमे^{११} तडप जाता था मैं

^१लगानार ^२सिर झुकानेके शौक ^३“एक नई प्रतिमा तुम्हारी
पूजाकी परीक्षा लेना चाहती है ^४कोठे और दरवाजे ^५बन्दी ^६सुनहरी
चौखट ^७सुनहरे दायरे ^८रक्त ^९बन्दी ^{१०}स्वतंत्र क्षण ^{११}कल्पना

आज क्यों उठते नहीं मेरे कदम
 आज मेरी रूहमे क्यों थरथरी मचती नही
 आज क्यों इन घटियोंकी लय पै मेरे कानकी ये बसरी बजती नही
 मेरी पेशानीमे^१ क्यों वह सिजद-ए-सीमाब-आसा^२ सो गया
 आह ! यह मेरी नज़रके सामने कैसे अँधेरेसे उमडकर आ गये
 आह, मुझको थाम लो
 लाओ, लाओ—वह मेरे फूलोके गजरे क्या हुए
 वह मेरी काँसीकी थाली, वह अगरबत्ती मेरी
 वह कहाँ रक्खा है मेरे प्रेमके रसका चिराग
 आरतीके बोल मुझको याद थे—वह क्या हुए
 मैं भला क्या लेके जाऊँ, देवताके सामने
 मैं तहोदामन^३ फसुर्दा दिल,^४ अँधेरेका शिकार
 पाँव पत्थर होठ गूँगे आँख नम^५
 मैं भला क्या लेके जाऊँ देवताके सामने
 आह मैं मजबूर हूँ
 आह मैं मजबूर हूँ, ए राजमदिरकी मुसलसल घटियों
 बन्द कर दो अपने ये पैहम^६ उलावे—मैं बहुत मजबूर हूँ
 मैं बहुत मजबूर हूँ

^१माथे ^२पारेकी तरह तडपनेवाला सिजदा, पूजाके लिये नतमस्तक होनेकी व्याकुल भावना ^३खाली दामन ^४बुझे हुए दिल ^५भीगी ^६बार-बार

१५ अगस्त : एक कहानी

गधुपति सहाय 'फिराक'

मुक्त छन्द

[१]

एक घराना छोटासा ह
मियाँ जवान और कमसिन बीबी
नन्हा मुन्नासा एक बच्चा
चाँदका टुकड़ा
एक बुढ़िया माँ, बड़ी लडाका
यह बुढ़िया थी बड़ी पटाखा
नवजवान ए० जी० आफिसमे
जूनियर क्लर्कपर नौकर है
कमसिन बीबी मैट्रिक है
महिला विद्यालयमे मिसट्रेस है
दोनों मिलकर
एक सौ साठ कमा लेते हैं
तीस रुपया घरका किराया
बाकीमे
काले बाज़ारसे गीले कोयले, शकर किरकिरी
उजला गँदला पानीसा कुछ
जिसे दूध कहना पडता है
बढ़िया माँका पान तमाक

धोबी, मेहतर, बिजली, बीड़ी
 साबुन तेल हजामत
 कटे फटे जूतेकी मरम्मत
 नन्हेके लिये सस्ते खिलौने
 सेकड हैंड लट्टू और बाजा
 घटिया झिलमिल कपडे लत्ते
 जानसे बढ़कर जिनकी कीमत
 फिर ऐसी सिलाई
 जो नगा कर दे
 इनके अलावा और भी कितने फुटकर खर्चे
 सुई तागा, कार्ड लिफाफे
 दियासलाई कितनी मँहगी
 नमक मसाला
 घटिया चायके दो एक पैसे
 चार पेट इस भाँति पालना
 चार बदन इस भाँति ढाँकना
 चार सरोपर एक ठीकरी
 ये हैं 'बजेट' इस पढी लिखी फैमिलीका

[२]

जब हिन्दुस्तान आजाद न था
 यह परिवार इसी घरमे रहता था
 यह घर हमेशासे
 मशहूर लीडरोके
 चित्रोसे सजा हुआ था
 जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ

तो मोहल्ले भरमे
 सबसे ज्यादा रोशनी
 रंग बिरंगकी सबसे ज्यादा झडियाँ
 जय हिन्दकी सबसे ज्यादा
 सुन्दर पट्टिकाएँ
 इसी घरमे सबको दिखाई पडी
 इसी ढाई कमरोके घरमे
 सबसे बडी दीवारपर
 नेताजी
 सुभाष बाबूकी फौजी सैल्यूट
 लेती हुई तस्वीर सजी थी
 जिसके चारो ओर पडे थे
 रंग बिरंग चमकते हार
 गाधीजी, नेहरूजी, पटेलजी, राजाजी
 सबके चित्र लगे थे
 बन्दनवारो ओर कुमकुमो
 से यह घर हो रहा था जगमग जगमग
 लेकिन यह थी सन् सैतालिस
 की पहली १५ अगस्त

[३]

इसके बाद
 हर साल १५ अगस्तको
 इस घरकी सजावटमे
 झडियोकी गिनती सिकुडने लगी
 कमसे कम हो चली

बिजलीके कुमकुमे
 दो चार ही रह गये
 जो दो घड़ी टिमटिमा कर
 तोड़ देते थे दम
 पट्टिकाओपर
 जयहिन्द मन्द पडने लगा
 और नेताओके चित्रोके चारो ओर
 हारोका रंग भी फीका पडने लगा
 रौशनीसे उदासी टपकने लगी
 इस घरानेकी यह धारना है
 कि १५ अगस्तको
 जब आजादी आई
 तो उसपर सरकारने कोई
 कन्ट्रोल लगाया नही
 इसलिये
 यह आजादी सारीकी सारी
 चोर बाजारमे 'होर्ड' कर ली गई
 अब वहाँ
 इसके मुँह माँगे मनमाने लगते हैं दाम
 सस्ती आजादी महँगी हुई जाती है
 बढ़ते जाते हैं दाम
 माँग इस आजादीकी है ज्यादा बहुत
 और सप्लाई कम
 कामगारो किसानो गरीबो और कारीगरो
 एम० ए० बी० ए० जो हैं पास
 और लेखको चित्रकारो कलाकारोके

ये आजादी पल्ले नहीं पड सकी
 ये सब
 रह गये देखते रह गये ताकते
 रह गये माँगते
 सबके हिस्सेमे आजादी आई नहीं
 सबको हिस्सा मिले तो बचेहीगा क्या
 इसलिये
 बड़ी सावधानीसे इसको
 सहेजकर रख लिया है
 कुछ बडे सेठोने जिनके हाथो सहेजी
 गई है यह आजादीकी लक्ष्मी
 जब समय आयगा
 मनमे धीरज धरो
 तब यह आजादी जनतामे बट जायेगी
 सबसे काम लो
 वक्त आने तो दो
 सबको हिस्सा मिलेगा इस आजादीमें

[४]

आजादीके बटवारेकी आश लगाये
 मियाँ जवान और कमसिन बीबीका यह जो
 यह पूरा घराना
 जीवन ऋण भरता चला जा रहा है
 और राष्ट्रीय झंडेके साये तले
 दस दसके सोलह नोटोके बूते
 चूल्हे आग सुलगती रहेगी
 ढाई कमरोके घरसे

नवजवान ए० जी० आफिस
 और ए० जी० आफिससे
 ढाई कमरोके घरके
 आवागमनमे जुता रहेगा
 कमसिन बीबी स्कूल रिसेसमे
 नन्हेको दूध पिलाने
 हॉपती, काँपती, दोडती-भागती
 आती रहेगी
 आजादीके बटवारेकी आस लगाये
 यह नवजवाँ एक दिन
 अपनी जगह मुन्नेको सौपकर चल बसेगा
 और मुन्ना भी होकर जवान
 देशके लीडरो
 के चित्रोसे कमरा सजाता रहेगा
 भडियो, पट्टिकाओ, हारो और कुमकुमो
 से १५ अगस्त मनाता रहेगा
 नस्लन बाद नस्लन
 पीढी-ब-पीढी
 यह घराना १५ अगस्त मनाता रहेगा
 और एक सौ साठ रुपये
 गीले कोयलो, शकर किरकिरी, गीले अनाज
 सडे कपडोके भेंट चढ़ते रहेगे
 आजादीके बटवारेकी आश
 लगाये
 बोलो सब नेताओकी जै
 बोलो भाई राम राजकी जै

साम्प्रदायिक हत्याकांड

जो असली या नकली, सच्ची या झूठी, सही या गलत आजादी हमें अगस्त १९४७ में मिली उसकी बड़ी महंगी कीमत हमको देनी पड़ी। वह कीमत हम अब तक दिये जा रहे हैं और न जाने कब तक दिये जायें। चालीस करोड़की आवादीमें लगभग दो करोड़ प्राणी भुलस गये, कट गये, घायल हो गये, उखड़ गये और उजड़ गये और अब तक आजादीके नामपर रो रहे हैं और तड़प रहे हैं। हिन्दुस्तानके इतिहासमें इतना बड़ा हत्याकांड न आदिकालमें हुआ था न महाभारतके समय हुआ था न प्राचीन कालमें गिकन्दर या तैमूरके आक्रमणोंमें हुआ था। न मुसलमानोंके भारत आते समय हुआ था न अंग्रेजी राज के स्थापित होने में और न सन् १८५७ ई० के गदरमें हुआ था। इतने बड़े दुखान्त नाटकके होनेपर यह अमम्भव था कि उर्दू साहित्य, जो देशकी छाती और कोखमें पला है वह तड़प न उठे। इस हत्याकांडकी कराह, इसकी ज्वाला, इसकी चिनगारियाँ- और इसका धुआँ बहुत सी उर्दू कविताओं, उपन्यासों, नाटकों और कहानियोंमें जीते जागते रूपमें दिखाये गये हैं।

इस दुख भरे विषयपर जो कविताएँ इस सकलनमें दी गई हैं उनसे इसका साफ-साफ अन्दाजा हो जाता है कि देशके दुख और मुसीबतको उर्दू कवियोंने किस तरह अपनाया है और उनकी कल्पनाने किस तरह उसे चित्रित किया है। इन कविताओंमें जलन है, आँसू हैं, सिसकियाँ हैं, हिचकियाँ हैं, असहनीय तड़प है और ऐसी करुणा है जिसकी मिसाल काव्य साहित्यमें शायद ही मिले। हमारे शायरोंका स्वर, उनकी आवाज़ें इन

कविताओमें लहू लोहान हो गई है और उनके छन्दोकी रंगे पीडासे कम्पित नजर आती है। रस्मी तौरपर गमका डजहार इन कविताओमें नहीं किया गया है न छन्द बद्ध पत्रकारी की गई है न सस्ता प्रोपेगंडा किया गया है। अगर हमारी आजादीकी लड़ाई सच्चे अर्थोंमें क्रान्तिआत्मक होती है, अगर वह सचमुच किसान मजदूर राज या जनता राजकी लड़ाई होती, अगर साम्यवादके उज्ज्वल आदर्शोंमें प्रेरित और प्रकाशित हमारा स्वतंत्रता संग्राम होता तो शायद न देशका बंटवारा होता, न लगभग एक करोड़ भारत माताके लाल इस वेदर्शमें बलिदान किये जाते। क्रान्तिआत्मक न होनेके कारण हमारी आजादीकी लड़ाई अपने भाइयों और बहनोके खूनमें नहा उठी और समाजके अनेक भी कही अधिक हिमात्मक सिद्ध हुई। सत्य और अहिंसाके नारे हमें वर्चस्वता, पाशनिक्ता और राक्षसी संस्कारोंसे बचा नहीं सके न बचा सकते थे।

इन कविताओमें भी कही एक मुगपन नहीं मिलेगा। एक कवि दूसरे कविके खयालानको दोहराता हुआ नहीं मुनाई देगा। हर कवि इस हत्याकांडके रक्त सागरमें डूब गया है और मौलिक कल्पनाके आधार-पर सत्यमें प्रेरित होकर यथार्थका महारा लेकर अपनी कविता हमें मुनाता है। कितना निर्मूल था उन लोगोंका विचार जो उर्दू कविताको कोरमा पुलाव साहित्य, नवाबोंका साहित्य, दरबारोंका साहित्य, जागीरदारोंका साहित्य, भोगविलासका साहित्य या हिन्दुस्तानसे प्रेम न करनेवाले मुसलमानोंका साहित्य बताते रहे हैं। कितने रुढ़कण्ठसे उन उर्दू कवियोंने हमारे इतिहासकी इस सबसे बड़ी दुर्घटनाको बयान किया है। इन कविताओमें कवियोंके स्वर कितने हृदयस्पर्शी हैं, इसका अन्दाजा हिन्दीके पाठक खुद लगाएँ और इस विषयपर भारतकी दूसरी भाषाओमें कविताएँ ढूँढनेकी कोशिश करें। इन कविताओंके करुण स्वरके बारेमें इतना ही कहा जा सकता है कि —

गला रूँधा हुआ आवाज थरथराई हुई

सूची

	पृष्ठ
१ अजमते-आदम—अब्दुलमजीद भट्टी	४९
२ अकेली—बलराज कोमल	६२
३ आज—‘साहिर’ लुधियानवी	६४
४ आँसुओंके चिराग—सरदार जाफरी	६७
५ इन्तकाम—गुलाम रब्बानी ‘तावॉ’	७२

अज़मते-आदम

(मानवकी महानता)

अब्दुल मजीद भट्टी

हम तुम्हे कत्ल ही कर देंगे मगर आजको रात
मत कहो बेटी, बहू और बहन
तुम तो हो एक हसी मशगलए-ऐश-ओ-निशात^१
आज तक देखी न थी जिसकी झलक
गोरा गोरासा भरा जिस्मे-गुदाज़^२
जिसने अरमानोमे एक आग लगा रखी है

सिसकियाँ बन्द करो और बिलखना छोड़ो
अपने वावैलासे^३ अब ओर मुनसगज़^४ न करो
छोड़ दो अपने अज़ीज़ोका^५ खयाल
जिनमे नामूसपै^६ कट मरनेकी हिम्मत ही न थी
भाग निकले हैं जो जीनेकी तमन्ना लेकर
भूल जाओ कि कभी उनसे भी निसबत^७ थी तुम्हे
सूरमाओसे मिलो, आनकी अज़मत^८ समझो
महफिले-ऐशको^९ हों और मुनसगज़ न करो

^१भोगविलासका साधन ^२नर्म शरीर ^३रुदन और चीत्कार
^४बेमज़ा ^५सगे सम्बन्धियो ^६लाज, इज्जत ^७सम्बन्ध ^८महानता
^९ऐशकी महफिल

यह नवाजिश^१ नहीं कुछ कम कि चुना है हमने
 तुम्हे इस महफिले-इशरतको^२ सजानेके लिये
 दो घड़ी रग जमानेके लिये
 पोछ लो आँसू फिरा लो आँखे
 लाश बच्चेकी नहीं, यह तो है जिल्लतका^३ निशाँ
 कैसे इन्सानोसे निसबत थी तुम्हे
 हमने तो रहस्य^४ खामोश किया है इसको
 वरना हम यह भी तो कर सकते थे
 हाथ और पैर कलम करके इसे तडपाते
 एक-एक बोटी उडाते तुम्हे दुख पहुँचाते
 तुम तो खुशबख्त^५ हो आया नहीं यो तैश^६ हमें
 यह तो मजूर नहीं था खलले-ऐश^७ हमे

जामपर जाम उठाती हुई दो साथ अभी
 छोड दो अब ये तडप और फडक
 इस तरह रुकते भी है बढते हुए हाथ कभी
 आजकी रात फकत आजकी रात
 एक पलका भी तअम्मुल^८ हमे मजूर नहीं
 वरना कुछ दूर नहीं
 अपनी सगतके^९ लिये पास बुला लें तुमको
 सामने छतसे जो लटकी है तुम्हारी बहनें
 छातियाँ जिनकी है पैरोमे पडी
 और जिस्मोमे खुबे है भाले

^१कृपा ^२विलास-सभा ^३अपमान ^४दया ^५भाग्यवान
^६क्रोध ^७ऐशमे खलल डालना ^८देर ^९साथ

अपने बढते हुए हाथोको भटकनेकी सजा
 ये दहकते हुए भाले भी है अगारे भी
 और रस्सीकी जगह ये है तुम्हारी जुल्फे'

आजकी रात मगर आजकी रात
 एक पलका भी तअम्मुल हमे मजूर नही
 मुस्कराओ बढो ओर जाम उठाओ
 शामे-गम^१ कैसी है अब सुब्हे-मसरत^२ बन जाओ
 हम तुम्हे कत्ल ही कर देगे तुम्हारी खातिर
 ताकि नामर्द-ओ-ज़लील और कमीने वो अज़ीज़
 भाग निकले हैं जो जीनेकी तमन्ना लेकर
 देख पाएँ तो न यह कहके तुम्हे शर्माएँ
 अपने हाँ बेटी बहू कोई न थी कोई न थी
 हाँ जो इस नामकी लडकी थी वो मरखप भी गई

और तुम्हारे वो अज़ीज़
 उनकी इज्जत भी रहे आन भी बाकी रह जाय
 जिनके हिस्सेमे न गरत^३ है न मौत
 हम तुम्हे कत्ल ही कर देगे मगर आजकी रात

^१केश^२दुखकी सध्या^३मुखका प्रभात^४लाज, शर्म

अकेली

वलराज कोमल

अजनबी^१ अपने कदमोको रोको जरा

जानती हूँ तुम्हारे लिये गैर हूँ

फिर भी ठहरो जरा

सुनते जाओ ये अशको भरी दास्ताँ

साथ लेते चलो यह मुजस्सम-फुगाँ^२

आज दुनियामे मेरा कोई भी नहीं

मेरी अम्मी नहीं

मेरे अब्बा नहीं

मेरी आपा नहीं

मेरा नन्हासा मासूम भैया नहीं

मेरी इस्मतकी^३ मगरूर^४ किरने नहीं

वह घरौदा नहीं जिसके साये तले

लोरियोके तरन्नुमको सुनती रही

फूल चुनती रही

गीत गाती रही

मुस्कराती रही

आज कुछ भी नहीं

आज कुछ भी नहीं

^१अपरिचित ^२साकार फरियाद ^३सतीत्व ^४अभिमानि

मेरी नज़रोके सहमे हुए आइने
मेरी अम्मीके अब्बाके आपाके और मेरे नन्हेसे मासूम भैयाके खूँसे हैं
दहशतज्जदा^१

आज मेरी निगाहोकी वीरानियाँ चन्द मजरूह^२ यादोसे आबाद हैं
आज मेरी उमगोके सूखे कँवल मेरे अश्कोके^३ पानीसे शादाब^४ हैं
आज मेरी तड़पती हुई सिसकियाँ एक साजेशिकस्ताकी^५ फरियाद हैं
और कुछ भी नहीं

भूख मिटती नहीं

तन पे कपडा नहीं

आस मादूम^६ है

आज दुनियामे मेरा कोई भी नहीं

आज दुनियामे मेरा कोई भी नहीं

अजनबी अपने कदमोको रोको जरा

सुनते जाओ ये अश्को भरी दास्ताँ

साथ लेते चलो ये मुजस्समफुगाँ

मेरी अम्मी बनो

मेरे अब्बा बनो

मेरी आपा बनो

मेरे नन्हेसे मासूम भैया बनो

मेरी इस्मतकी मगरूर किरनें बनो

मेरे कुछ तो बनो

मेरे कुछ तो बनो

मेरे कुछ तो बनो

^१सहमे हुए, डरे हुए ^२घायल ^३आँसुओ ^४भरे हुए ^५टूटे माज ^६लोप

आज

‘साहिर’ लुधियानवी

साथियो मैंने बरसो तुम्हारे लिये
चाँद, तारो, बहारोके सपने बुने
हुम्न और इश्कके गीत गाता रहा
आरजूओके ऐवाँ^१ सजाता रहा
मैं तुम्हारा मुगझी^२ तुम्हारे लिये
जब भी आया, नये गीत लाता रहा

आज लेकिन मेरे दामने-चाकमे
गर्दे-राहे-सफरके^३ सिवा कुछ नहीं
मेरे बरबतके^४ सीनेमे नगमोका दम घुट गया है
ताने चीखोके अबारमे^५ दब गई है
ओर गीनोके सुर हिचकियाँ बन गये हैं
मैं तुम्हारा मुगझी हूँ नगमा नहीं हूँ
और नगमेकी तकल्लीका^६ साज-ओ-सामाँ
आज तुमने जलाकर भसम कर दिया है
और मैं अपना टूटा हुआ साज थामे
सद लाशोके अबारको तक रहा हूँ
मेरे चारो तरफ मौतकी वहशते^७ नाचती हैं

^१महल ^२गायक ^३यात्राके मार्गकी धूल ^४एक बाजा
^५गीतो ^६ढेर, बोझ ^७रचना ^८भय, घबराहट

और इन्साँकी हैवानियत जाग उठी है
 बर्बरीयतके खूँखवार इफरीत'
 अपने नापाक जबडोको खोले
 खून पी-पीके गुर्गुरा रहे हैं
 बच्चे माओकी गोदोमे सहमे हुए हैं
 बहने बेहुरमतीके^१ तसव्वुरसे^२ अप्सुरदाँ^३ हैं—भाई मजबूर हैं
 हर तरफ शोरे-आह-ओ-बुका^४ हैं
 ओर मैं इस तबाहीके तूफानमे
 आग ओर खूँके हैजानमे^५
 सरनुगूँ^६ ओर शिकस्ता मकानोके मलबेसे पुर^७ रास्तोपर
 अपने नगमोकी भोली पमारे
 दर-ब-दर फिर रहा हूँ
 मुझका अमन और तहज्जोब की भी व दो
 मेरे गीतोकी लय, मेरे सुर, मेरी नय^८
 मेरे मजरूह होठोको फिर सौप दो
 साथियो ! मेने बरसो तुम्हारे लिये
 इन्कलाब ओर नगावतके^९ नगमे अलापे
 अजनबी राजके जुल्मकी छाँवमे
 सरफरोशीके ख्वाबीदा-जज्बे^{१०} उभारे
 ओर उस सुब्हकी राह देखी
 जिसमे इस मुल्ककी रूह आजाद हो
 आज ज़ज़ीरे-महकूमियत^{११} कट चुकी है
 ओर इस मुल्कके बह-ओ-बर,^{१२} बाम-ओ-दर^{१३}

'राक्षस' 'लाज लुटने कल्पना' 'उदास' हाहाकार 'उथल पुथल'
 'मिर झुकाए' 'मलबेसे भरे' 'दर-दर' 'बॉसुरी' 'विद्रोह' 'सुप्त भाव-
 नाए' 'परा गीननाही ज़ज़ीरे' 'सागर और पृथ्वी' 'कोठे और द्वार'

अजनबी क्रौमके जुलमत-अफशाँ फरहरे'की मनहूस छाओसे आजाद हें
 खेत सोना उगलनेको बेताब है
 वादियाँ^१ लहलहानेको बेचैन है
 कोहसारोके^२ सीनेमे हैजान^३ है
 सग ओर खिश्त बेस्वाब^४-ओ-बेदार^५ है
 उनकी आँखोमे तामीरके स्वाब है
 उनके स्वाबोको तकमीलका^६ रूप दो
 मुल्ककी वादियाँ, घाटियाँ, खेतियाँ
 ओरते बच्चियाँ

हाथ फेलाये खैरातकी^७ मुन्तजिर है
 उनको अम्न और तहजीबकी भीख दो
 माओको उनके होठोकी शादाबियाँ
 नन्हे बच्चोको उनकी खुशी बख्श दो
 मुझको मेरा हुनर मेरी लय बख्श दो
 मेरे सुर बख्श दो मेरी नय बख्श दो
 और मैं इस भिखारी फिजामे
 अपने नगमोकी भोली पसारे
 दर-ब-दर फिर रहा हूँ
 मुझको फिर मेरा खोया हुआ माज्र दो
 मैं तुम्हारा मुगझी तुम्हारे लिये
 जब भी आया नया गीत लाता रहूँगा

^१अधिकार फैलानेवाले भडे ^२घाटियाँ पहाड़ो ^३हेलचल, परेशानी
^४पत्थर ^५ईंट ^६अनिद्रित ^७जाग्रत ^८निमणि ^९पूर्णता ^{१०}भिक्षा दान

आँसुओं के चिराग

(हिन्दुस्तानके शरणार्थियों और पाकिस्तानके महाजरीन^१के नाम)

सरदार जाफरी

(१)

मैं सुन रहा हूँ
 वो सिसकियाँ जो जमीके मीनेमे दागे-गम^२ बनके रह गई हैं
 वो हिचकियाँ जिनके सख्त फन्दे
 रबाब^३-ओ बरबतकी^४ गरदनोमे पड़े हुए हैं
 वो आँहे जो जालिमोके डरसे
 दिलोमे महबूस हो गई हैं
 वो चीखे जो मादरे-वतनकी
 जराहतोके हजूममे^५ जाके खो गई ह
 वो गीत जो गौरों^६ जो गायों^७
 सियाहखानोमे^८ छिप गये हैं
 वो हमहमे^९ जो फरेबकारीके सब्ज बागोमे सो गये हैं
 वो साजिशे जिनका जहल काम-ओ-दहनको^{१०} बेकार कर चुका है
 वो ओहदे जिनका नुकीला नशतर रगोके अन्दर उतर चुका है
 वो अह्द-ओ-पैमाँ^{११}

^१शरणार्थी ^२गमके दाग ^३मिटारके ^४समान बाजा ^५एक
 वाजा ^६बन्द हो गई है ^७घावो ^८समूह ^९रोनें चित्तलाने
^{१०}अँधेरे स्थानो ^{११}उमगे ^{१२}धोखेबाजी ^{१३}जीभ और मुँह ^{१४}वायदे,
 वचन

कि जिनके हरफोमे^१ वक्त-ओ-तारीखकी जबीपर^२
सियाह धब्बे पड़े हुए हैं

(२)

ये कोन जालिम है जिसने कानूनके दहकते हुए कलमसे
वतनके सीने पे खूने-नाहककी एक गहरी लकीर खीची
ये क्या हुआ एक दमसे मर्हाफलमे सारे साजोके राग बदले
कदामतोके^३ खंडरमे माजोके^४ भूत दीवानावार^५ नाचे
बहारके मुख आंचलोसे खिजाँके बीमार रग बरसे
सहरकी रगीन वादियोमे सियह बगूले मचल रहे हैं
हजारो सूरज निकल निकलकर गहनके साँचेमे ढल रहे हैं
हरे भरे खेत गर्म शोलोके पैरहनमे दहक रहे हैं
शगूफे लिपटे हुए धुएँके सियह कफनमे मुलग रहे हैं
कटे हुए हाथ अपनी बाँटोसे राह रोके खड़े हुए हैं
फटे हुए आँचलोके टुकडोमे इस्मतोकी^६ जवान लाश
छिड़ी हुई धर्म ओर मजहबके खजरोमे दिलोकी काशे^७
कटी हुई छातिथोकी नस-नससे दूध खू बनके रिस रहा है

(३)

ये रात है किस कदर भयानक
ये स्वाब है किस कदर परीशाँ
हजारो सहमी हुई निगाहे
बिलखती आँखे, सिसकती पलके
अँधेरी शबमे

^१अक्षरो ^२माथेपर ^३प्राचीनता ^४अनीत ^५पागलोकी भाँति
^६लिबाम ^७सतीत्व ^८फाँके

करोड़ो अश्रुओके झिलमिलाते चिराग लेकर
 हज़ूममे कातिलोके इन्साफके फरिश्तेको ढूँढती है
 मगर मैं यह पूछता हूँ तुमसे
 शरीफ बहनो
 ग़पूर^१ माँओ
 तुम्हारी आँखोमे बिजलियोकी चमकके बदले
 ये आँसुओका वफ़र^२ क्यों है
 मैं जानता हूँ
 तुम्हारे सीनेमे दिलमे ज़ल्मोमे कितने आँसू भरे हुए हैं
 तुम उनकी बूँदोसे आस्मान-ओ-जमीका दामन भिगो चुकी हो
 तुम इस तलातुममे^३ विन्ध्या और हिमालियाको डुबो चुकी हो
 मगर ये खू नाबा-बार^४ आँखोकी बहती गगा
 जमीपे फैले हुए लहूके सियाह धब्बे न धो सकेगी
 ये झिलमिलाते हुए दिये हैं
 जो जुल्मके झक्कड़ो मुसीबतकी आँध्रियोमे न जल सकेंगे
 तुम उनकी मद्धिम-सी रोशनीमे
 हसीन^५ इन्साफके फरिश्तेको कब तलक ढूँढती रहोगी
 कि वो भी इस मुस्तकिल बतनमे
 तुम्हारी ही तरह ज़ल्मखुर्दा^६ है और आवाज़ फिर रहा है

(४)

ये किससे फरियाद कर रही हो
 ये किसको आवाज़ दे रही हो

^१स्वाभिमानी ^२वेग ^३तूफान ^४रक्त बरसानी ^५तीव्र भोको
^६सुन्दर ^७घाव खाय हुए

तुम अपने ज़रमोकी राखियाँ लेके किसकी महफिलमे जा रही हो
 तुम्हारे ये राहबर नहीं हैं
 तुम्हारे ये दादगर^१ नहीं हैं
 ये काठकी पुर्तलियाँ हैं जिनको
 सियासी^२ पर्दोंके पीछे बठे हुए मदारी
 सफ़ेद रेशमकी डोरियोपर नचा रहे हैं
 ये साम्राजो बिसाते-शतरजके पियादे ह जिनको शातिर^३
 हजार चालोसे शाह-ओ-फरजी^४ बना-बनाकर चला रहे हैं
 यही तो हैं वो जिन्होंने कानूनके दहकते हुए कलमसे
 वतनके सीने पे खूने-नाहककी एक गहरी लकीर खीची
 इन्हीने महफिलके साज बदले
 इन्हीने साजोंके राग बदले
 यही तो हैं जो तुम्हारे अश्कोसे अपने मोती बना रहे हैं
 तुम्हारी इसमत, तुम्हारी इज्जत, तुम्हारी गरत^५ चुरा रहे हैं
 ये कत्ल वो हैं कि जिसके दीवार-ओ-दरमे सदियोंकी लानते बसके रह गई हैं
 ये ताज वो हैं कि जिसकी जौ मे
 वतनके चेहरेका रंग तहलील^६ हो गया है
 ये तरुत वो हैं कि जिनके पाये
 हमारे दिलमे गड़े हुए हैं
 ये फर्श वो हैं जहाँ फिरगीके भूत दिन रात चल रहे हैं
 यहाँ शहीदोका खूँ छलकता है मौजे-रगे-शराब^७ बनकर
 यहाँ उमीदोके फूल और आरजूके गुचे^८ न खिल सकेंगे

^१दाद फरियाद सुननेवाले ^२राजनैतिक ^३शतरजके खिलाडी, दूसरा
 अर्थ, चालाक ^४शतरजके बादशाह और वजीर ^५सतीत्व ^६लाज^७ स्वाभिमान
 'महल' ^८घुल-मिल ^९शराबके रंगकी लहर, रंगीन लहर ^{१०}कली

यहाँ तुम्हे अदल^१ और इन्साफके फग्इते न मिल सकेंगे
ये जालिमोका महल है ये कातिलोका मसकन^२ है ये लुटेरोकी अजुमन^३ है

(५)

शरीफ माओ शयूर बहनो
तुम्हारे भाई
तुम्हारे बेटे
तुम्हारी फरियाद सुन रहे हैं
मिलोसे खेतोसे और कानोसे^४ तुमको आवाज दे रहे हैं
वो देखो उनके जवान सीनोमे अदल-ओ-इन्साफकी ज्वाला भडक रही है
निगहमे बिजली चमक रही है
अँधेरो शबसे परे शफककी^५ सुनहरी मीना^६ छलक रही है
वो अपने सीनेका सोज^७ लाएँ
मैं अपने नगमोकी आग लाऊँ
तुम अपनी आहोकी मिशअलोको^८ जलाके निकलो
हम अपनी रूहोकी ताबनाकीसे^९ इस अँधेरेको फूँक देगे
कि जिसके मनहूस दामनोमे
गुनाह परवान^{१०} चढ रहे हैं

^१न्याय ^२निवास स्थान ^३सस्था ^४खानो, खदानो ^५प्रात कालकी
लालिमा ^६शराबकी बोतल, सुराही ^७जलन ^८मशालो
^९चमक-दमक ^{१०}पल रहे हैं, पोषित हो रहे हैं

इन्तक़ाम

(प्रतिशोध)

गुलाम रब्बानी 'तावाँ'

मैं किससे इन्तक़ाम लूँ
 ये सच है बेकसोके खूँसे सुख हो गई ज़मी
 मुसोबतोकी दास्ताँ, मैं सुन चुका हूँ हमनशी^१
 मैं सुन चुका हूँ किस तरह बुज़ुर्ग^२-ओ-नातवान^३ भी
 बिलखते शीर-ख़वार^४ भी, फसुर्दा नौजवान भी
 अजलके^५ घाट एक-एक करके सब उतर गये
 घरोकी शाहज़ादियाँ—हरीमे-नाज़की^६ मकी
 (जो इफ़फ़ते^७ गँवा चुकी—जो इसमते^८ लुटा चुकी)
 भटक रही हैं दर-ब-दर
 बरहना पाँ^९—बरहना सर^{१०}
 मैं सुन चुका हूँ हमनशी ये दास्ताने दिलख़राश^{११}
 मगर किसे मैं दोष दूँ
 मैं किससे इन्तक़ाम लूँ
 तबाहियोंकी गोदके पले हुए किसानसे
 कि जगे-इन्क़लाबके सिपाही नौजवानसे

^१प्रतिशोध ^२साथी ^३बूढ़े ^४निर्बल, निरीह ^५दूध पीते
 वच्चे ^६मौत ^७अन्त पुरकी रहनेवाली ^८लाज ^९सतीत्व ^{१०}नगे
 पाव ^{११}नगे सिर ^{१२}दिल खुरच देनेवाली

गरीब-ओ-नातवानसे
 नही, नही
 ये सब मेरे अजीज हैं—ये सब मुझे अजीज हैं
 मैं किससे इन्तकाम लूँ
 बता किसे मैं दोष दूँ
 चमनमे किसने आग दी है मौसमे-बहारमे
 एक अजनबी सफेद हाथ—आतशीन-ओ-शोलाबार'
 फिजाए-तीरए-वतनमे^२ रक्ख^३ कर रहा है आज

^१आग और शोले, बरसाता हुआ
^२नाच

^३देशके अधिकारपूर्ण वायुमंडल

विश्व शान्ति

विश्व-शान्तिके विषयपर उर्दू साहित्यकारोंकी कुछ रचनाएँ विदेशी भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी हैं। जो कविताएँ अमन और जगपर इस सग्रह-में मिलेंगी वह अत्यन्त सफ़र रचनाएँ हैं। प्रगति-शील साहित्यने इतना ही नहीं किया कि हमारे कलाकारोंको अनेक ऐसे महत्वपूर्ण विषय और शीर्षक दे दिये जिन्हें पुराने साहित्यकारोंने छुआ तक नहीं था बल्कि एक-एक विषय और शीर्षकके इतने पहलू उनकी कल्पनाओंमें उजागर कर दिये कि एक ही विषयपर अनेक कविताएँ नई झलकियाँ दिखा रही हैं। इन कविताओंको धीरे-धीरे पढ़िये, संगीत और भावके मर्मों और रहस्योंको अपनी आवाजमें ढालिये, भाषा और शैलीके चमत्कारोंपर नजर डालिये और इस बातका अन्दाजा लगाइये कि आजकी उर्दू शायरी कहाँसे कहाँ पहुँच रही है।

विश्व-शान्तिके पक्ष और जगके विरोधमें इन कविताओंका अभिप्राय यह नहीं है कि दुनियामें जग छिडे और हम चीन और रूसकी ओरसे लडे या आग्ल-अमरीकाकी आग्लें। हम क्या करे, यह वादकी बात है। इन कविताओंकी ललकार यह है कि दुनियामें जग छिडने ही न पाये।

सूची

	पृष्ठ
१ नीला परचम—‘वामिक’ जौनपुरी	७८
२ खोलो नीला परचम—राही मामूम रजा	८५
३ सवाल यह है जवाब यह है—राही मामूम रजा	८७
४ बाबुल—राही मामूम रजा	८९
५ अमन—हसन आराफी	९५
६ गकुन्तलासे—‘तेग’ इलाहाबादी	९८
७ जग—मखदूम मुहीउद्दीन	१००
८ सिपाही—मखदूम मुहीउद्दीन	१०२

नीला परचम

‘वामिक’ जोनपूरी

हम इसलिये अमन चाहते हैं
कि आज जुलमाते-जगमे^१ आबे-जिन्दगी^२ मिल नही रहा है
ओर अमन ही खिज्जे-जिन्दगी^३ है
हयात बेकैफ^४ हो रही ह
कि टंककी घनघनाहटोमे हमारा सगीत खो गया है

हम इसलिये अमन चाहते हैं
कि जगके भूत कोरियाकी हदोसे बाहर निकल न आएँ
बुभा दो इस आगको वहीपर
दो बारा फिर जी उठे न हिटलर
कि जिसके नापाक सायेमे आके जगबाज्र अपने जुलम ढाएँ

हम इसलिये अमन चाहते हैं
कि नौए-इन्साँकी शहरगोमे^५ ये जह पैंवस्त^६ हो न जाए
जो साजिशोका बने सहारा
हमारे होठो पै है ये नारा
ये नारए-हुँरियत^७ सिमटकर गरजमे तोषोकी खो न जाए

^१युद्धके काले सागर

पथप्रदर्शक ^२नीरम

‘आजादीका नारा

^३जिन्दा रहनेके लिये पानी

‘मानव’ जातिकी नाडियो

^४जीवनका

^५धूम न जाये

हम इसलिये अमन चाहते हैं
 कि आज आजादियोका बढता हुआ सफोना रुके न पल भर
 भँवरमे फँसकर न डूब जाये
 ये नीला परचम न झुकने पाये
 कि आलमी अमन^१ हीमे कौमे निखार सकती हैं अपने जौहर

हम इसलिये अमन चाहते हैं
 कि जो दूमैनको^२ हे हासिल वही हो हक पाल राब्सनको^३
 रहे न बाकी निजामे-दहशत
 यही है पैगामे-आदमीयत^४
 कि जिन्दगी यँ सजाई जाये, सजाते हे जिस तरह दुल्हनको

हम इसलिये अमन चाहते हैं
 कि एशियासे सफेद कौमे हटा ले अपना सियाह डेरा
 ये काले बादल बरस न जाएँ
 हम आज मिलकर कसम ये खाएँ
 कि हिन्दको हम न बनने देगे कभी भी इस जगका अखाडा

मगर हम उस वक्त क्या करेगे
 पडोसमे आग जब लगेगी
 तो उसके शोले जलूर लपकेगे अपने प्यारे वतनकी जानिब
 खिज्राँ बढेगी चमनकी जानिब
 तुम्हे अभी कुछ पता नही है
 यहाँ कभी बम गिरा नहो है

^१नाव भडा ^२विश्व-शान्ति ^३अमेरिकाके भूतपूर्व राष्ट्रपति अमेरिका-
 का प्रसिद्ध हब्शी गायक ^४आतंककारी व्यवस्था ^५मानवताका सदेश

अगर न यह जग रुक सकी तो
 न जाने कितने सुहाग बिरहाकी^१ आग हीमें सुलग उठेंगे
 न जाने कितने दिलोके अरमाँ दिलोके अन्दर ही जल बुझेंगे
 न जाने कितने हुमकते आगोश^२ खूनमें तरबतर मिलेंगे
 करोड़ा मासूम^३ मामताकी तलाशमें दरबदर फिगेंगे
 कोई न होगा सहारा जिनका
 बिलखते बच्चोंका एक लशकर
 मड़ी हुई लाशोंका समुन्दर
 उबल पड़ेगी वबाकी^४ नदियाँ नही मिलेगा किनारा जिनका
 ये जन्नते-अर्ज^५ भी न ऐंटमकी जदसे बचकर निकल सकेगी
 झुलसके रह जायगी हर एक शय
 पिघलके रह जायगी ये मिट्टी
 वो 'हीरोशीमा'^६ व 'नागासाकी'^७ का कातिल^८ अब तक मरा नहीं है
 हमारी मसजिदके ऊँचे-ऊँचे मिनारोंका सर भँभोड़ देगा
 हमारे मन्दिरके जगमगाते कलसको गहनाके तोड़ देगा
 हमारे गग-ओ-जमनकी सीमी^९ कलाइयोंको मरोड़ देगा
 हमारे ये 'ताज' और 'अजन्ता' जमाले-मर्मर^{१०} जलाले-असवद^{११}
 हमारी तहजीबके^{१२} अमर कारनामे जिनके नकूश-ओ-गुम्बद^{१३}
 हमारी तखलीकके^{१४} नमूने
 हमारे पिन्दारके सफ़ीने^{१५}

'विरह' 'गोद' अवोध बालक 'महामारी' 'भू-स्वर्ग' ऐंटम
 वमकी मार, पहुँच ^{१६} 'जापानके नगर, जिनपर पिछले महायुद्धमें
 अमेरिकाने ऐंटम बम गिराकर उसके हजारों निवासियोंको जलाकर
 भस्म कर दिया था 'हत्यारा' ^{१७} 'गगा-यमुना' रूपहली ^{१८} 'सगमर्मरकी'
 मुन्दरता ^{१९} 'काले पत्थरका गम्भीर रंग' ^{२०} 'सभ्यता' 'चित्र और
 गुम्बज' 'निर्माण' 'कशती, नाव'

जवान ही जो हुए थे पैदा
जवान जो आज तक रहे हैं
जवान ताजिन्दगी रहेगे
मगर इन ऐंटमके जलजलोमे शबाब उनका न टिक सकेगा
कोई न उनको बचा सकेगा

हमारी तहजीब जिसके नगमोमे इश्ककी रूह पल रही है
हमारी तहजीब जिसके रक्सोमे^१ नौजवानी मचल रही है
मुसव्विरी वह कि जिसकी आँखोमे फिक्ककी शमा जल रही है
वो बुतगरी^२ जिसके साअद-ओ-कदमे^३ हुस्नकी आँच ढल रही है
हमारी तहजीब जिसके मेमार^४ तुलगी-ओ-कालीदास जैसे
बरहना-इन्सानियतके^५ तनपर पिन्हाया जाये लिबास जैसे
हमारी तहजीबके गजलख्वाँ 'टंगोर'-ओ-'गालिब' व 'खीर' जैसे
हमारी तहजीबके निगहवाँ 'हरीशचन्द्र'^६ ओर 'नजीर'^७ जेमे
हयाते-जावेद^८ पा चुके हैं
मगर ये डर है कि मर न जाएँ
ये सच्चे मोती बिखर न जाएँ

कथाकलीका वो पैरहन^९ तुमसे अम्नकी भीख माँगता है
मनीपुरीका^{१०} कुँआरापन तुमसे अम्नकी भीख माँगता है
कथक^{११} अदाओका बाँकपन तुमसे अम्नकी भीख माँगता है

^१नाचो 'चित्रकारी विचार 'मूर्तिकारी कलाई और शरीर
'निर्माता' 'नग्न मानवता' 'गुणगान करनेवाले' 'रक्षक' 'भारतेन्दु
हरिश्चन्द्र' 'महाकवि' 'नजीर' अकबरावादी ^२'अमर जीवन' 'कथाकली
नृत्यके समय पहनी जानेवाली पोशाक' 'प्रसिद्ध भारतीय नृत्य
^३'कथक नृत्य

ये परचमे-अम्न' हीके साथमें रहके परवान चढ सकेगे
फुनून, मशशत-ए-जहाँ^१ है, मुहाफिजत^२ उनकी हम करेगे
वो सनअते^३ जिनको सीनेसे हम लगाके रखे हुए हैं अब तक
हमारे गुमनाम दस्तकारोके साथ ही साथ चल बसेगी

बनारसी पोत और साडी
जमी पै जिनके बने न साथे
वो अनकब्रताना सेहकारी
कि रहे-मानी सरुरपाए'
वो लखनऊके खिलौने जिनके कदम पै आजर' जबी भुकाए
चिकनकी नाजुक मिजाजियाँ, जिनसे चश्मे-शहला' नजर चुराए
श्रीनगरका' वो नर्म पशमीना, लम्सका'^४ दिल जो गुदगुदाए
वो हदराबादका बदर जिस पे शाखे-तूबाको ' वज्र आए
ये ओर कितने हमारे दावे
नबाहियोका शिकार होंगे
हुददे-मकाँके पार होंगे

'शान्ति-व्रज वटेग समारका मजाने मँवाग्ने
वाली कलाए, मशशता उस स्त्रीको कहते हैं जो बडे
घरोंकी स्त्रियाकी कधी चोटी करके उन्हे सजाती
मँवाग्ने ह 'रथा' उद्योग मकटीके जाल जमी बुनावट, जादूगरी
'मानीकी आत्मा प्रसन्न हो, मानी ईरानका अपने समयका
अद्वितीय चित्रकार था 'एक बहुत बडा मतिकार' माथा 'नगिसका
एक प्रकारका काला फूल जिसकी उपमा फारसी उर्द कवि
प्रेमिकाकी आँखोमे देते हैं 'काश्मीरकी राजधानी स्पर्श 'हैदराबादका
बना बहुत सुन्दर कपडा 'स्वर्गका एक वृक्ष सम्भावनाकी सीमाओं

शऊरे-फ्यूजिक^१ तहे-कफन कबसे मौतपर वार कर रहा है
 'पिकासो'^२ का वो अजीम फन^३ हमको आज बेदार कर रहा है
 नवागरे-पाल राब्सन^४ अब इलाजे-बीमार कर रहा है
 शऊर बेदार^५ करके उट्ठो
 कदमको हुशियार करके उट्ठो
 कि मुन्तजिर है निगाहे-रहजन^६

गुरूरे-फारसका^७ अज्मे-मोहकन^८ नये-नये छब दिखा रहा है
 मलायामे गोरखोके दस्तो पै हिन्दको तैश^९ आ रहा है
 वो बेगुनह खून कोरियाका लहूके आँसू रुला रहा है
 निगारे-चीकी^{१०} जबी पै रोशन सितारा तुमको बुला रहा है
 कलमको तैयार करके उट्ठो
 दिलोसे एकरार^{११} करके उट्ठो
 कि जग अब हम न होने देगे

क़सम है उस जुरअते-जवाँकी^{१२} जो तोडकर रख दे तौके-आहन^{१३}
 क़सम है उस अज़मकी^{१४} जो सहराके^{१५} आँचलोपर उगाये गुलशन

^१फ्यूजिककी चेतना, फ्यूजिक चेकोस्लावेकियाका एक पत्रकार और नेता था जिसे गेस्टपोकी तानाशाही सरकारने बडे कष्ट देकर मार डाला ^२विश्व विख्यात हब्शी चित्रकार ^३महान कला ^४चेतनाको जगा रहे है ^५चोर, लुटेरेकी निगाह ^६ईरानके अभिमान ^७दृढ सकल्प इस पक्तिमे ईरानने तेलके सम्बन्धमे ब्रिटिश कम्पनी और ब्रिटेनके विरुद्ध जो नीति अपनाई है उसकी ओर सकेत है ^८क्रोध ^९चीनकी मूर्तिके माथेपर चमकता तारा ^{१०}प्रतिज्ञा ^{११}जवान साहस ^{१२}लोहेका फन्दा ^{१३}सकल्प ^{१४}उजाड मैदान, बजर भूमि

कसम है उस जोशो-कामराँकी' जो हलकी सैलाबके^१ बदल दे
 कसम है उस रफअते-नज़रकी^२ जो छीन ले आस्माँसे तारे
 कसम है उस जुस्तजूकी' जो जल्मे-दिलकी हर फाँस ढूँढती है
 कसम है उस अह्-दे-नौकी' जिसको हमारी हर साँस ढूँढती है
 कसम है उस बेनवा किसान और गरीब मजदूरके यकीकी
 वो अपनी मेहनतकी ज़िन्दगीमे
 हवीबे-जाँकी बरहनगीमे'
 कमीफ' वच्चोकी गन्दगीमे
 अँधेरीसी अपनी भोपडीमे
 खयाले-फरदाकी रोशनीमे
 हयाते-नौकी उमीद लेकर तलाशमे वक्तकी लगे है
 कसम है उन बेशुमार हाथोकी, आज जो अपने दस्तखतसे
 ये एक एलान कर रहे हैं कि "जग अब हम न होने देगे
 "कि जग अब हम न होने देगे"

जो ऐटमी बम बने हुए हैं, बहा दो उनको समुन्दरोमे
 कि जग दुश्मन है ज़िन्दगीकी
 रखे-सहरसे'' नकाब उठा दो
 हमे ज़रूरत है रोशनीकी
 हम इसलिये अमन चाहते हैं

अगर न ये जग रुक सकी तो
 हमारी तारीखे-इरतकाकी' सुनहरी जिल्दे, रुपहली सतरे

^१सफलताके उत्साह ^२वाढ ऊँची दृष्टि, निगाहकी ऊँचाई ^३जिज्ञासा
^४नवयुग ^५प्राणप्रिय ^६नग्नता ^७गन्दे मेले वच्चो ^८भविष्यका विचार
^९नवजीवन ^{१०}प्रभातके मुखमे ^{११}विकासका इतिहास

लहदमे' निसियाँके' दफन होगी
 हमारी हव्वा, हमारी मरियम,^१ हमारी सीता,^२ हमारी राधा^३
 हमारी 'जोन'^४ और हमारी 'जोया'^५
 उरुसे हर दिल, उरुसे दुनियाँ

हमारे दिलमे न रह सकेगी
 हमारी दुनियाको छोड देगी
 हमारी 'अजरा'^६ हमारा 'शेली'^७ हमे कभी फिर न मिल सकेंगे
 हमारी शीरी,^८ जो आज अपनी शरारतोसे हे घरकी रौनक
 न घर रहेगा न घरकी रौनक

न जाने ये जग क्या करेगी
 बस एक सन्नाटा एक वहशत'^९
 मुहीब^{१०} चीखे कदम-कदमपर
 हवामे गोलीकी सनसनाहट
 वो मौतकी चाप खौफसे जिसके दिल अभीसे दहल रहा है
 हमारे खेतोकी छातियोको न जाने कब तक ये टैंक रौंदे
 न जाने कब तक ये आग बरसानेवाले राफ़ेट^{११} फिज़ाँमे कौंदे
 अगर हम इससे भी बच गये तो वबाई कीडोके^{१२} बम गिरेगे

^१कन्न ^२विस्मृतकी ^३११' ^४१०' आदि पुरुष आदमकी पत्नी,
 ईसाकी माँ, सीता, राधा, फ्रांसकी क्रान्तिकी नायिका जोन आफ आर्क,
 रूसकी वीर बालिका जिसने हिटलरकी फौजोका मुकाबिला किया
 'प्रत्येक हृदय और समस्त मसारकी प्यारी दुल्हन' 'वामिक अजरा'
 नामक प्रेमी प्रेमिका भी लैला मजनूँकी तरह मुस्लिम साहित्यमे मशहूर
 है 'प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि' ^{१२}फरहादकी प्रेमिका ^{१३}वीरानी ^{१४}भयानक
^{१५}वान ^{१६}बीमारी फैलानेवाले कीटाणु

अगर हम उससे भी बच गये तो 'नपाम बम का' शिकार होंगे
 बदन पे उभरेंगे कोढ़के दाग
 बदलके रह जायगी शबाहत
 जमीनपर एडियाँ रगड़कर
 हमें तमघाए-मौत होगी
 मगर न हम जल्द मर सकेंगे—
 कोई न होगा किसीका हमदम
 वो जग होगी कि हश्र^१ होगा

^१ऐसा बम जिसके गिरनेसे धरतीपर ६ फिट ऊँचाई तक प्रत्येक चीज
 जल जाती है 'प्रलय

खोलो नीला परचम

(पेकिंग कानफ्रेन्सके नाम)

राही मासूम रजा

युद्धकी अग्निकी लपटोंसे जीवनकी जूही कुम्हलाये
लयकी डोरी टूट रही है, गाये तो भौरा कैसे गाये
शबनम अगारोकी कैदी, कौन कलीकी प्यास बुझाये
काजलकी कवितामिटती है, नयनकँवलमें नीर भर आये
जीवनकी बीनापर कोई छेड़ रहा है मौतका सरगम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

आँगनसे लिपटा है अँवैरा, डालर सारे दीप बुझाये
बापकी लाठी टूट रही है, कौन उसे गिरनेसे बचाये
लोरीका भूला टूटा है, माँ कैसे बच्चेको सुलाये
मौत खिलौनोमें बैठी है, बचपनको यह कौन बताये
देर हुई तो करना होगा, जीवनके सपनोंका मातम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

जीवनकी कोमलतापर अब रंग रहे हैं कोढ़के धब्बे
खेतोंकी हरियालीमें अब, होते हैं ऐंटमके चर्चे
युद्धसे दूकानोमें हलचल, मिलको एक पल नोद न आये
युद्ध आकाशके ज्ञानका दुश्मन, युद्धसे सागरका दिल धडके
धरतीकी यह आस न टूटे, रस्तेमें हैं फूलोका मौसम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी हर रात अमावस युद्ध यानी हर दिन गहनाया'
दीवाली भी दीपको ढूँढ़े, युद्धसे चारो ओर अँधेरा
युद्ध यानी दीवारें बँठे—युद्ध यानी शमशान' हो दुनिया
युद्ध यानी सड़को पे बिगड़े सारा रंग-रचाव कलाका
युद्ध यानी हर घुघरू रोये, युद्ध यानी रोये हर परछम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी कलिया जल जाएँ, धूप पड़े ओर लाशें चटकें
घुघरू सगीनोपर उछले, मौतके ताल प लाशें नाचें
बालोकी खुशबू मर जाये, सड़ती गलती लाशें महकें
युद्ध यानी सड़कोपर लाशें, घर और स्कूलोमें लाशें
धरती जख्मोसे बेदम है आओ लगाएँ अमनका मरहम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

धरतीके सूखे होठोपर अमनका ठंडा रस टपकाओ
जीवनके मन्दिरमें जाकर अमनके सुन्दर दीप जलाओ
दुनिया भरके साज मिलकर जीवनका संगीत बनाओ
जीवनके सपने नाच उठें, अमनका वह पैगाम सुनाओ
जीवनकी बीनापर छोड़ो अमनकी धुन, पर मद्धम-मद्धम
खोलो नाला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

सवाल यह है—जवाब यह है

(जालन्धर अमन कानफरेन्सके नाम)

राही मानस रजा

सवाल यह है कि तीसरी जगसे भला क्यों में डर रहा हूँ
सवाल यह है कि मेरी नज्मोमे अमनकी ये पुकार क्यों है
सवाल यह है कि जग होगी तो हो, मुझे क्या गरज है इससे
सवाल यह है कि मेरी नज्मोको अमनपर एतबार क्यों है

ये शह्र शाहेजहाँके दिलका अमीन होता तो फिक्र होती
यहाँ अजन्ताकी अजमतोके निशान मिलते तो सोचता भी
गुलाबके खेत अपनी वीरानीके कफनमे सिसक रहे ह
हमेशाकी तरह इस जमीपर गुलाब खिलते तो सोचता भी

हवामे दिकके कदमकी आहट, जमी पे सिलके लहकी सीलन
कुछ और अमराज हो तो डर क्या, जमीन फरियाद क्या करेगी
उजाड सडके, उदास आँगन, ये गिरती दीवारोका वतन है
लडाई होगी तो हो, लडाई खँडरको बरबाद क्या करेगी

लडाई होगी तो खून बरसेगा, मौत लहरायेगी फिजामे
हयातको आज मौतका इन्तज़ार है, फिक्र क्या करूँ मैं

गाजीपुर दूसरी लडाईमे हमारे गुलाबके खेत हवाई अड्डो
काम आ गये क्षय रोग यक्ष्मा रोग

लडाई होगी तो भूख शह-रग पै^१ हाथ डालेगी बस यही न
यहाँ तो बेरोजगारीही रोजगार है—फिक्र क्या करूँ मैं

लडाई होगी तो साफ-ओ-शफाफ^२ ज़िन्दगी चीखने लगेगी
मगर सलामत अँधेरी गलियाँ, गिलाज़ते^३ अब भी उग रही है
लडाई होगी तो इस्मते^४ शामकी सजावट पै खर्च होगी
मगर यहाँ कच्चे आँगनोमे तवायफे अब भी उग रही है

लडाईकी फिक्र दिल्लियो सारनाथो और काशियोको होगी
हसीन बागात अमन चाहे हसीन बाज़ार अमन चाहे
लडाईकी फिक्र अगर करेगे तो बुद्धके बुत, मुझे गरज़ क्या
अशोककी लाटे अमन चाहे, अजन्ताके गार अमन चाहे

मे उस ख़राबेका^५ रहनेवाला कि कहकहा सुनके चौँक उठे
हवाका जो रास्ता नहीं है, ज़मीका जो रास्ता नहीं है
यहाँकी मटियाली ज़िन्दगीपर किसीका ऐटम नहीं गिरेगा
ये टूटा फूटासा शह्र दिल्ली नहीं है, हीरोशिमा नहीं है

तो साथियो अब सवाल यह है कि जगके में खिलाफ क्यों हूँ
तो साथियो अब सवाल यह है कि फिक्र क्यों गर्मे-जुस्तजू^६ है
तो साथियो अब सवाल यह है, लडाईकी मुझको फिक्र क्यों हो
तो साथियो अब सवाल यह है कि अमन क्यों मेरी आरजू है

गवाह रहना कि मेरा फन इस ख़िज़ाँमें अब एक गुलाब देगा
गवाह रहना कि मेरा फन जुलमतोमे^७ एक आफताब^८ देगा

^१नाडी ^२निर्मल, स्वच्छ ^३गन्दगी ^४सतीत्व, स्त्रियोकी लाज
^५उजाड़, वीरान स्थान ^६जिज्ञासामे लीन है ^७अन्धकारोमे ^८सूर्य

गवाह रहना कि इन सवालको सुनके मैं चुप नहीं रहा हूँ
गवाह रहना कि मेरा फन इन सवालको अब जवाब देगा

उदासी बिखराये बाल जिन आँगनोमे सदियोसे खेलती है
गवाह रहना कि आया हूँ मैं उन आँगनोका सलाम लेकर
गवाह रहना कि सैकड़ो मील चलके आया हूँ मैं यहाँपर
उजाड सडकोने मुझको भेजा है आज अपना पयाम देकर

गवाह रहना कि टूटी सडकोका एक नुमाइन्दा कह रहा था
कि अमन मेरी उजाड सडकोकी एक बेचैन आरजू है
गवाह रहना गुलाबोका एक सफ़ीर^१ आया था, कह रहा था
लडाईसे इस्तिलाफ^२ हमको—सुकूनकी हमको जुस्तजू है

लडाई होगी किसान टामीगनोसे खेलेंगे हलको रखके
सवाल यह है कि खेतियाँ गुप्तगू करेगी अगर तो किससे ?
लडाई होगी तो सीनए-बह्लपर धमाकोका राज होगा
सवाल यह है कि नदियाँ गुप्तगू करेगी अगर तो किससे ?

लडाई होगी तो शाहराहो पे टैंक धूमेगे, शोर होगा
सवाल यह है कि ज़िन्दगीकी निशानियाँ फिर कहाँ रहेगी
लडाई होगी तो आँगनोके हर एक कोनेमे खौफ होगा
सवाल यह है कि दादियोकी कहानियाँ फिर कहाँ रहेगी

मैं आज गुमनाम हूँ यह सच है—मगर मैं फनकार^३ हूँ रफीको
मैं 'राब्सन'^४, 'फास्ट' और 'शह-यन'^५ के वास्ते अमन चाहता हूँ

^१दूत ^२विरोध ^३कलाकार ^४पाल राब्सन ^५अमेरिकाका प्रसिद्ध
प्रगतिशील लेखक ^६प्रसिद्ध चीनी उपन्यासकारके

मैं एक खराबेका रहनेवाला तो हूँ मगर बेखबर नहीं हूँ
मैं मास्को रोम और बर्लिनके वास्ते अम्न चाहता हूँ

ये जूहीके गुनगुनाते पौदे, ये बेलेंके मुस्कराते गुचे
गुलाबके खेतोकी कहानी सुना न दे इससे डर रहा हूँ
ये तीसरी जग दूसरी जग हीकी मानिन्द जग होगी
हवाई अड्डे कही इन्हे भी मिटा न दे इससे डर रहा हूँ

लडाई होगी तो फौजके साथ जिन्सकी भूख भी बढ़ेगी
कहाँ रहेगा गुरूरे-मरियम^१ कहाँ रहेगा विकारे-सीता^२
बताओ सीनोपर ओर जल्मोके वास्ते अब जगह कहाँ है
नहीं, ये खेल अबसे बन्द होगा यहाँ न होगा कही न होगा

नहीं, लडाई नहीं, लडाई विजाँका एक नाम है रफीको
गुलाबके उजड़े खेत अपनी शगुफ्तगी^३ माँगते हैं मुझसे
ये मदरसे जिनमे टाटके गन्दे फर्शपर इल्म ऊँघता है
ये मदरसे आज उदास बैठे ह, जिन्दगी माँगते हैं मुझसे

मैं एक खराबेका रहनेवाला, तो क्या दरिन्दोको भूल जाऊँ
तो क्या भयानक लडाईकी मे खबर सुनूँगा तो चुप रहूँगा
सुनो ! रफीको, सुनो ! ब-बाँगे-दोहलमे मैं एलान कर रहा हूँ
मैं अम्नके वास्ते जिऊँगा, मैं अम्नके वास्ते मरूँगा

शिकस्ते-आईना^४ किसको कहते हैं, यह कोई मेरे दिलसे पूछे
कुछ ओर शीशे भी टूट जाये, मैं यह गवारा नहीं करूँगा

^१ऐन्द्रिक भूख ^२मरियमका अभिमान ^३सीताका तेज
^४‘प्रफुल्लता, ताजगी’ ‘हिसक पशुओ’ ‘ढोलकी आवाजके साथ, अर्थात्
चिल्ला-चिल्लाकर’ ^५दर्पण टूटना

मे टूटी सड़कोके दर्दको खूब जानता हूँ इसीलिये तो कुछ ओर सड़के भी टूट जाये मैं यह गवारा नहीं करूँगा मैं जानता हूँ कि दिककी आहटसे नींद किस तरह टूटती है मैं जानता हूँ कि गाढा बलगम जमीको किस तरह चूसता है अँदरे कमरे हयातमे क्या सलूक करते ह, जानता हूँ मैं जानता हूँ कि टूटे गमलेमे पौदा किस तरह सूखता है तो क्या जमी एक टटा गमला बने तो मैं देखता रहूँगा ? जो एक पौदेके गममे रो दे, चमनकी बरबादी देख लेगा जो एक खराबेकी नालियोकी गिलाजतोपर गवाह हो खुद वो वादिये-वाल्गा व गग-ओ-जमनको बरबादी देख लेगा ? दराज जुल्फोकी बरहमी अमन माँगती है मेरी जबोंसे मैं अमनकी माँग कर रहा हूँ, घटाओकी तिशनगीकी खातिर हसीं मितारोकी रोशनी अमन माँगती है मेरी जबोंमे मैं अमनकी माँग कर रहा हूँ, फिजाकी शाइस्तगीकी खातिर घरोकी दीवारोपर लडकपन लकीरे खीचा किया ह अब तक मैं घरकी दीवारोकी लकीरोके वास्ते अमन चाहता हूँ मैं दिककी तलखीको जानता हूँ कि खन थूका ह खौमियोमे मैं दिकके बीमारोकी दवाओके वास्ते अमन चाहता हूँ मैं हर हसी शहके तहफुजके वास्ते अमन चाहता हूँ जमीन अब तक सुना रही ह लडाईका एक तवील किस्सा सवाल करते है लोग मुझसे कि अमन या जग किस तरफ हू मैं जगके साथ अगर रहूँगा तो अमनके साथ कौन होगा ?

‘रूसकी नदी’ ‘अस्तव्यस्त, परेशानी, बिखरा होना’ प्यास
 ‘सुसंस्कृत बनाने’ ‘कटुता’ ‘रक्षा’

बाबुल

राही मामूम रजा

दुल्हन चली

छनन छनन

छनन छनन

मिरासिनोका^१ गीत शामियानेसे निकल गया

करीबे-दर^२—

करीबे-राह^३ आ गया

तमाम औरते सिमटके रास्तेपर आ गई

मुहल्लवालियां भी हैं

उन्हीमे नौकरानियां

उन्हीमे बहने और सहेलियां भी हैं

दुल्हनकी बन्द आँखोसे

कुछ आँसुओकी बूंदे गिरके लाल टोनकी रदामे^४ जज्ब होके रह गई

मिरासिनोका गीत लेकिन और तेज हो गया

किसीने बढके पालकीके पदोंको उठा दिया

ओर आफताब उस उफकमे^५ छिप गया

तुलूए-सुबहके^६ लिये—

कोई न छोक दे कही

कि यह बुरा शुगून है

^१डोमनियो ^२द्वारके पास ^३रास्तेके पास ^४चादर ^५क्षितिज
^६प्रभातोदय

ये गीतका मुकाम है
 ये जाय-एहतराम^१ है
 विदाअका^२ ये वक्त है
 कोई शुगूने-बद न हो
 सफेद साडियो, डुपट्टो और अकेली राहकी तरह जो खाली मांगे हो
 उन्हे उधर ही रोक लो
 करीबे-दर न आने दो
 कोई शुगूने-बद न हो
 विदाअका ये वक्त है
 ये एक खानदानकी हयातका सवाल है

मिरासिनोके गीतने
 शुगूने-बदके डरसे पालकीको जैसे ढक लिया
 ये गीत कितनी बार गाया जा चुका है आज तक
 मगर ये गीत आज भी जवान है
 एक अधपकासा आम है
 खटास भी
 मिठास भी

ये गीत उस दुल्हनकी तरह पाक है
 ये गीत माँकी डबडबाई मुस्कराहटोकी तरह पाक और अजीम^३ है
 ये गीत उस दुल्हनके ख्वाबकी तरह हसीन है
 ये गीत छोटे भाइयोकी भीगी आस्तीन है
 जो माँको रोता देखकर
 बहनको जाता देखकर

^१आदरकी जगह ^२विदाई ^३महान

बगैर सोचे समझे बस बिलख पड़े
 ये गीत माँका प्यार है
 ये बापका गुरुर है
 ये घरकी आनबान है
 ये आज भी जवान है
 न जाने कितना रस भरा है इसके बाल-बोलमे
 न जाने कितने ख्वाब है
 उतार है
 चढ़ाव है

अगर ये रस छलक पड़े
 नहीं नहीं
 ये एक खानदानकी हयातका सवाल है
 ये गीत जिन्दगीके इरतकाका एक नाम है
 मुहाग-नथको कौन तोड़ सकता है
 हयातके इस इरतकाको कौन रोक सकता है
 दुल्हनके बजते भाँभ इसको बढ़के रोक सकते हैं
 मिरासिनोके गीत इसको बढ़के टोक सकते हैं
 वो कौन बदनसीब है
 नई दुल्हन
 अजीज माँ
 मिरासिनो
 मुहल्लेवालियो ! सुनो
 वो तीसरी लड़ाई है

अमन

हसन आराफी

अमन—शाशब वादी नदीका तरल्लुम मचलती किरन

महकी-महकौ हवा लहके लहकेसे बन बहके-बहके हिरन
फेली-फैली चरागाह भेडोके रेवड गडरियोके गीत
तैरे-तैरे फिजामे कुलगोके नगमे पपीहोके गीत

अमन—इन्सानकी मेहनत अनहारमे^१ झिलमिलाती हुई
बाग सैराब होते हुए खेतियाँ लहलहाती हुई
डाली-डाङ्गी फलोसे लदी कोयले चहचहाती हुई
बालियाँ टिमटिमाती हुई जिन्दगी मुस्कगती हुई

अमन—पनघटपै शाम-ओ-सवेरे बहम^२ कुनमुनाती उमग
भमभमाती हुई गागरे भनभनाता हुआ जलतरंग
अबरओका तकाजा कि शोलेकी मानिन्द गोरी मिलो
घूँघटोका इशारा कि भोले सनम चोरी-चोरी मिलो

अमन—भोगी हुई रात छिटकी हुई चाँदनी नर्म सेज
दो सुलगते शराबसे^३ होती हुई दमबदम गर्म सेज
और शबानेके^४ सागरकी गर्दिशसे मिलता सुबूहीका^५ दौर
कपकपाते लबोपर यही इलतजा 'साकिया और और'

^१एक चिडिया ^२नहरो ^३साथ ^४चिनगारियो ^५रातको चलनेवाली शराब
^६सवेरे चलनेवाली शराब

अम्न—हीरोसी हीरोका^१ नीमोकी छतरीके नीचे हुजूम
चूडियोकी खनक घुंघरुओकी झनक चरखे-चरखे की धूम
पूनी तकलेसे टकराये तकला उसे तारमे ढाल दे
कातनेवालियोके बे आहग^२ सपनोंको सुर ताल दे

अम्न—करघा जुलाहा जहाँ नकरई^३ जाल बुनता रहे
रात दिन आदमीके बदनके लिए ढाल बुनता रहे
आरजुओके भूलेमे भूले उम्मीदोंके सपने बुने
उसके मनकी कली मुस्कराये नवेदोंके सपने बुने

अम्न—कच्चा घरीदा जहाँ हल बने हलका फाला ढले
फसल फूले फले कोठी-कोठी भरे हल चले जग पले
और चरसे पे दोहेकी ताने किसानोंके दिलका धुआँ
'जोडियाँ जगदे विच थोडियाँ बेलियाँ जोडियाँ थोडियाँ'

अम्न—चौपालका दोपहर गम लपकती हुई शामका
हालियोंके^४ मशकत भरे दिनमे इक वक्फा^५ आरामका
इक तरफ दिलके शीशेकी दुनियाके गम चूर करते हुए
इक तरफ वारिस-ओ-फ़ल जीने पे मजबूर करते हुए

अम्न—भरियोसे दाने लपकते हुए दिल उछलते हुए
शाम होते ही अलगोज़े बजते हुए गीत उबलते हुए
और ढोलककी थापो पे धरतीकी छाती धडकती हुई
चाँदको देखकर दिल-गिरफ्तार^६ चकोरे फडकती हुई

अम्न—गल्लेके अम्बार कन्द-ओ-शकर और रुईके ढेर
अल्ला अल्ला वो बहुतात हर शौ मिले चार पैसेकी सेर

^१गंभाकी प्रेमिका ^२सामजस्यहीन ^३चाँदीके ^४हलवाही ^५क्षण
^६पजाबी कवि ^७जिनका हृदय बन्दी है

दूधकी नहरें और शहदकी नदियाँ रक्स^१ करती हुई
जिन्दगानीकी तस्वीरमे नित नये रंग भरती हुई

अमन—देहाती कस्बातकी यह तमन्ना कि आगे बड़े
बर्करफ्तार^२ शहरोके शानोसे शाने^३ मिलाकर बड़े
खेत मजदूर जागीरदारीकी भुसमें शरारे भरे
खेत फैलाये दामन कि उनमे मशीने तरारे भरे

अमन—मेहनतकशोकी तमन्ना कि तहजीब फूँचे फले
कारखानोमें दुनियाए-नौ का अछूता सवेरा ढूँचे
जर्ने-जर्नेके सीनेमे जोशेनुमू^४ कसमसाने लगे
जिन्दगानी उरुसेनवीकी तरह मुस्कराने लगे

अमन—जम्हूरका हक्के-तहरीक-ओ-तजीमे-पेशा वर्राँ^५
एक एकाकि गासिब^६ पै बरसे हजीमतकी बरकें-तपा^७
मुफ्तखोरोके हीलोसे जहमतकशोको^८ खलासी मिले
वह दिखाये करामत जमाअत कि सह्रामे गुलशन खिले

अमन—क्या अमन हीसे ये गद्दारियाँ अमनके नामपर
तीसरी जगे-आलमकी तैयारियाँ अमनके नामपर
दुखके साथीसे अच्छी वफादारियाँ अमनके नामपर
चारो जानिबसे धावेकी तैयारियाँ अमनके नामपर

अमन—खुद अमनका जगसाजोकी छातीयें चढ बैठना
फारुताओका खूंखार बाजोकी छातीयें चढ बैठना
ताजदारोकी मगरूर कलगीको^९ कदमो तले रौदना
टोपी-टोपीमे मस्तूर कलगीको कदमो तले रौदना

नाचती हुई बिजलीकी गतिवाले कन्धेमे कन्धा^१ विकासका
जोश नर्तक दुलहन^२ जनताका आन्दोलन और मगठनका अधिकार
लुटेरे^३ पराजयकी बिजली खटनेवाले^४ ताज

शकुन्तलासे

‘तेग’ इलाहाबादी

तुम्हे तो यह बात याद होगी

कि दूसरी जग हीमे पानीके बदले कीचड़ पिया गया है
गिजाके बदले सिपाहियोंको निजासते फाँकनी पड़ी है
शिकस्तगी बेबसीमे चमड़ेकी पेटियाँ चाटनी पड़ी है
हजारो माएँ जवान बच्चोंके वास्ते खून रो चुकी हैं
जईफ बापोंके थरथराते हुए कदम सँद पड़ चुके हैं
सुहागिनोकी निगाहे दूल्हाकी वापसीको तरस चुकी हैं
मिसकती बहनोने भाइयोंको कफन पिन्हाकर जुदा किया है

अगर फिर इस बार जग होगी

तो आदमीयत नोकीले बूटोकी ठोकरोसे लरज उठेगी
तुम्हारे घरके बरामदेमे चटखती ईंटोके ढेर होंगे
तुम्हारे शौहरका जिस्म सीसेकी गोलियाँ खाके गिर पड़ेगा
तुम्हारी बच्चीसे लोग उसकी जरासी गुड़िया भी छीन लेंगे
तुम्हारे बच्चेके हाथमे दूधका कटोरा नहीं रहेगा
तुम्हारे चेहरे पे दाँतके नील होंगे, लबपर खराश होगी
तुम्हारे सीनेको भेड़ियोंके करीह^१ नाखून नोच लेंगे
तुम्हारी अलमारियो पे रखी हुई किताबे नहीं रहेगी

^१भोजन

^२गन्दी चीज

पराजयकी दशामे

^३काँप

^४घृणित

तुम्हारे चूल्हेमें लकड़ियोंके एबज तुम्हारा बदन जलेगा
 तुम्हारी अपनी जमी जलेगी, तुम्हारा अपना वतन जलेगा
 तुम्हारे छज्जे पे काँचकी चूड़ियोंके टुकड़े नहीं रहेगे
 तुम्हारे आँगनकी रस्सियोंपर सफेद कपड़े नहीं रहेगे
 तुम्हारे भाईका साज गिर जायगा मितारोकी आह बनकर
 तुम्हारे भाईके गीत जम जायँगे तुम्हारी कगह बनकर
 ये बात तुम तक नहीं रहेगी
 ये जह्म धरतीकी एक-एक नममे घुलके आँनोको काट देगा
 ये जह्म रग-रगको चाट लेगा
 जमीन गेहूँ नहीं जनेगी
 कि इसके होठोपै आदमीके लहूकी पपड़ी जमी हुई है
 मिलोमे कपडा नहीं बनेगा
 कि तकलियोंको घुमानेवालोंकी उँगलियाँ काट दी गई हैं
 अदबका^१ नाम-ओ-निशों न होगा
 कि दर्सगाहोमे^२ गिद्ध मुर्दरिसकी लाशसे खून पी रहे हैं
 कही तकद्दुस^३ नहीं रहेगा
 कि शाहराहोपे^४ फौजके रुसियाह^५ कुत्ते जितना करेंगे

^१माहित्य ^२विद्यालयो ^३पवित्रता ^४काले मुँहवाले ^५व्यभिचार

जंग

मखदूम मुहीउद्दीन

निकले दहाने-तोप' से बरबादियोंके राग
बागे-जहाँमे फैल गई दोऊखोंकी आग
क्यो टिमटिमा रही है ये फिर शमए-जिन्दगी
फिर क्यो निगारे-हक' पे हैं आसारे-बेवगी

इफरीते-सीम-ओ-जरके कलेजेमे क्यो है फाँस
क्यो रुक रही है सीनेमे तहजीबे-नौकी' साँस
अमन-ओ-अमाँकी नब्ज छुटी जा रही है क्यो
बालीने-जोस्त' आज अजल गा रही है क्यो

अब दूल्हनोसे छीन लिया जायगा सुहाग
अब अपने आँसुओसे बुझाएँ वह दिलकी आग
बरबत नवाजे-बज्मे-उलूही' इधर तो आ
दावत देहे-पयामेउबूदी' इधर तो आ

इन्सानियतके खूनकी अरजानियाँ' तो देख
उस आस्मानवालेकी बेदारियाँ तो देख

'तोपोके मुँह 'सत्यकी तस्वीर 'चाँदी सोने
(लोभ)का राक्षस 'नई सभ्यता 'जिन्दगीके मिरहाने 'ईश्वरकी
ज्ञान ध्यानवाली सभको सगीतसे नवाजनेवाले 'ईश्वरीय पूजाका सदेश
पहुँचाने वाले 'सस्ता

मासूमए-हयातकी^१ बेचारगी तो देख
 दस्ते-हवसमे^२ हुस्नकी गारतगरी^३ तो देख
 खुद अपनी जिन्दगी पै पशेमाँ^४ है जिन्दगी
 कुरबानगाहे-मौत^५ पै रक्साँ^६ है जिन्दगी
 इन्सान रह सके कोई ऐसा जहाँ भी है
 इस फितना जा जमीका कोई पासबाँ भी है
 ओ आफताबे-रहमते-दौराँ तुलूअ^७ हो
 ओ अजुमे-हमीयते-यज्जदाँ^८ तुलूअ हो

‘अबोध जिन्दगी’ लोभी हाथ ‘विनाश’ पछताती है ‘मृत्युकी’
 बलिवेदी ‘नाच रही है’ ‘युगपर दयाका प्रकाश’ लानेवाले सूर्य उदय हो
 ‘ईश्वरीय लाजके तारे उदय हो’

सिपाही

मखदूम मुहीउद्दीन

जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

कौन दुखिया है जो गा रही है
भूखे बच्चोको बहला रही है
लाश जलनेकी बू आ रही है
ज़िन्दगी है कि चिल्ला रही है
जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

कितने सहमे हुए हैं नज़ारे
कंसा डर डरके चलते हैं तारे
क्या जवाग्रीका खूँ हो रहा है
मुख है आँचलोके किनारे
जाने वाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

गिर रहा है सिपाहीका डेरा
हो रहा है मेरी जाँ सवेरा
ओ वतन छोडकर जानेवाले
खुल गया इन्कलाबी फरेरा
जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

गज़लें और गीत

गज़ल शब्दका अर्थ है माशूकमे वाते करना । लेकिन इस अर्थको विस्तार देकर प्रेम और मोन्दर्यके परस्पर सम्बन्ध, प्रेम और मोन्दर्य सम्बन्धी भाव और विचार, अनेक रूपों द्वारा प्रेम और प्रेम के अतिरिक्त जीवनके दूसरे मुख्य पहलू, मृष्टिके सम्बन्धमें हमारी भावनाएँ ये सब गज़लके विषय बना दिये गये हैं । वस इसका ध्यान रखना आवश्यक समझा गया है कि दोस्त या माशूकमे वाते करनेमें जिस अपनत्व, सहृदयता, नर्मी और घुलावटको हम काममें लाते हैं, गज़लकी भाषा और उसके स्वरमें भी यही सब होनी चाहिये । उर्दू कवितामें गज़ल अधिकसे अधिक मानवीय या निजी स्वर-कम्पनमें अलंकृत कविता होती है । नई उर्दू शायरीमें यह प्रयास किया गया है कि गज़लको नई चेतना और जीवनपर नई आलोचनाका माध्यम बनाया जाय । नई उर्दू गज़लमें नई प्रतिक्रियाएँ और नई प्रेरणाएँ व्यक्त की गई हैं ।

इस पुस्तकके इस भागमें गज़लके साथ कुछ गीत भी रख दिये गये हैं । गीतोंमें भी भाव और विचार, स्वर और ध्वनि नर्मा दिये जाते हैं और गीत बहुत उतरके कहे जाते हैं । उर्दूके नये गीतोंमें अक्सर इस युगके वातावरण, उसकी समस्याओं और उसके अनेक पहलुओं की ओर संकेत होते हैं । बातों वातोंमें अनेक परिस्थितियों को और युगकी आत्माको छूते हुए उर्दू गीतोंके लेखक गुजर जाते हैं । गीतोंमें भाषा इतनी सरल हो जाती है और इतनी ठेठ बन जाती है कि हिन्दी उर्दूका भेद अक्सर मिट जाता है ।

गज़लें और गीत

पृष्ठ

पृष्ठ

१. 'मजरूह' मुलतानपुरी—

ये स्के-स्के से आँसू १०५

निगाहे-माकिये-ना-

मेहवाँ १०७

खत्म शोरे तूफा या १०६

मुझे सल्ल हो गई १०७

२. 'आरिफ' अब्दलमतीन—

तेरे वाजुओका सहारा १०८

३. 'बाकी' सिद्दीकी—

पछी चहके फूल

खिले १०९

४. 'हफीज़' जालन्धरी—

अगर मौज है १०९

५. मुइन अहसन 'जज़बी'—

मरनेकी दुआएँ ११०

हम दहके इम ११०

६. श्रीमती 'अदा' जाफरी—

नाज उठे कब १११

७. 'खुमार' बाराबकवी—

जगतकी आव-ओ-

तावसे १११

८. 'फिराक' गोरखपुरी—

जमी बदली, फलक

बदला ११३

१. स्व० मोराजी—

अनजाने नगर ११५

२. मुनीर नियाज़ी—

बिछुडके जाने वाले

लोगो ११६

किस किससे हम ११६

३. 'साहिर' लुधियानवी—

रातके राही ११७

४. हफीज़ जालन्धरी—

अपने मनमें प्रीत ११८

५. 'तनवीर' नकवी—

समझ न आए बात १२०

‘मजरूह’ मुलतानपूरी—

गज़ल

(१)

ये रुके-रुकेसे आँसू ये घुटी-घुटीसी आहे
युँही कब तलक खुदाया गमे-ज़िन्दगी निबाहे
कही जुलमतीमे धरकर हँ तलाशे-दस्ते-रहबर
कही जगमगा उठी हँ मेरे नक्शे-पाँ से राहे
तेरे खानमाँ खराबोका^१ चमन न कोई सहारा
ये जहाँ भी बैठ जाएँ वही इनकी बारगाहे^२
कभी जादए-तलबसे जो फिरा हूँ दिलशिकस्ता
तेरी आरजूने हँसकर वही डाल दी है बाहे

(२)

निगाहे-साकिये-नामेल्लबाँ^३ ये क्या जाने
कि टूट जाते हैं खुद दिलके साथ पैमाने
मिली जब उनसे नज़र बस रहा था एक जहाँ
हटी निगाह तो चारो तरफ थे वीराने
हयात लगज़िशे-पैहमका^४ नाम है साक़ी
लबोसे जाम लगा भी सकूँ खुदा जाने

^१पथप्रदर्शकके हाथकी खोज पदचिन्ह ^२बरवाद होनेवालाका
^३घर ^४माँगके मार्ग जो साक़ी मेहरबान न हो उसकी निगाह
^५बार-बार भूले करने

वह तक रहे थे, हमी हँसके पी गये आँसू
 वह सुन रहे थे, हमी कह सके न अफसाने
 तबस्सुमोने^१ निखारा है कुछ तो साकीके
 कुछ अहले-दिलके सँवारे हुए है मैखाने
 ये आग और नही दिलकी आग है नादाँ
 चिराग हो कि न हो, जल बुझे परवाने
 फरेबे-साकिये-महफिल^२ न पूछिये 'मज्रह'^३
 शराब एक है बदले हुए है पैमाने

(३)

खत्म शोरे-तूफाँ था दूर थी सियाही भी
 दमके दममे अफमाना थी मेरी तबाही भी
 इलतिफात^४ समझू या बेखो कहीं इसको
 रह गई खलिश^५ बनकर उसकी कमनिगाही भी
 उस नज़रके उठनेमे उस नज़रके झुकनेमें
 नगमए-सहर^६ भी है, आहे-सुब्हगाही^७ भी
 याद कर वो दिन जिस दिन तेरी सख्तगीरीपर^८
 अशक भरके उट्ठी थी मेरी बेगुनाही भी
 पस्तिये-जमीसे^९ है रफअते-फलक^{१०} कायम
 मेरी खस्ताहालीसे^{११} तेरी कजकुलाही^{१२} भी
 शमअ भी उजाला भी मैं ही अपनी महफिलका
 मैं ही अपनी मजिलका राहबर भी राही भी

^१मुस्कराहटोने ^२दिलवालो ^३महफिलके ^४माकीका धोखा
^५प्रेम ^६खटक ^७कम देखना, कम ध्यान देकर देखना ^८प्रभात-
 गान ^९प्रात कालकी आह ^{१०}कठोरता ^{११}धरतीकी निचाई ^{१२}आकाशकी
 ऊँचाई ^{१३}दुर्दशा ^{१४}वादशाही, बाँकपन

गुम्बदोसे पलटी है अपनी ही सदा 'मजरूह'
मसजिदोमे की मैंने जाके दादखाही' भी

(४)

मुझे सल्ल^१ हो गई मजिले वो हवाके रुख भी बदल गये
तेरा हाथ हाथमे आ गया कि चिराग राहमे जल गये
वो लजाये मेरे सवालपर कि उठा सके न भुकाके सर
उडी जुल्फ चेहरे पे इस तरह कि शबोके राज^२ मचल गये
वही बात जो वो न कह सके मेरे शेर-ओ-नगमेमे^३ आ गई
वही लब न मैं जिन्हे छू सका कदहे-शराबमे^४ ढल गये
तुझे चश्मे-मस्त पता भी है कि शबाब^५ गर्मिये-बज्म^६ ह
तुझे चश्मे-मस्त खबर भी है कि सब आबगीने पिघल गये
उन्हे कबके रास भी आ चुके तेरी बज्मे-नाज्जके हादिसे^७
अब उठे कि तेरी नज़र फिरे जो गिरे थे गिरके सँभल गये
मेरे काम आ गई आखिरश^८ यही काविशे^९ यही गर्दिशे^{१०}
बढी इस कदर मेरी मजिले कि कदमके खार^{११} निकल गये

^१अपनी इच्छा पूर्तिकी कामना ^२आसान ^३रातोके भेद ^४काविता
और गीतो ^५शराबके बडे प्याले ^६मदभरी आँखो ^७जवानी ^८महफिलकी
गर्मी ^९बुलबुले ^{१०}मुआफिक ^{११}प्रेमकी महफिलकी घटनाएँ ^{१२}अन्तमे
^{१३}प्रयत्न ^{१४}गर्दिश, घटनाचक्र ^{१५}काँटे

‘आरिफ’ अब्दुलमतीन—

गज़ल

तेरे बाज़ुओका सहारा तो ले लूँ मगर उनमे भी रच गई है थकन
मैं सहारासे बचकर चमनमे तो आऊँ पै सहारासे कुछ कम नहीं यह चमन
मेरी जीस्तकी^१ राह तारीक^२ थी चाँद बनकर तुम आये तो रोशन हुई
राह ये आज फिर तीरा-ओ-तार^३ है गालिबन^४ चाँदको लग गया है गहन^५
हर एक सिम्त नागिनकी सूरत लपकती हुई तीरगीसे^६ हरासाँ^७ न हो
अजब क्या कि लौ दे उठे मेरे लम्से-फरोजाँसे^८ तेरा सुलगता बदन
ये अश्कोसे भीगी हुई मुस्कराहट मुरव्वतका एजाज़^९ है वरना हम
गमोकी हवाओमे उडता हुआ देखकर आ रहे हैं कोई पंरहन^{१०}
फिराके लब-ओ-जुल्फपर मुनहसर^{११} कम ही पाई है अहले-वफाकी^{१२} तडप
तुम आगोशके^{१३} तग हलकमे^{१४} हो फिर भी हर लमहा अफजू^{१५} है दिलकी जलन
मेरे प्यारको एक नये मोडपर देखकर यूँ मेरी जाँ तअज्जुब न कर
बदलते रहे हैं बदलते रहेगे जमानेके हमराह दिलके चलन

‘जीवनकी’^१ अँधेरी^२ अन्धकारपूर्ण^३ सम्भवतः^४ ग्रहण^५ अधियारी^६
‘निराश, परेशान’^७ ज्योतिर्मय स्पर्श^८ चमत्कार^९ ‘पोशाक’^{१०} ‘होठो और
काकूलोके वियोगपर निर्भर’^{११} ‘वफा करनेवालो, प्रेमियो’^{१२} ‘गोद, बाहुपाश’^{१३}
‘घेरे’^{१४} ‘बढ़ रही है’^{१५}

बाकी मिट्टीकी—

गजत्त

पछी चहके फूल खिले बिछडे साथी आन मिले
मै कहता हूँ बात गई तुम कहते हो ज़ख्म सिले
बेदारीका नाम फिराक^१ आँख लगी ओर आप मिले
बास भी हम तक आ न सकी फूल कुछ इतनी दूर खिले
कदम-कदमपर पहरा था मिलनेवाले फिर भी मिले
कितने तूफ़ाँ आये मगर अपनी जगहसे हम न हिले
जिनपर नाज़ किया 'बाकी' ऐसे भी कुछ दाग मिले

हफीज जालन्धरी—

गजत्त

अगर मौज है बीच धारे चला चल वगर न^३ किनारे किनारे चला चल
इसी चालसे मेरे प्यारे चला चल गुज़रती है जैसे गुज़ारे चला चल
तेरे साथ बहुरूपिये चल रहे हैं नयेसे नया रूप धारे चला चल
यहाँ तो बहरहाल झुकना पड़ेगा नहीं तो किसी और द्वारे चला चल
खुदाको न तकलीफ दे डूबनेकी किसी नाखुदाके^४ सहारे चला चल
ये ऊपरका तबका खला^५ है खला है हवाओ-हवसके^६ गुबारे चला चल

^१जागरणका ^२वियोग ^३नहीं तो, वरना ^४मल्लाह, नाविक ^५वर्ग
^६शून्य ^७माया और लोभ

मुर्दन अहमन 'जज्बी'—

गज़न

(१)

मरनेकी दुआएँ क्यो माँगूँ, जीनेकी तमन्ना कौन करे
यह दुनिया हो या वह दुनिया, अब ख्वाहिशे-दुनिया कौन करे
जब कइतो साबित-ओ-मालिम थी, साहिलकी तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता कइतीपर साहिलकी तमन्ना कौन करे
जो आग लगाई थी तुमने उसको तो बुझाया अइकोने^१
जो अइकोने भडकाई है, उम आगको ठंडा कौन करे
दुनिया ने हमें छोड़ा 'जज्बी' हम छोड़ न दे क्यो दुनियाको
दुनियाको समझकर बैठे हैं अब दुनिया दुनिया कौन करे

(२)

हम दह्लके इस वीगनेमे, जो कुछ भी नजारा करते हैं
अइकोकी जबांमे कहते हैं, आहोमे इशारा करते हैं
क्या तुझको पता, क्या तुझको खबर, दिन रात खयालोमे अपने
ए काकुले-जीती^२ हम तुझको दिन रात सँवारा करते हैं
ए मौजे-बला^३ उनको भी ज़रा दो चार थपेड़े हलकेसे
कुछ लोग अभी तक साहिलसे तूफाँका नजारा करते हैं
क्या जानिये कब यह पाप कटे, क्या जानिये कब वह दिन आये
जिस दिनके लिये हम ए 'जज्बी' क्या कुछ न गवारा करते हैं

^१नौका टूटी न थी किनारे ^२टूटी ^३आँसुओ ^४ससार ^५युगकी
काकुल ^६भयानक लहर

श्रीमती 'अदा' जाफरी—

ग़ज़ल

नाज़ उठे कब दीदएतरके हंस-हँसकर खाये ह चरके
किसके सर इलजाम धरोगे बेपरवा अन्दाजे-नज़रके
दिन भी रास आएँ कि न आएँ राते तो काटी मर-मरके
आँख उठी थी बेगानासी खाये हे दिलने ये भी चरके
रातने तुमको लूटा होगा हमने धोखे खाथ सहरके
किसको खबर थी हँसते-हँसते राज खलेंगे दीद-ए-तरके
थक गई आँखे मजिल तकते पाँव डुर हे मन-मन भरके
टूटी माला कोन समेटे बिखरे सपने जीवन भरके
मोती बिखरे सपने टूटे क्या-क्या है एहमान सहरके
आज दिवाने खुल खेलेगे उमरे बीती आहे भरके

‘खुमार’ वागवकवी

ग़ज़ल

जब्तकी आब-ओ-ताबसे इश्कको जगमगाय जा
हाँ य़ुँही भूम-भूमकर चोट पे चोट खाय जा
हुस्तको छेड-छेडकर इश्कको आजमाय जा
आग लगा-लगाके खुद आग लगी बुझाय जा

‘महत्तशीलता

जुर्म पे जुर्म कर यूँही अश्क यूँही बहाय जा
 रहमते-किरदिगारको^१ हों यूँही गुदगुदाय जा
 चोट पे चोट खाय जा, जल्म पे जल्म खाय जा
 उसकी निगाहे-नाज़मे खुदको हसी बनाय जा
 राहे-वफासे मुह न मोड़, आस न तोड़ जी न छोड़
 वह यूँही जुल्म टाये जाय, तू यूँही मुस्कराय जा
 देख ठहर न बेखबर, मजिले-इश्क दूर है
 खुदको भी पीछे छोड़ता आगे कदम बढ़ाय जा
 मौत भी गुनगुनाय जाय तेरी नवाके^२ माथ-साथ
 साज़े-नफस पे इस तरह नगमए-ज़ीस्त^३ गाय जा
 नाज़मे और नियाज़मे चलती रहे इसी तरह
 तुझको रुलाये जाय वह ओर तू मुस्कराय जा
 बादए-आतशी^४ न छोड़ खन्दए-दिलनशी^५ न छोड़
 गमकदए-हयातमे गमकी हँसी उडाय जाय
 दर्द उठे तो मुस्करा, चोट लगे तो दे दुआ
 हों इसी आन-बानसे उसकी जफा प छाय जा
 तेरे लिये 'खुमार' ने जान भी दे दी बेवफा
 तू भी 'खुमार' के लिये अश्क ही दो बहाय जा

^१ईश्वरकी दया लय ^२सोमके बाजे 'जीवन-गीत' "रूप
 'रूपकी पूजा, या प्रेम ^३शराब (आगकी शराब, या आगसी शराब)
 'दिलमे बैठनेवाली हँसी ^४दुखपूर्ण जीवन

‘फिराक’ गोरखपुरी—

गज़ल

जमी बदली, फलक^१ बदला मज्जाके-जिन्दगी^२ बदला
तमद्दुनके^३ कदीम आहग^४ बदले आदमी बदला
खुदा-ओ-अहमन^५ बदले निजामे-जिन्दगी बदला
शऊरे-खैर-ओ-शर^६ बदले मज्जाके-काफिरी^७ बदला
नये इसानका जब दौरे-खुद ना-आगही^८ बदला
रमूजे बेखुदी^९ बदले तक्काजाए खुदी^{१०} बदला
बदलते जा रहे हैं हम भी दुनियाको बदलनेमें
नही बदली अभी दुनिया तो दुनियाको अभी बदला
नई मजिलके मीरे-कारवाँ भी और होते हैं
पुराने खिज्मे^{११}-रह बदले वो तर्जे-रहबरी^{१२} बदला
कभी सोचा भी है इस नज्मे-आलमके खुदावन्दो
तुम्हारा हश्म क्या होगा जो ये आलम कभी बदला

‘आस्मान’ जीवनकी रुचि ‘सस्कृति’ पुराने तरीके और
पुरानी आवाज़ें ‘शैतान’ नैकी बदी, पाप पुण्यकी चेतना
‘काफिरी’—काफिर शब्द बहुत बदनाम है शाब्दिक अर्थ है उलटी
राह चलनेवाला फिर कई और अर्थ और इशारे इसमें सम्मिलित
हो गये हैं। खूबसूरत, आकर्षक या मायाकी जगमगाहटसे आकर्षित
होनेवाला रसीला, रसका प्रेमी, मज्जाक=रुचि, परख सस्कार ‘आत्म-
ज्ञानरहित युग’ आत्मविस्मृति या तल्लीनताके भेद ‘आत्म-ज्ञानकी
माँग’ ‘पथप्रदर्शक’ ‘पथप्रदर्शनका ढग

इधर पिछलेसे इस नज्मे-कुहनपर' रात भारी है
 उधर बेदारिये-जमहूरका अन्दाज भी बदला
 सलामत सोजे-पिनहाँ^१ बज्मे-गोती^२ अब चरागाँ है
 इसी इक शमअपर हमगे जहाने-तीरगी^३ बदला
 नये मन्सूर ह सद्दियो पुराने शेख-ओ-काजी है
 न फतवे कुफ्रके बदले न उज्जे-दार ही बदला
 ब-फैजे-आदमे-खाकी यह दुनिया आज दुनिया है
 इसी जरने दौरे मेह-ओ-माह-ओ-मुतशरी बदला
 बताए तो बताए इसको तेरी शोखिए पिनहाँ
 तेरी चश्मे-तवज्जह है कि तर्जे-बेखी^४ बदला
 सितारे जागते हैं रात लट छटकाये सोती है
 दबे पाऊँ किसीने आके ख्वाबे-जिन्दगी बदला
 फिराक अहले-सलफकी^५ हमनवाई^६ ता-बकै आखिर
 वह बज्मे-जिन्दगी बदली वह तर्जे शायरी बदला

^१पुरानी व्यवस्था ^२जनजागृति आन्तरिक जलन बनी रहे ^३ससारकी मभा तिमिरका समाग ^४मसूरपर 'अह' ब्रह्म' कहनेपर कुफ्र (नास्तिकता) का फतवा लगाया गया था। आजके मसूर अर्थात् जनसाधारण अपनेको सर्वशक्तिमान बना रह ह। पुराने खयालवाले शासक इसे नास्तिकता बताते हैं और नए बागियोंको पुराने कानूनके अनुसार फाँसी देना चाहते हैं ^५मिट्टीसे बने आदमीके पुण्यप्रतापसे यह दुनिया जगमगा उठी है और सूर्य चाँद और नक्षत्रोंकी गति इसी मिट्टीके कण (मनुष्य)ने बदल दी है ^६तेरी आन्तरिक चंचलता ही बना सकती है कि यह तेरी प्रेमदृष्टि है या तेरी उदामीनताने बहुरूप धारण किया है ^७पूर्वजोके स्वरमे स्वर मिलाना

स्व० मीराजी—

गीत

अनजाने नगर मनमाने थे, मनमाने नगर अनजाने रहे

अपनी बातोंकी मस्तीमें
सुनते रहे दिलकी बस्तीमें
वही गीत जो कुछ मनमाने रहे
वही राग जो सुखके बहाने रहे

राते बीती दिन बीत गये
राते भी नई फिर दिन भी नये
मृख मन ऐसा हटीला ह
इसे याद वो रग पुराने रहे

अनहोनीका जिसे ध्यान रहा
होनीने उसे चुपकेसे कहा
न वह बाते रही न जमाने रहे
जो रहे भी तो बाकी फसाने रहे

अब गीतमें रस टपकाते हैं
यो दिलकी आग बुझाते हैं

अब सबके लिये वही बावले हैं, जो बीते समय में सियाने रह

मुनीर नियाजी—

दो गीत

(१)

बिछुडके जानेवाले लोगो !

जब भी रातको बादल बरसे हमको ध्यानमे लाकर इतना
रोओ कि आंखोका काजल बहकर सुन्दर गाल भिगो दे

बिछुडके जानेवाले लोगो !!

जब भी रातको बिजली चमके चाहतके सगीत सुनाकर हमे बुलाओ
हम भी हवाके झोकोमे हर उजडे नगरमे जाते हैं
और गीत पुराने गाते हैं

(२)

किस-किससे हम प्रीत निभाएँ कौनसी मूरत मनमे बिठाएँ
साँझ सवेरे किसको ढँढने कुजगलियोमे जाएँ
किससे प्रीत निभाएँ

नित्य नई एक सुन्दर नारी हृदय बीच समाये
जिस नारीको मे चाहूँ वह दूर खडी शर्माए
ऐसे भेद समझ ना आएँ

लो फिर साँझ सुहानी आई ध्यानमे लाखो बाते लाई
सूने घरमे सुन्दरियोने नयन जोत जलाई
किस राधा सग राम रचाएँ

साहिर लुधियानवी—

गीत

रातके राही थक मत जाना सुबहकी मजिल दूर नहीं
धरतीके फँले आँगनमे
पल दो पल है रातका डेरा
जुल्मका सीना चीरके देखो
भाँक रहा है नया सवेरा

ढलता दिन मजबूर सही, चढता सूरज मजबूर नहीं
रातके राही थक मत जाना सुबहकी मजिल दूर नहीं
सदियों तक चुप रहनेवाले
अब अपना हक लेके रहेंगे
जो करना है खुलके करेंगे
जो कहना है साफ कहेंगे

जीते जी घुट-घुटके मरना, इस जगका दस्तूर नहीं
रातके राही थक मत जाना, सुबहकी मजिल दूर नहीं
टूटेगी बोझिल जजीरे
जागेगी सोई तकदीरे
लूट पे कबतक पहरा देंगी
जग' लगी खूनी शमशीरे

रह नहीं सकता इस दुनियामे जो सबको मजूर नहीं
रातके राही थक मत जाना सुबहकी मजिल दूर नहीं

हफीज जालन्धरी—

प्रीतका गीत

(१)

अपने मनमे प्रीत
बसा ले अपने मनमे प्रीत
मन मन्दिरमे प्रीत बसाले ओ मूरख ओ भोले भाले
दिलकी दुनिया कर ले रोशन अपने घरमे जोत जगा ले
प्रीत है तेरी रीत पुरानी भूल गया ओ भारतवाले
भूल गया ओ भारतवाले प्रीत है तेरी रीत
बसाले अपने मनमे प्रीत

(२)

अपने मनमे प्रीत
बसाले अपने मनमे प्रीत
क्रोध कपटका उतरा डेरा छाया चारो खूँट अँधेरा
शख बरहमन दोनो रहजन^१ एकसे बढकर एक लुटेरा
जाहिरदारोकी सगतमे कोई नही है सगी तेरा
कोई नही है सगी तेरा मन है तेरा मीत
बसाले अपने मनमे प्रीत

(३)

अपने मनमे प्रीत

बसाले अपने मनमे प्रीत

भारत माता है दुखियारी दुखियारे हैं सब नरनारी
तू ही उठा ले सुन्दर मुरली तू ही बन जा श्याम मुरारी
तू जागे तो दुनिया जागे जाग उठे सब प्रेम पुजारी
जाग उठे सब प्रेम पुजारी गाएँ तेरे गीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

(४)

अपने मनमे प्रीत

बसाले अपने मनमे प्रीत

नफरत एक आजार है प्यारे दुखका दारू प्यार है प्यारे
आजा असली रूपमे आजा तू ही प्रेम अवतार है प्यारे
यह हारा तो सब कुछ हारा मनके हारे हार है प्यारे
मनके हारे हार है प्यारे मनके जीते जीत
बसाले अपने मनमे प्रीत

(५)

अपने मनमे प्रीत

बसाले अपने मनमे प्रीत

देख बड़ोकी रीत न जाए सर जाए पर मीत न जाए
मैं डरता हूँ कोई तेरी जीती बाज़ी जीत न जाए
जो करना है जल्दी करले थोडा वक्त है बीत न जाए
थोडा वक्त है बीत न जाए वक्त न जाए बीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

‘तनवीर’ नकवी—

गीत

समझ न आए बात
टप टप बूँदें टपक रही हैं
या रोती है रात
समझ न आए बात
टिम टिम जलमे टपके, नाचें
यूँ जैसे जल परियाँ
ऐसे, जैसे छूट रही हैं
पानीकी फुलझडियाँ
किस भूमरके मोती हैं ये
किस मालाकी लडियाँ
उनको गाता सावन बोलूँ
या रोती बरसात
समझ न आए बात
किसने जानी
उन आँखोकी
बे बोलोकी बातें
सोचके आए
जो—सब भूले
उनकी अनोखी घातें
उनसे पलमे
हो जाती हैं
कुछ जीते कुछ माते

नई चेतना

हिन्दुस्तानकी नई चेतना बगावतके काल, सन १९४७ के हत्याकांड या भूट्टी आजादीके मातम और हाय-हाय तक सीमित नहीं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवनके अतगिनत पहलू हमारी युगयुगान्तरकी बदलती हुई मस्कृति और प्रार्चानकालसे आज तक मनुष्य जातिकी संस्कृति ओर उस इतिहासके मर्म और सन्देश इन सबको आजका प्रगतिशील साहित्य बानी देता है। इन कविताओमें उर्दूके कवि प्रगतिवादकी अनेक राग-रागिनियोंको छेड़ते हुए नजर आएंगे। विषय ओर शैली ओर काव्य-रचनाकी टेकनीककी एकसे एक मिसाल इन कविताओमें मिलेगी। उर्दू कविता अपनी पृष्ठभूमिकी पूरी चेतना रखती हुई, अपनी परम्पराओ ओर रूढ़ियोंसे पूरा-पूरा लाभ उठाती हुई, सम्पूर्ण भारतीय साहित्यके स्वरोंसे गुंजित होती हुई आज मदियाके वन्दन तोड़ रही है। उसमें नई खनक, नई झुंकारे, नए चढ़ाव उतार, नई लय, नए ताल मम, नई आँच, नई गर्मियाँ, नई ताजगी और नई जिन्दगी नजर आती हैं। शीर्षको और विषयोका बाहुल्य ओर उनके प्रकार देखनेकी चीजे ह। आज उर्दू कविता पर नई बहारें फट पड़ी हैं, नई जवानियाँ अपनी उठान दिखा रही हैं, कविताकी नई रूपरेखाएँ चमक उठी हैं। आवाज़ें नए साँचोंमें ढाली जा रही हैं, खयालातकी नई दुनियाके दरवाजे खुल रहे हैं, सामूहिक जीवनको नया आत्मज्ञान मिल रहा है। आज उर्दू शायरी अपनी आवाजे वर्तमान विश्वकाव्यकी आवाजोंसे मिला रही है। नई तरकीबें ढाली जा रही हैं। पुराने शब्दोंके नए प्रयोग हो रहे हैं। भाषामें नए संकेत पैदा हो

रहे ह। काव्यचेतनामें नई परछाइयाँ और नई रोजनियाँ चलती-फिरती हुई नजर आ रही ह। विज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति, तमाम कलाएँ, दर्शन, युगआत्मा सबके सब आजकी उर्द कवितामें उजागर हो रहे हैं। इन कविताओंमें भाव, रस, मगीत, आशा-निराशा, करुणा, मनोविनोद, दुख-सुख, नई आकाशाओ, नए जीवन स्वप्न, यथाय और आदर्श, नई तहजीब मिलकर नए मगीत पदा कर रह हैं। इतने रगारग भाव न प्राचीन साहित्यमें मिलते ह न शायद भारतकी दूसरी भाषाओंके समकालीन साहित्यमें। सबसे बड़ी सफलता प्रगतिशील उर्द कवियाँको इस बातमें हुई ह कि उनका अधिकांश रचनाएँ आर उनकी गम्भीरमें गम्भीर वाणियाँ उन लोगोंकी समझमें भी आ जाता ह जिन्होन उर्द नहीं पड़ी। खड़ी बोलीके तमाम पहलुओ आर उसकी समस्त सम्भावनाओपर आजके उर्द कवियाँका असाधारण अधिकार प्राप्त ह। हमारे राष्ट्रीय जीवनके ऊँचे ऊँचे काम आर विभाग जेमें राजनीति, शासन, विश्वविद्यालयो आर हमारे शिक्षित कमक्षत्रोका स्तर जितना ऊँचा है ओर वातावरण जितना गम्भीर ह उतना ही ऊँचा स्तर आर उतना ही गम्भीर वातावरण इन कविताओंमें मिलगा। ये कविताएँ हमारे राष्ट्रीय जीवनको मनो-रजन भी देगी और उस जीवनको शिक्षित आर मुसकृत बनानेका साधन और माध्यम भी साबित होगी। आजकी सफल उर्द कविता हमारे समाजके लिये एक बड़ा विश्वविद्यालय बन गई ह। राष्ट्रीय आत्माका पूरा चमत्कार इन कविताओंमें नजर आता ह। ये कविताएँ नए भारतके सांस्कृतिक जीवनको नई चेतना देती हैं, नए मूल्यमंत्र देती हैं ओर उसे नए ढंगसे सजीव आर क्रान्तिआत्मक बनाती हैं।

वर्तमान युगमें इतिहासकी प्रगति और समयका वेग बहुत तीव्र हो चुका है। किसी युग ओर किसी देशका साहित्य उस युग और उस देशकी वर्तमान चेतनाका दर्पण होता है। आजका प्रगतिशील उर्द साहित्य इस युगकी ऐतिहासिक प्रेरणाओंको ग्रहण कर चुका है ओर इन कविताओंमें

चेतनाकी जो तीव्रता और वेग या तेजी या स्फूर्ति हमें मिलती है वह ध्यान देने योग्य चीज़ है। भारतके उच्चसे उच्च शिक्षित समाजकी आत्मा और उसकी धारणाएँ इन कविताओंमें हमें मिलती हैं। मरते हुए भारतके अनेक चित्र दिखाते हुए ये कविताएँ तेजीसे नया जन्म लेते हुए भारतकी ओर बढ़ रही हैं। आजकी उर्द कविता भारतके दिल व दिमाग-का प्रतिनिधित्व कर रही है। वह हमारे ऊँचेसे ऊँच विचारकोकी सह-योगिनी बन गई है और हमारे देशके जनसाधारणकी ही नहीं बल्कि शिक्षितोंकी शिक्षक बन गई है। इसके साथ-साथ हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि पाठकोंका भी कुछ कर्तव्य है। ऊँचा मनोरंजन और ऊँची शिक्षा मात्र अवश्य हैं लेकिन कोई छद्मतर नहीं है इसलिये हर पाठकको निजी रूपसे इन कविताओंमें डूबना पड़ेगा और जहाँ हमें खेलके अवसर भी इन कविताओंमें आएँ उस हमें खेलके पीछे जीवनकी जो आलोचना है उसे समझना पड़ेगा और कलाके रहस्योंको ब्रूमना पड़ेगा।

सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
१ 'जोश' मलीहाबादी—		७ स्वामी मारहरवी—	
आशाका राग	१०७	क्या खूब ये अजाम है	१८८
धन राजाका	१२७	८ 'किराक' गोरखपुरी—	
२ 'शाद' आरिफी—		बन्देमातरम्	१५०
मास ओर बहू	१३३	माज्जी परस्त	१५६
बेटेकी शादी	१३५	नई चेतना	१६४
३ अख्तरुल ईमान—		काग्रेस, मुस्लिम लीग	१६६
पस मजर	१३८	९ अली सरदार जाफरी—	
अनजान	१३९	तुम्हारी आँखे	१७१
जब और अब	१४०	१० मखमूर जालन्धरी—	
अजनबी	१४१	चेमीगोइयाँ	१७३
अह्द-वफा	१४२	गुजिया पनवाडिन	१७८
सवालिया निशान	१४२	११ नरेश कुमार 'शाद'—	
यो न कहो	१४३	चरागाँ	१८३
४ मुहम्मद सफदर—		१२ कतील शिफाई—	
एक लमहा	१४४	ताजिरोके देशमे	१८५
५ 'अर्श' मलसियानी—		१३ अब्दुलमजीद भट्टी—	
एशियाको छोड दो	१४५	परवाज	१८७
६ श्रीमती विलकीस जमाल—		चोर	१९०
दरियाके किनारे	१४७		

	पृष्ठ		पृष्ठ
१४ इब्ने इन्शा—		२२ मसऊद हुसैन—	
सराय १०१		गुलामोका नाच २१२	
१५ श्रीमती अदा जाफरी—		२३ अहमद नदीम कासिमो—	
ये मेरे दिलको १०३		थपकी २१४	
१६ फैज अहमद “फैज”—		२४ ‘तेरा’ इलाहाबादी—	
मुझसे पहलीसी मुहब्बत १०५		रात मुनसान है २१५	
चन्द रोज और मेरी		२५ तालिब बागपती—	
जान १६६		दहकानी लडकी २१८	
हल्के भोके १६७		२६ शेर अफजल जाफरी—	
१७ अख्तर उरैनवी—		हीरके देसमे २१९	
कोयल १९८		२७ मजीद अहमद—	
१८ मुईन अहसन ‘जङ्गी’—		काँटे कलियाँ २२१	
फिनरत एक मुफ-		२८ जानिसार ‘अख्तर’—	
लिसकी नजरमे २०२		हचकोले २२२	
मौत २०३		शादीकी सालगिरह २२२	
१९ मखदूम मुहीउद्दीन—		खाके-दिल २२४	
वतनकी आजादी २०४		२९ अनवर जलाल—	
मशरिक २०६		छ कविताएँ २२८	
मौतका गीत २०७		३० मजाज—	
शायर २०८		रात और रेल २२९	
२० ‘राही’ मासूमरजा—		अँधेरी रातका मुसाफिर २३३	
जवान २०९		३१ साहिर लुधियानवी—	
२१ अदम—		तुलूए-इश्तराकियत २३६	
मुहाग २१२		आवाजे-आदम २३७	

	पृष्ठ		पृष्ठ
३२	तख्त-सह-- भूली विमरी गत २३८	३६	मुजफ्फर अली सैयद-- होगी २४७
३३	राजा मेहदी अली खाँ-- टेडी लकीर २४०	३७	कैफी आजमी-- हकीकते २४८
३४	रजी अख्तर शोक-- उनके नाम २४०	३८	सैयद मुत्तलबी फरीदाबादी-- इम सावनमे उम सावनकी याद २५०
३५	'प्याम' फतेहपुरी-- चापदे २४६		वगनी माँ २५२

‘जोश’ मलीहावादी—

आशाका राग

तुझे चाँदकी है अगर लगन, तो सुखीके बदले दुखी न बन
वो छटा गहन, वो छटा गहन, वो छटा गहन, वो छटा गहन
तेरा इससे क्यों है उदाम मन कि तेरे गुलो पै नही फबन
वो खिला चमन, वो खिला चमन, वो खिला चमन, वो खिला चमन
तेरे दिलमे इससे है क्यों घुटन, कि घुटा घुटा सा है फल बन
वो चली पवन, वो चली पवन, वो चली पवन, वो चली पवन
तू है खाक ? छोड़ यह खाकपन, तेरे पाँव चमने जान-मन
वो भुका गगन, वो भुका गगन, वो भुका गगन, वो भुका गगन

धन राजाका जो पाये है तौंडा फक्कीरका

(‘नजीर’ अकबराबादीके रगमे)

(१)

लिक्खा पढ़ा तो खैरसे कुछ भी नही मगर
उलझाके डाल देता है अखबार इधर उधर
जाहिल है और इल्मका रखता है करों-फर^१
रगीन मोटी मोमी किताबे खरोद कर

'शो-केस'मे जमाए है लौंडा फकीरका
 धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
 क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फकीरका

(२)

कुनबेको काट छांटके नातोको तोड़के
 सिर्फ एक जरकी चाहसे रिश्तेको जोड़के
 लुत्फ-ओ-अता-ओ-जूदके बागोको छोड़के
 कुत्तेकी तरह भाईको अपने भैंभोड़के
 माताकी गत बनाए है लौंडा फकीरका
 धन राजाका जो पाये है लौंडा फकीरका
 क्या क्या ठसक दिखाए ह लौंडा फकीरका

(३)

मन उससे यह कहे है कि ऐसा जतन करो
 ले लो जो हाथ आए पर एक पाई भी न दो
 इसका ही यह असर है कि जब चाहे देख लो
 इस कानसे सुने है जो चन्देकी बातको
 उस कानसे उड़ाए है लौंडा फकीरका
 धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
 क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फकीरका

(४)

मैदानमें वो ठहरेंगे जो सूर बीर है
 वो क्या धनी बनेंगे जो दिलके फकीर है

इस जगमे पोतडोके^१ जो यारो अमीर है
गम्भीरता लिये हुए जिनके खमीर^२ है
मुफ्त उनको धज उडाए है लौडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

(५)

बातोमे है मिठास तो लहजेमे प्यार है
गोया बडा रफीक, बडा गमगुसार^३ है
जब तक कि खैरियत है बडा यारगार है
पर जब यह देखे है कि मुसीबतमे यार है
यारीसे हाथ उठाए है लौडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

(६)

हर रात मनचलोको घर अपने बुला बुला
हँस हँसके बार बार और उनको हँसा हँसा
धन सबका ऐठ लेनेको दारू पिला पिला
ताशोको फेट फेटके गर्दन घुमा घुमा
पहरो जुआ खिलाए है लौडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

^१जो बडे घरानोमे पैदा होते है, पुश्तैनी अमीर ^२मिट्टी, हाडमास
^३स्वर, टोन ^४दुख बटानेवाला ^५दोस्त

(७)

कोई कवी हो, या कोई लेखक हो पुस्तकार^१
 पंडित हो कोई या कोई नेता हो नामदार
 विद्वान हो कि हो कोई दानाए-रोजगार^२
 इन सबका नाम सुनते ही भागे हे नाबकार^३
 भड्डोके नाज उठाए है लौंडा फकीरका
 धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
 क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फकीरका

(८)

सिन ढल चुका है इससे बहुत इस्तलाज^४ है
 हर पल दवाएँ कुटती है हर दम इलाज है
 गम है जो जोर कल था वह मफकद आज है
 बस रात भर मसा है तो दिन भर मसाज^५ है
 कुश्ते पै कुश्ते^६ खाए हे लौंडा फकीरका
 धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
 क्या क्या ठसक दिखाए हे लौंडा फकीरका

(९)

बोतलकी आग बर्फसी छातीमे डालकर
 ठिठरी हुई तरगका अडा उबालकर
 कन्टरसे इत्र, जेबसे गोली निकालकर
 रडोको लिटली घोडीके साँचेमे ढालकर
 बेहरफा^७ हिनहिनाए है लौंडा फकीरका

^१पक्का ^२माना हुआ पंडित ^३नालायक ^४धडका ^५नहीं है ^६, ^७मलवाना, इलवाना, मालिश ^८भस्म ^९बेतरह

धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

(१०)

लोगो प मुफ्त रोब जमानेके वास्ते
पुश्तोके घटियापनको छिपानेके वास्ते
यारोको ठाट बाट दिखानेके वास्ते
जरका दिलो पे सिक्का बिठानेके वास्ते
नोटोको खडखडाए है लौडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

(११)

बल्शे जो पान, समझे बहा खून बनके धन
सिगरेट जो दे किमीको तो जल जाय तन बदन
एक बूद मय पिलाए तो पछताए एक मन
पड जाय मेजपोश पे हलकीसी गर शिकन
तो पहरों तिलमिलाए है लौडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौडा फकीरका

(१२)

असली अमीर हूँ ये दिखानेके वास्ते
पुरखोकी गन्दगीको छिपानेके वास्ते
जो बू बसी है उसको दबानेके वास्ते
माता पिताका मेल छुड़ानेके वास्ते
दो दो पहर नहाए है लौडा फकीरका

धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फकीरका

(१३)

बहुरूपिया अनोखा, मदारी ह बेबदल'
हर चन्द नातवाँ है, दिखाता है खुदको यल
पर डाँट दो जो कसके तो गिर जाय मुँहके बल
इसपर भी दोनो मूँछोकी चोचोको देके बल
मुहपर दुमे उठाए ह लौंडा फकीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए ह लौंडा फकीरका

(१४)

जब रागिनी मुने हे तो खिफत भिटानेको
सर बार बार मोडे ह सिगरेट जलानेको
गर्दनको भी हिलाए ह उटल बनानेको
मै राग जानता ह फकत यह जतानेको
रह रहके मुस्कराए ह लौंडा फकीरका
धन राजाका जो पाए ह लौंडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए हे लौंडा फकीरका

(१५)

गर हम कहे कि आज तो राजा हो जमघटा
हो नाच रग, धम धडक्का, अहा अहा

तो एक हीजडा भी न बुलवाए बेहया
पर एक इशारा पाते ही बस कोतवालका
मौ रडियाँ नचाए है लौंडा फकीरका
धन राजाका जो पाए ह लौंडा फकीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फकीरका

‘शाद’ आरिफी—

सास और बहू

उधर मुह फेर लो अन्धे कहारो
बहन, डोलेसे दूल्हनको उतारो
मिलेगा सबको ‘हक’ चीखे न मारो
मैं सदके जाऊँ आँखोपर बिठा लूँ

बलाएँ लेके मोनेसे लगा लूँ
जरा ठहरो गिलौरी तो चबा लूँ
इसी कमरेमे, शमएँ तो जला दो
घुसे आते हैं, बच्चोको हटा दो

‘मेरी गुडिया’ को तकियेसे बिठा दो
गलाफ इस गावपर’ नव्वे रुपैका
बुरा लगता है इस मसनद पे चिपका
किसे आता नही है याद मयका

पतीली यह है, वह लोटा पडा है
अरी फूहड़, ये घरका रंग क्या है ?
बडी दूल्हनसे दो जूते सिवा है
मेरी पैजारसे मोती जडी है

जबों गज भरकी छातीपर पडी है
तेरी खाला, तेरे मुहपर खडी है
मुन् कब तक ये आज्ञादीका दुखडा
दिखाती फिर जमाने भरको मुखडा

मेरा दिल कौन दिन पर्देसे उखडा
नज़र अफ़जा^१ सिनेमा और थियेटर
रिसाले^२ रेडियो फूटा मुकद्दर
तुझे करना भी है महमूदका घर ?

म क्या हँ थी वो जल्लादन मेरी सास
जो पीछे बात । पहले सत्यानास
कभी उतरा हो शायद सरसे खन्नाम
मिठाई हार खुशबू तेरा शौहर

जो लाता है तो शर्माता है घर भर
खुदा बख़्शो पटक देती थी लेकर
कहा क्या ? अब नहीं है वह जमाना
तनज्जुल^३ है तरक्कीका बहाना
खुदाया । नाक और चोटी बचाना

^१जूती ^२मौमी ^३निगाहोको बढ़ानेवाले, आँखोका पानी मारनेवाले
^४पत्रिकाएँ ^५भूत पतन

बेटेकी शादी

छ हजार तखमीना कमसे कम चढावेका
राग ओर क्या लाता जीर-ओ-बम^१ चढावेका
ए शोऐबकी अम्मी कौन गम चढावेका
बाग-ओ-किता आराजी जाके रेह^२ रखता हँ

एहतमामे-शादीमे हम ज़रा जो चूकेगे
सौ बनाएगे बाते, सौ जनमपै थूकेगे
तीर नुक्ताचीनीके वह नही कि ऊकेगे
दोस्तोका यह आलम, दुश्मनोको क्या कोसूँ

सुन रही हो फिर दिलमे रेह^३की सदा गूँजी
लोग सर कटाते हैं, अपनी बातपर क्यों जी ?
“बाग-ओ-किता आराजी” आ पडे तो क्या पूँजी
छ हजार कम क्यों है, लो मैं तुमको समझाऊँ

गुहबचनसे बारह सौ सूदपर मँगा लेंगे
दो हजारसे ऊँचे पासके मिला लेंगे
रग भी रचा लेंगे नाक भी बचा लेंगे
दिल समाजका भर जाय, देखना वो दावत दूँ

^१अनुमानित बजट ^२उतार चढाव ^३ज़मीनका एक टुकड़ा
^४गिरवी, बन्धक विवाहके प्रबन्ध खता करेगे, चूकेगे

रेल्वेसे निबटनेका गम अभीसे क्यो आखिर ?
जो कही सो उडधगी,^१ मैं हयात हूँ आखिर
नौज ! क्या मैं लौडी हूँ, क्यो न राय दूँ आखिर
कलकी बात हे भूमर मेरा रेल्वे ही था क्यो ?

पट्टियो प खिचडी सर ऊपरीसा जचता है
यह खिजाब रहने दो कह रहे थे अच्छा है
कह सकूंगी किस किससे “ए बहन ये नज़ला है”
जानती है “अन्ना बी” कौन सन्की पेदा हूँ

अब उन्हे भी ले दोडी अपनी हम नवाईमे^२
और बात मतलबकी डाल दी खटाईमे
हक नही अधेडोको बज्मे-खुद नुमाईमे^३
बज्मे-खुद नुमाईसे तुम खिचो तो मैं बचलूँ

हाँ तो बँड बाजा भी आचुका, बराती भी
मुसतइद^४ है आतिशबाज़ शेख शब बराती भी
थम गई ‘रकमपेशा’^५ नाचती भी गाती भी
औरतोसे तुम भुगतो मैं सवारियाँ भेजूँ

क्यो भरी चली जाएँ रथ है जेल थोडी है
क्यो ठुंसी चली जाएँ रथ है रेल थोडी है
हाँ लदी चली जाएँ, रथ है खेल थोडी है
“बैठ ए सलीमा बैठ, रो रही है थप्पड दूँ”^६

^१बेतुकी ^२समर्थन आत्मप्रदर्शनकी सभा ^३मुस्तैद, तत्पर
^४नाचनेवाली, वेश्या

घुट गई मेरी बच्ची हट तो जा तेरे बारी
ए बुआ मेरा आँचल ए सखी मेरी सारी
'तूई'^१ और 'बुनत'^२ चुरमुर हो गई खुदा मारी
फोड दू तेरे दीदे, घरनेका बदला दू ?

ठहर यार भडे खा, ये बरात देखेगे
ठाठदार बाजेकी कायनात देखेगे
भाँकते हुए जलवे 'पानसात'^३ देखेगे
मौत आई है साले ? तू ठहर मैं चलता हूँ

मेह चाहिये इतना जो अदा न हो पाए
चाहिये शराफतकी इन्तहा न हो पाए
रोज़ खाना-जगो हो फैसला न हो पाए
वरना सो तलाके^४ हो हाज़रोने-महफिल^५ क्यों

डेढ सौकी 'आमद'मे कब है दमदरूद^६ इतना
'बिल' फलों फलों इतन गुरबचनका सूद इतना
खत्म रेह्लकी मुद्दत सफे हस्त-ओ-बूद^७ इतना
तार तार घर भरका लाओ बेच आता हूँ

^१निछावर, बलि एक कपडा ^२एक कपडा ^३पाँच सात
^४मुसलमानोमे निकाहके समय लडकीकी तरफसे मनाई जानेवाली
रकम, जो यदि पति छोडे तो पत्नीको देता है ^५गृहकलह ^६तलाक
^७मभामे उपस्थित जनो सामर्थ्य, शक्ति ^८जीवन बितानेका खर्च

अखतरुल ईमान---

पस मंज़र

(पृष्ठ-भूमि)

किसकी याद चमक उट्ठी है धुंधले खाके हुए उजागर
यूँ ही चन्द पुरानी कब्रे खोद रहा हूँ चुपका बैठा
कही किसीका मास न हड्डो, कही किसीका रूप न छाया
कुछ कतबों पर धुंधले धुंधले नाम खुदे हैं—मैं जीवन भर
इन कतबों, इन कब्रों की को अपने मनका भेद बताकर
मुस्तकबिल और हालकों छोड़े, दुख सुख सब मैं लिये फिरा हूँ
माज़ीकी^१ घनघोर घटामे चुपका बैठा सोच रहा हूँ
किसकी याद चमक उट्ठी है धुंधले खाके हुए उजागर

बैठा कब्रे खोद रहा हूँ—हकसी बनकर एक एक मूरत
दर्दसा बनकर एक एक साया, जाग रहे हैं—दूर कहीसे
आवाज़ेसी कुछ आती है—“गुज़रे थे एक बार यहीसे”
हैरत बनकर देख रही है, हर जानी पहचानी सूरत
गोया भूट है ये आवाज़े कोई मेल न था इन सबसे
जिनका प्यार किसीके दिलमे अपने घाव छोड़ गया है
जिनका प्यार किसीके दिलसे सारे रिश्ते तोड़ गया है
और वो पागल इन रिश्तोंको बैठा जोड़ रहा है कबसे

मेरी नस नस टूट रही है बोझसे ऐसे दर्दके, जिसको अपनी रूह समझकर अब तक लिये लिये फिरता था हर स
लेकिन आज उड़ी जाती है इस मिट्टीकी सोधी खुशबू
जिसमे आँसू बोये थे मैंने, बैठा सोच रहा हूँ जो हो
इन कतबोकी, इन कब्रोंमे दफन करूँ और आँख बचा लू
इस मज़रकी तारीकीसे जो रह जाए वह अपना लू

अनजान

तुम हो किस बनकी फुलवारी अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन
चलता फिरता आ पहुँचा हूँ, राही हूँ, मतवाला हूँ
इन रगोका जिनसे तुमने अपना रूप सजाया है
इन रगोका जिनसे तुमने अपना खेल रचाया है
इन गीतोका जिनकी धुनपर नाच रहे हैं मेरे प्रान
इन लहरोका जिनकी रौमे डूब गया है मेरा मान
मेरा रोग मिटानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन

मैं हूँ ऐसा राही जिसने देस देसकी आहोको
ले लेकर परवान^१ चढ़ाया और रसीले गीत बुने
चुनते चुनते जगके आँसू अपने दीप बुझा डाले
मैं हूँ वो दीवाना जिसने फूल लुटाए खार^२ चुने

^१दृश्य ^२अन्धकार ^३लहर ^४पालापोसा ^५काँटे

मेरे गीतो और फूलोका रस भी सूख गया था आज
 मेरे दीप अँधेरा बनकर रोक रहे थे मेरे काज
 मिटती जोत जगानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
 मुझसे मेरा भेद न पूछो मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन
 एक घड़ी एक पल भी सुखका अमृत है इस राहीको
 जीवन जिसका बीत गया हो काँटोपर चलते चलते
 सब कुछ पाया प्यारकी ठंडी छाँवमें जो पाई दुनिया
 उसने जिसकी बीन गई हो बरसोंसे जलते जलते
 मेरा दर्द बटानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
 मुझमें मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन

जब और अब

कहाँ तो यह था कि मेरी चाहतमें गुदगुदीसी थी लोरियोंकी
 नई नई कोपलोंकी सुर्खी नए शगूफोंकी ताज़गी थी
 कहाँ तो यह था कि मेरी चाहत थी गीत उठती जवानियोंका
 कहाँ ये दिन हैं कि तेरी आवाज़ बन गई है सदाए-सहरा
 न जाने किस गोशए-ज़मीसे रुकी रुकीसी थमी थमीसी
 घुटी घुटीसी हज़ारों परदोंसे आज छन छनके आ रही है

अजनबी

तू है कच्चा कोपल अब तक जिसके लोचमे प्यार ही प्यार
ओर मैं गर्मी सर्दी चक्खे डालीपर एक तनहा पात
तू सच्चा मोती, मैं हीरा, फिरा जो बरसो हातो हात
तू ऊषाकी पहली किरन है और मैं जैसे भीगी रात
तू तारोके नूरकी धारा मैं गहरा नोला आकाश
मैं हूँ जैसे टूटता नशशा तू है जैसे शाखे-नबात'
तू है एक ऐसी शहनाई जिसकी धुनपर नाचे मोत
तेरी दुनिया जीत ही जीत है मेरी दुनिया, छोड ये बात
तू ह एक पहेली जिसको जो बूझे सो जानसे जाय
तू है ऐसी मिट्टी जिससे लाखों फूल चढे परवान
आ, मे तेरा रंग भी छू दू छोड ये भेद और भावकी बात
मैंने वो सरहद छू ली है जहाँ अमर हो जाएँ प्राण
ए आँखोमे खिलनेवाली जाने कौन कहाँ रह जाय
जीवनकी इस दौडमे पगली हम दोनो है आज अनजान
लेकिन ए सपनोकी दुनिया तू चाहे तो रोग मिटे
मैंने दुनिया देखी है तू मेरी बाते भूट न जान
जीवनकी इस दौडमे नादाँ याद अगर कुछ रहता है
दो आँसू एक दबी हँसी दो रूहोकी पहली पहचान

अह्द-वफ़ा

(यह पुरी रात एक पवित्र की है)

यही शाम तुम जिसके नीचे किसीके लिये चश्मे-नम हो, यहाँ अबसे कुछ साल पहले मुझे एक छोटीसी बच्ची मिली थी जिसे मने आगोशमें लेके पूछा था,—‘बेटी ! यहाँ क्यों खड़ी रो रही हो ?’ मुझे अपने बोसीदा आँचलमे फलोके गहने दिखाकर वो कहने लगी—‘मेरा साथी, उधर’, उसने उँगली उठाकर बताया, ‘उधर उस तरफ ही (जिधर ऊँचे महलोके गुम्बद, मिलोकी सियह चिमनियाँ आसमाँकी तरफ सर उठाए खड़ी हैं) ये कहकर गया है कि मैं सोने चाँद के गहने तेरे वास्ते लेने जाता हूँ राबी !’

सवालिया निशान

दहकान मँवारता है मिट्टी चुन चुनके बिखेरता है दाने और सोचता जा रहा है जीमे फिर आएगी जग आजमाने और दिलको टटोलता है रुककर फिर दूर उफकको देखता है कुछ रगसे तीरगोमे डूबे मजबूर उफकको देखता है

आँखोमे लहूकी बूँद काँपी गिरते ही जमी पै खो गई फिर परवान चढाए थे जो पौदे वह जल गए रात हो गई फिर खाली कई गोशे हो गए हैं तनहा तो न था पै रह गया है करना पडा नीशे-गम गवारा किस किसका न खून बह गया है

‘सजलनेत्र’ ‘गोद’ ‘किसान’ ‘अन्धकार’ ‘क्षितिज’ ‘दुखका डक, काँटा

फिर दूर उफकको देखता है ये खेत ये वुसअते-बयाबाँ
सरसब्ज जमीनके ये फल फूल ये सब्जए-ताजा^१ ये खयाबाँ^२
सब आगमे जल रहे हैं गोया थम थमके पिघल रहे हैं गोया
दहकान सँवारता है मिट्टी रुक रुकके बिखेरता है दाने
और सोचता जा रहा है जीमे फिर आयगी जग आजमाने

यों न कहो

कभी न इसके भाग खुलेंगे प्यासी मिट्टी रहेगी प्यासी
यूँ न कहो मुरझाए पौदे यूँही सदा मुरझाए रहेगे
चलते चलते इस मजिलमे आकर धरती रुक जाएगी
यो न कहो गहनाए सूरज यूँही सदा गहनाए रहेगे
तुम तो शफकके धुलते मिलते रंगोकी एक गुलकारी हो
तुम तो सहरका हलका हलका नूर हो जिससे दुनिया जागे
तुम तो महक हो खिलते फूलकी चढते दिनका उजलापन हो
तुमने तो मुलझाए है आकर जेह्णके^३ कितने उलझे धागे
तुमको हमने अपना कहा है, तुम तो यूँ न कहो जिन्दाके
कभी न भारी कुपल खुलेंगे, कभी न जजोरे टटेंगे

^१जगलका फैलाव ताजीहरियाली, घास पोवे वाटिका चितना
^२कारागार

मुहम्मद सफदर—

एक तमहा

उमडते डोलते बिखरते आँसुओसे कोई क्या कहे

यही है इब्निदामे दिलको बस्तियोंकी दास्ताँ
कभी हजार साल तक

चमकती वुसअतोमे कोई भी सदा

कोई हवाको हलकी गूँज तक नहीं उभरती ह
हर एक ज़र्रा साँस रोके, आरजूमे दुखते होठोमे
सरकते खूनको भी भल जाता है

न जाने फिर कहाँसे—कसे—आइना दर आइना

भ्रमकता—भ्रमभ्रमाती घटियोंका शोर सोई ख्वाहिशोकी आ जगाता है
यही है इब्निदा ।।

ओर इन्तहा—वही खमोश बाम-ओ-दर

वही दबी दबीसा धडकनोकी आहटे

वही दहकती सेजपर अकेली सिलवटोकी मौज मौज टूटती हुई

वही उमडते, डोलते, बिखरते आँसुओके सेहरे—कोई क्या कहे

इन आँसुओसे कोई क्या कहे

‘अर्श’ मलमियानी—

एशियाको छोड़ दो

खून चूसा जान ली अब जिस्म भी खाते हो तुम
ए मियासी करगसो^१। क्यो जुल्म फरमाते हो तुम
एशियाके गममे क्यो दुबले हुए जाते हो तुम
अब बलासे कुछ भी हो तुमने तो घरकी भर लिया
काम अपना कर लिया
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

बनके ताजिर हिंसका दामन बहुत फैला चुके
तेल भी तुम पी चुके ओर कोयला भी खा चुके
कोयला खा खाके हमपर आग भी बरसा चुके
अब तो घरकी राह लो, छोड़ो ये जग-जगररी^३
एशियाकी रहबरी^४
लूटपर बुनियाद है जिनकी वह रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

सादगीका रूप भरनेमे बड़े पुरकार^५ हो
गुमरहोको राहपर लानेके ठीकेदार हो

^१गिद्ध। ^२व्यापारी ^३माल व धनके लिये लडी जानेवाली
लड़ाई ^४नेतृत्व ^५चतुर

बेकसोके गममे मरनेके लिये तैयार हो
 अहले-मशरिकके लिये यह जाँफशानी^१ किस लिये
 सरगरानी^२ किसलिये
 लूटपर बुनियाद हो जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
 एशियाको छोड़ दो

तुमने फैलाया हजारो साल हमदर्दीका दाम^३
 तुमने सदियो तक मचाया शोरे-बहबूदे-अनाम^४
 तुमने करना^५ तक लिये जाहिल गुलामोके सलाम
 अब भी तुम उनकी हिफाजतके^६ लिये मजबूर हो
 किस कदर माजूर^७ हो
 लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
 एशियाको छोड़ दो

रहजनीके^८ आज तक बाकी है ये अन्दाज क्यों
 हर घड़ी ताजा है अब भी रस्मे-हिर्स-ओ-आज^९ क्यों
 कर रहे हो ऐटमी ताकत पे बेजा नाज क्यों
 इन गुनाहोपर है उज्जे-बेगुनाही^{१०} किसलिये
 यह तबाही किसलिये
 लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
 एशियाको छोड़ दो

कोरिया, जापान, इन्डोनेशिया हो या कि स्याम
 फारमूसा मशरिके-वस्ता,^{११} मलाया, वीतनाम

^१जान जोखिम ^२परेशानी ^३जाल ^४जनता ^५युगो ^६रक्षा
^७असमर्थ ^८लूटमार चोरी ^९लोभ-लालच ^{१०}निरपराधी होनेकी सफाई
^{११}मध्यपूर्व

इनमे अब कोई न मानेगा तुम्हे अपना इमाम'
छोडकर भूठी इमामत' काम अपना कीजिये
इनको जीने दीजिये
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड दो
एशियाको छोड दो

श्रीमती त्रिलकीस जमाल—

दरियाके किनारे

पानी बहता चलता है कुछ दुख सहता चलता है
सन्नाटासा कुछ छाया है पानी कुछ मुर्झाया है
लहरे हैं कुछ मँली मली मौजे ह कुछ फैली फैली
तारे भुक भुक पडते हैं पत्ते चुप चुप भडते हैं
अन्नके टुकडे उडते हैं कटते हैं फिर जुडते हैं
तारे भिम भिम होते हैं तायर' चुपके सोते हैं
शाखे सर-ब-गरेबाँ' हैं बिलकुल चुप और हैराँ है
चाँद भी है कुछ खोया सा कुछ जागा कुछ सोया सा
अन्नमे छिप छिप जाता है हर तारेको चमकाता है
कुछ बहका बहका चलता है पानीमे भटकता चलता है
शबनम टप टप रोती है जो आँसू है वह मोती है
जगल चुपका सोता है मज्जरपर सन्नाटा है
हर पत्तेमे खामोशी है हर कोपलमे बेहोशी है
हर ज़र्रा चुप हर कतरा चुप अफलाकका एक एक तारा चुप

'नेता 'नेतृत्व 'पक्षी 'भुकी 'दृश्य

सब गुलहाए रोहों चुप है चम्पाकी सब कलियाँ चुप है
 दरियाकी सब मौजे चुप है बल खाती सब लहरे चुप है
 सोती है गुलोमे चुप, खुशबू झिलमिल होते हैं जूगनू
 चलती है हवा कुछ धोमे धोमे फूलोंकी फिजामे चुपके चुपके
 हलके हलके गीत सुनाती एक एककर एक तान लगाती
 भीगे भीगे फल रसीले चुपके चुपके कुछ हँसतेसे
 यह खामोशी ओर सन्नाटा और यह साकित मौजे-दरिया
 इन आँखोंसे क्या क्या देखूँ इस दुनियाका हर ज़र्रा देखूँ
 पारब ये सब सज़र क्या है सहरा क्या है घर दर क्या है
 खामोशी क्या सन्नाटा क्या है आधी रातका दरिया क्या है
 ये सब क्या है, ये सब क्या है खुद में क्या हूँ, 'जमाला' क्या है

स्वामी मारहरवी—

क्या खूब ये अंजाम है

याँ धर्म है बदले हुए, बदला हुआ धरमात्मा
 परमात्मासे दूर हम, हमसे जुदा परमात्मा
 घरमे गले कटते हुए, लुटती हुई हर आत्मा
 कुचली हुई इन्सानियत तहज़ोबका^१ है खात्मा
 मसारकी यह दुर्दशा होती रहेगी कब तलक
 हर जुल्मकी टहनी य़ुंही फलती रहेगी कब तलक
 इस ऐदमी ससारमे उमड़ा हुआ तफ़ान है
 चलती है काली आँधियाँ मुट्ठीमे सबकी जान है

ईमान है भटका हुआ बहका हुआ इन्सान है
चक्करमे है दैर-ओ-हरम सहमा हुआ भगवान है
कितनी भली थी इब्तिदा,^१ क्या खूब यह अजाम^२ है
धरनीपै रावन-राज है बदनाम लेकिन राम है

मुफलिस बिचारा जर्द-रू,^३ बरबाद भी, पामाल भी
भखा मरे, नगा फिरे, फाकाजदा, कगाल भी
लेकिन तिलाई नाखुदा,^४ महलोमे है खुशहाल भी
दहकाके^५ खूने-गर्मसे घर भर है मालामाल भी
रहबर है मजिलके वही, ससारके है नाखुदा^६
खुशकिस्मतोको देखना, बदकिस्मतोके है खुदा

मुफलिसके दुखिया पेटको बेटीसे मिलतो रोटियाँ
करनी फिरे मजदूरियाँ बे मुंहकी ये बेचारियाँ
मडीमे या नीलाम हो फाकोकी मारी देवियाँ
लानत है ऐसी कौमपर बेचे जो अपनी बीवियाँ
पर्देमे व्याही देख ली, बेपर्दा क्वारी देख ली
दुानयाने अपनी आँखसे बेटीकी क्वारी^७ देख ली

कितनी जमी यह पस्त^८ है याँ आस्माँ अब भी तो है
इस जिन्दगीके दोशपर बारे-गराँ अब भी तो है
वह कारवाँ-रहजन,^९ अमीरे-कारवाँ^{१०} अब भी तो है
कितने बडे बेमेह्ल^{११} है नामेह्लबाँ अब भी तो है

^१प्रारभ अन्त ^२निर्धन ^३पीला मुख ^४पददलित ^५भूखे
^६धनवान, मोनेके मालिक ^७किसान ^८ससारके मालिक, ईश्वर न
होकर भी अपनेको ईश्वर समझनेवाले ^९कुमारी ^{१०}बेइज्जती, अपमान
^{११}नीची कारवाँ ^{१२}लूटनेवाले ^{१३}कारवाँके नेता ^{१४}कृपा न करनेवाले

यूँ आदमी उलझा रहेगा कब तलक तकदीरसे
कब तक यूँही तकदीरको बाँधोगे तुम जजीरसे

आता है यह जोमे कि मैं इस खाकदोंको^१ फूँक दूँ
और इस जमीको फूँक दूँ, इस आस्माँको फूँक दूँ
फिर फूँक दूँ इन रहबरोको कारवाँको फूँक दूँ
और फूँककर जिन-ओ-बशर^२ सारे जहाँको फूँक दूँ
पैदा हो फिर दुनिया नई और फिर नया इन्सान हो
और फिर इन्ही शोलोसे पैदा गर्मिये-ईमान हो

‘फिराक’ गोरखपुरी—

बन्दे मातरम्

[यह कविता व्यग ओर विनोदके लिये लिखी गई है। हिन्दू सस्कृति अपने जमानेमें बहुत ऊँची चीज थी लेकिन निर्दोष तब भी नहीं थी। बहुतसे लोग प्रतिक्रियावादको, ढकोसलोको, हानिकर परम्पराओं और सस्कारोंको पुनर्जीवित करनेके दुराग्रहको हिन्दू सस्कृतिकी सेवा समझते हैं। हिन्दीकी सुन्दर, सुगम ओर स्वाभाविक शैली बहुतमें हिन्दी लेखकोंको नहीं आती। ऐमोंपर व्यग किया गया है। अनेक उच्च-पदाधिकारियोंका मानसिक स्तर और उनकी योग्यता लिखे-पढ़े गँवारोंकीसी है और यही हाल अनेक अध्यापकोंका है। इन सबपर व्यग है। काग्रेसवालों और सेठोंपर भी व्यग है]

^१मिट्टीके ससार

^२जिन्न और मनुष्य

पृष्ठ भूमि

द्रीवाना हुए हैं अहले-वतन माझीके^१ तिनके चुनते हैं
 दफनाए जुगोकी यादमे अब तक बैठे हुए सर धुनते हैं
 कुछ फरजी तानो बानोसे कलचरके सपने बुनते हैं
 और इल्म-ओ-अमलके सदकमे गीताके कसीदे^२ सुनते हैं
 खुद अपनी चिता रोशन करके सब उसमे जलते भुनते हैं
 —बन्दे मातरम्

ये डड कमडल, टट-घट, पोथी-पत्रा, गेरुवा बस्तर
 हमसे सब भूत-प्रेत हैं खुश, हमसे खुश हैं देवता पितर
 दिनकी रामायन पाठ करे रातोको बाँचे सुखसागर
 दिन रात अखड कीर्तन हैं, हरदम तन्तर, जन्तर, मन्तर
 बम महादेव बम बम बम बम, बम महादेव हिन्दू कलचर
 —बन्दे मातरम्

लाखो जुग बीत चुके अब तक, हम सतजुगमे डँड पेलते हैं
 जो नज्र^३ हो चुका दलदलके वह ठेला अब तक ठेलते हैं
 जिस खेलमे जानका जोखिम हैं वो खेल हम अब तक खेलते हैं
 जीवन बदला दुनिया बदली, हम अपनी कदामत^४ भेजते हैं
 औरोने सँभाले काम नए, हम अब तक पापड बेलते हैं
 —बन्दे मातरम्

राष्ट्र भाषा

सब जुमले टेढे मेढे हैं अलफाज^५ भी हैं रोड़े पत्थर
 और इसपर तुरा यह है कि हम 'मीर'-ओ-'गालिब'से हैं बढ़कर

^१अतीत

^२ प्रगसा के गीत

^३भेट

^४पुरानापन

^५शब्द

हम नाक काट ले 'सादी' की हम 'शैक्सपियर' के हैं हमसर^१
 यह अहले-अदब,^२ ये अहले-कलम किस बोलीके हैं छूमतर
 ये 'कौमी जबाँ' के मौजिद^३ हैं साहित्यरत्न, विद्यासागर

—बन्दे मातरम्

सुननेवालोके होश उडे वह पढके मारते अछर हैं
 जो मुँहमे आए बोल जाये, शब्दोके यहाँ दलिद्वर^४ हैं
 इस ऊबड खाबड बोलीमे, वो भक्कड और बवडर हैं
 मतलब ही जडसे उखड जाए वो चलते हुए चलित्तर हैं
 हम 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान' लिख लोढा हैं, पढ पत्थर हैं

—बन्दे मातरम्

प्रोफेसर साहवान

उन पढे लिखोको जमा करो, जो इल्म-ओ-हुनरके अपसर हैं
 जो बहुत बडे आलिम फाजिल,^५ जो बहुत बडे स्कालर^६ हैं
 फिर लाओ ऐसे सपाटोको जो डिप्टी और कलक्टर हैं
 वो क्लर्क और अमले^७ भी आएँ जिनके हाथोमे दफ्तर हैं
 जो सबसे घामड आएँ नजर, बस जान लो वो प्रोफेसर हैं

—बन्दे मातरम्

योरपके तालिब इल्मोसे भी ये बहुत ही कम हैं लिखे पढे
 मशहूर किताबोको पूछो तो नाम न ले पाएँ दसके
 ये धोके हाथ पडे रहते हैं बस मुमर्ताहनीके^८ पीछे

^१बराबर ^२साहित्यकार ^३लेखक ^४आधिकारक ^५अभाव ^६विद्या
 और कला ^७विद्वान ^८पंडित ^९स्टाफ ^{१०}परीक्षा लेनेके लिये,
 परीक्षक बननेको

हो जाएँ किताबे कोसमे उनकी इसी फिरसे हैं दुबले
और अपनी ज़बान-ओ-अदबमे' तो ये सारी उम्र रहे कोरे

—बन्दे मातरम्

दुनियाकी बड़ी तहरीकोसे नावाकिफ हैं बेपरवा हैं
दुनियाके ऊँचे खयालोसे प्रोफेसरजी बेबहरा^१ हैं
दुनियाके फतूने-लतीफासे^२ खीचे हुए साफ किनारा^३ हैं
दुनियाके बलन्द अदबसे भी ये भले लोग बेगाना हैं
दुनियाके बड़े मकासिदको^४ ये साफ दिखाते ठेगा हैं

—बन्दे मातरम्

कुछ तुमको पता भी ह यारो ये प्रोफेसर हैं बड़ी चीज़
ह धन इनका माशाअल्ला^५ हैं अक्ल बहुत इनकी दबीज़^६
कुछ रटे लफ्ज^७ इनके गुलाम, ज़ठी बातें इनकी कनीज़^८
अपने वीरान दिमागोका सूनापन ह इनको अज़ीज़^९
तालीमे-हिन्दको^{१०} बहुत जल्द ले डबेगे ये बदतमीज़

—बन्दे मातरम्

पच्चीस बरससे पड़ा है पाला मुझको इन कुछ मगज़ोसे^{११}
पूछो न टपकती है जो जिहालत इनकी भोड़ी बातोसे
हैरा^{१२} हो जाएँ सवाल इनके अनमिल बेजोड जवाबोसे
खुद मनतिक^{१३} पीट ले मुह अपना इनकी लायानी^{१४} बहसोसे
क्या जानिये कब क्या निकल पड़े इन भानमतीके पिटारोसे

—बन्दे मातरम्

^१भाषा और साहित्य ^२अनभिज्ञ अज्ञानी ^३ललित कलाओ ^४दूर
रहते हैं ^५अपरिचित ^६उद्देश्यो ^७क्या कहना है ^८मोटी ^९शब्द ^{१०}लौड़ी
^{११}प्रिय ^{१२}भारतकी शिक्षा ^{१३}मूर्खों ^{१४}तर्कशास्त्र ^{१५}अर्थहीन

बड़े अपसरान

हम हैं भारी भरकम अपसर तकदीरसे ये रुतबा^१ पाया
तकदीर ही ने फिर लगा दिया मुँहपर छोटेपनका ठप्पा
कानून आईनसे^२ हमको क्या हम पढ़े लिखे जाहिल बाबा
हम 'हाईकोर्ट' के जज ठहरे लेकिन अब तुमसे क्या पर्दा
लाखोंके फंसले करते हैं पाया हूँ दिमाग अठग्रीका^३

—बन्दे मातरम्

आवेका आवा टेढा

प्रोफेसर 'हिन्दीजी' आखिर यह कैसा गडबड भाला है
आई० सी० एस०, आई० ए० एस०, सबका सब गडबड खाता है
अधी नगरी चौपट राजा, यह क्या भगवानकी लीला है
राम राम जपना है प्यारे माल पराया अपना है
गांधी महाराजकी जय बोलो, आवेका आवा टेढा है

—बन्दे मातरम्

अब जिगर थामके बैठो मेरी वारी आई

क्या हमको समझ रक्खा है तुमने हम काँग्रेसिये लीडर है
हो भैंस चरानेकी न लियाकत, पार्लिमेन्टके मेम्बर है
हम नरक बना दे भारतको, यानी हम लोग मिनिस्टर है
मालिक है सफेद-ओ-सियाहके हम, हम हिन्दुस्तानके मुकद्दर है
भारतकी दुखती छातीपर भारीसे भारी पत्थर है

—बन्दे मातरम्

हम गाधियतके नखरे, गाधियतके नाजे-बेजा^१ है
जनताको पयामे-मर्ग^२ है हम, भारतके गलेका फन्दा है
हम हिन्दकी मिटी उमीदे^३ है जम्हूरका^४ खूने-तमन्ना है
है सत्य अहिंसाकी मूरत, क्या तुमको बताएँ हम क्या है
सब लोग हमारी जय बोले, हम राजा है, हम प्रजा है

—बन्दे मातरम्

करते है तरक्की रूस-ओ-चीन तो इसकी हमें क्या परवा है
हम कब सुनते है ये अफवाहे, कुछ होगा, हमको पड़ी क्या है
उन देसोकी खबरोपें यहा मोटे खदरका पर्दा है
मजदूर राज है महापाप यह रामराज ही अच्छा है
गांधी बाबासे गरीबोका हमने जामिन होना सीखा है

—बन्दे मातरम्

है रूस चीन दौलतपै मिटे हम धर्मकी रक्षा करते है
वो भूख इफलास^५ मिटाते है हम रामनाम पर मरते है
अमरीका उनसे डरता है हम अमरीकासे डरते है
इल्जाम हरेक मुसीबतका हम अहले-वतन^६ पर धरते है
कैसा अच्छा बटवारा है हम करते है वो भरते है

—बन्दे मातरम्

खेती स्कूल कारखाने अब इनकी तरक्की कौन करे
ये जिम्मेदारी ओढ तो ली पर माथा पिच्ची कौन करे
जो इतने दिनोसे टेढी है वो किस्मत सीधी कौन करे

^१मृत्युका ^२सन्देश ^३आशाएँ ^४जनता ^५जमानतदार ^६दरिद्रता
*देशवासियो

हम तो जनताकी फिक्र करे पर फिक्र हमारी कौन करे
अच्छा हम बेईमान सही, अब बहसाबहसो^१ कौन करे

—बन्दे मातरम्

ब्रीमारी भूख मुसीबतसे जनता मरती है मरने दो
हम देसके खादिम^२ है हमसे जनता डरती है डरने दो
इलजाम धडाधड जो हमपर जनता धरती है धरने दो
मजदूर किसान राजका दम जनता भरती है भरने दो
अब इन्कलाबकी तैयारी जनता करती है करने दो

—बन्दे मातरम्

जो आग लगाते फिरते हैं वो आग बुझाना क्या जाने
पस्ती है बलन्दी जिनके लिये गिरतोको उठाना क्या जाने
जो जगते सपने देखते हैं मोनोको जगाना क्या जाने
तदबीरसे जिनको नफरत है तकदीर बनाना क्या जाने
जो मौतके हैं मजूरे-नजर वह जान बखाना क्या जाने

—बन्दे मातरम्

हम जब मुहसे कुछ फूटते हैं, खुल जाता है सब भेद भरम
सीनोमे मचाती है हलचल, तकरीर^३ अपनी अगडम बगडम
आँखोसे चुरा ले हम काजल, वो जेलमे सीखे हैं तिकडम
चलते हैं चाल टके गजकी, लेकिन दुनिया है जेरे-कदम^४
हम बाई आँखसे देख ले गर तो हो जाये हर काम पटम^५

—बन्दे मातरम्

^१वादविवाद सेवक प्यारे भाषण कदमके नीचे
^२सत्यानाश

हम भूटे फर्ती मोदीमे अरबो खरबो तक फंक चुके
दुनियामे हुई छीछा लेदर अखबारोमे भी मची ले दे
क्यो माथेपर अपने बल आए क्यो कानपर अपने ज रंगे
कमे यह अवेर हुआ ह इसको अपनी बला जाने
अपने तो पौ बारह ह अब देस रहे या देस मिटे

—बन्दे मातरम्

दुनिया भरको सच्चाईपर दो भूठ हमार भारी हे
दो बडे बोल कम्पुनिस्टोके दिलके लिये जल्मे कागी हे
इस काग्रेस राजकी जानिबसे हम धमकियोके द्योपागी ह
मुत हेदा महाजकी तोडनेकी तरकीबे अपनी जारो हे
हमसे घबराओ हमसे डरो हम राजगोपालाचारी है

—बन्दे मातरम्

दुनिया लाख धरे इलजाम हमको ह अपने काममे काम
दया आता धर्म कर्मका हमने खब उछाला नाम
पेनीस करोड इन्सानोका हमने जीना किया हराम
पाँच बरसके अन्दर अन्दर चारो ओर मचा कोहराम
“रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम”

—बन्दे मातरम्

सेठजी

छोडा भी इन कॅग्रेसियोको अब हमसे पूछो हम क्या हे
हम आठ करोड घरानोकी बरबादीके परवाना हे
पेनीस करोड इन्सानोकी किस्मतका लिये हुए ठीका हे

^१जाली ^२गहरा घाव ^३ओर, तरफ ^४सयुक्त मोर्चा ^५कविता
लिखे जानेके समय भारत सरकारके गृहमंत्री श्री राजगोपालाचारी थे

हम सेठ करोड़ीमल ठहरे हम बिना तिलकके राजा हैं
हम जन गन मन अभिनायक हैं हम भारत भाग्य विधाता हैं

—बन्दे मातरम्

जो गजनी नादिरशाह, हलाक^१ और चंगेजसे^२ भी न हुई
जो अंग्रेजोके खनी हाथोसे भी न हुई थी बरबादी
जो देशकी दुर्गति कर न सके सूखा सलाब महामारी
जो डाकुओ, चोरो, आग लगानेवालोसे भी हो न सकी
जय काग्रेसकी हम सेठोने कर दी है वह हालत भारतकी

—बन्दे मातरम्

ह गरचे यंहीसे पढ़े लिखे, तालीम बहुत मामूली है
हं पेट ठसाठस भरा हुआ सर लेकिन खाली खूली है
ये इत्तम-ओ-लियाकत चीज है क्या, विद्याकिस खेतकी मूली है
ये पढ़ो लिखोकी दुनिया भी किस बल बूते पर फूली है
सब अपने गुलाम हैं दुनिया क्यों यह तलख हकीकत^३ भूली है

—बन्दे मातरम्

गो काग्रेस अपने बसमे हैं पर कुछ लेना देना पड़ता है
कुछ बातचीत ह खुली ढकी कुछ चोरी छिपेका सौदा है
अब किसी तरहसे हमको बराबर करना लेखा ड्योड़ा है
गो दोहरे बही खाते हैं रखे कुछ सूद नफा भी दिखाना है
ले ही मरती है हकूमत कुछ कानून ही ऐसा उलटा है

—बन्दे मातरम्

^{१, २, ३} महमूद गजनवी, नादिरशाह, हलाकू, चंगेज खाँ जो दूसरे देशोपर आक्रमण और लूटमार करनेमे बदनाम हैं "यद्यपि कटु सत्य

माज़ी परस्त

(अतीतका अधपुजारी)

सतजुगकी बात छानने बैठे ह
ढीले तारोको तानने बंठे ह
जर-बल^१ ओर हाथ-बलसे होकर महरूम
पुरखोके गुन बखानने बैठे ह

* * *

बेदारिये-मुब्हकी हवाएँ भी चली
नहजाये-फोह^२ लम्बी राते भी ढली
माज़ी^३ न बिका—रात गई बात गई
सदयोंकी ज़िन्दगीकी कद्रे बदली

* * *

दुनियामे अब इस मरज़के^४ बीमार नही
इस दौरमे^५ सतजुगके परस्तार नही
इस रही मालकी निकासी है मुहाल
बाज़ारमे माज़ीके खरीदार नही

* * *

अन्धी नगरी है और चौपट राजा
लो, दोनो टके सेर है भाजी खाजा

^१धनका बल ^२वचित ^३प्रात ^४जागरण ^५प्राचीन सभ्यता
^६अतीत ^७मूल्य ^८रोग ^९युगमे ^{१०}पुजारी

माझीकी अलाप जेह्लका' साजे-तरब
बेवक्तको रागिनी है बेसुर बाजा

* * *

जहराब' फिजाओम ये फैलाती है
एक लाश जो सादयोसे सडी जाती है
भगवान ये कब कटेगा माझीका कोड
उफ अब तो खयाल हीसे क' आती है

* * *

ढोकर खाकर ये उसपे गिरते ए काश
कफनाई हुई रखी ह माझीकी लाश
गुल करके चिरागे-हालओ-मुस्तकबिलको'
करते हे अँधेरेमे जा माझीको तलाश

* * *

कांधेपे धरे बीते जुगोका ताबूत
किस ओरको जा रहे ह भारतके सपूत
कब ऐसेमे सूझते ह मुस्तकबिल-ओ-हाल'
जब सरपर नाचता है माझीका भूत

* * *

माझीके पुजारी उसे इतना न बढा
मालम ह सब, सबक ये औरोको पटा

'मर्खता खुशीका बाजा जह्ल 'उलटी 'वर्त्तमान
और भविष्य इन रुबाइयोमे हाल शब्दका सब जगह मतलब है वर्त्तमान
युग, भारतका वर्त्तमान 'जनाजा 'भविष्य ओर वर्त्तमान

क्या कम थे साम्राज-ओ-दौलतके जुन^१
सरपर जो तेरे जुनने-माजी भी चढा

* * *

क्या कहिये ऐसे सरफगोके दिलको
जो छुट गई रोते हैं उसी मजिलको
माजी लेते हैं मोल, क्या सौदा है
ये बेचके हाल और मुस्तकबिलको^२

* * *

मुस्तकबिल-ओ-हालका तो सौदा न चुका
ये ऊचा माल तो पटाए न पटा
माजीको बुलाओ यागे माजीको बुलाओ
पीछे भागो, बहाओ उलटी गगा

* * *

पडितजी, शेखजी, महाजन, काजी
अब लडभिडकर हुए हैं इसपर राजी
जनताको लगी हैं रट नई दुनियाकी
मिलकर नारा लगाओ माजी ! माजी !

* * *

रगडेपर चर्ख दे रहा है रगडा
लेकिन ले मोल कौन इनसे भगडा
मुस्तकबिल-ओ-हालसे जो फेरे हुए मुह
माजीसे मांगते हैं रोटी कपडा

* * *

^१पागलपन ^२वर्तमान और भविष्य

काँटेके दहानेसे^१ दहाना फाडो
 तुम गाजी मर्द हो तो चाबुक आडो
 तुम थानके टरें हो जनाबे-माजी
 है हाल सवार तुमपे पुश्तक भाडो

* * *

हर बातपै बेचारे बिगड जाते हैं
 हर बह्समे बेचारे उखड जाते हैं
 मुस्तकबिल-ओ-हालके तकाजे मुनकर
 ये हजरते माजी हैं अकड जाते हैं

* * *

कितने खुश आए कितने राजी आए
 बाशौकत-ओ-शान^२ शेख, काजी आए
 कलचरपै धुओं धार करेगे तकरीर
 जयकार करो, हजरते माजी आए

* * *

कलचरकी अहमियतको^३ समझाते हैं
 क्या फूल हिमाकतके वो बरसाते हैं
 दर्शन हुए जाते हैं अभी भक्तोको
 सोटा लिये वो राजरिशी आते हैं

* * *

भटकाते हैं काँधे अडबडा जाते हैं
 ऐमे मौकोपे हडबडा जाते हैं
 सुलझानेको कहिये कोई उलझी हुई बात
 तो राजरिशीजी गडबडा जाते हैं

* * *

बत्लाह^१ निकालते हैं यो दिलकी भडास
सब राजरिशीसे बाँधे बैठे थे आस
भूखो प्यासोको आज वक्ते-तकरीर^२
वो डाँट पिलाई न रही भूख न प्यास

* * *

कितने ब्रेलाग और कितने अक्खड
ये रूसके नाम हीसे जाते हैं अकड
खा जाते हैं अमरीकाको ये धौसपे धौस
ये हज़रते-माज़ी भी हैं कितने घामड

* * *

कुछ बेहतर हिन्दकी तबीअत न हुई
पंदा कोई उम्मीदकी सूरत न हुई
कलचरकी सूइयाँ लगी बरसो तक
बीमार हयात रू-ब-सेहत^३ न हुई

* * *

सुनते हो, साजे-सरमदी^४ कोई नहीं
बदले न जो ऐसी ज़िन्दगी कोई नहीं
इकदारे - दायमीपै^५ मिटनेवालो
दुनियामे कद्रे-दायमी कोई नहीं

* * *

कुछ लोग मिटे हुए हैं माज़ीके लिये
हैं हिन्दका हाल, आज बिक्रीके लिये

^१सचमुच ^२भाषणके समय ^३रोगी जीवन स्वस्थ न
हुआ ^४सदा ब्रजनेवाला बाजा ^५हमेशा बने रहनेवाले मूल्य

मुस्तकबिलको भी कर रहे हैं ये रेह्ल
अमरीकाके हाथ रूखी सूखीके लिये

* * *

ये नुत्कके^१ नूरबाफ माने जाने
बुनते भी हैं रूपएमे सत्रह आने
भारतका कफन सीते हैं फिर करके दुरुस्त
माज्जीके ये टूटे हुए ताने बाने

* * *

ऊँचा सौदा पटा रहे हैं बौने
पगला रक्खा है माज्जियोकी रौन^२
घातेमे दे दिया है मुस्तकबिलको
और हालको बेचते हैं औने पौने

* * *

दामन माज्जीसे इनका अटका सौ बार
खाया हठधर्मियोका भटका सौ बार
माज्जीके दोश^३ पर गए थे चढ़ने
माज्जीने उठा उठाके पटका सौ बार

* * *

नई चेतना

एक हलक-ए-जजीर^४ तो जजीर नहीं
एक नुक्तए-तस्वीर^५ तो तस्वीर नहीं

^१मुँहके, ज़बानके ^२बुनकर ^३लहर ^४कधे ^५जजीरकी एक कडी
^६चित्रका एक विन्दु

तकदीर तो कौमोकी हुआ करती है
एक फर्दकी^१ किस्मत कोई तकदीर नहीं

ये नालए-गर्मसे^२ उभरते हुए दाग
अगारोकी बरखामे ये खिलते हुए बाग
ये नारए-इन्कलाबके शोलए-तेज^३
तूफानके सीनेमे जलाते हैं चराग

आपसमे नए कौल-ओ-कसम लेते हैं
ससारको पलटाके ही दम लेते हैं
होता है जब इन्कलाब, इन्सानोमे
बाहम^४ नए इन्सान जनम लेते हैं

इस नज्मके बचनेका नहीं कोई उपाय
बैठे हैं मगर चारागर एक आस लगाय
जैसे मरते मरीजके सम्बन्धी
मोचे कि अजब क्या ये कही बच ही जाय

ओ शायरे-खुशनवा^५ हैं तेरी वह ज्ञात
जो सोई हुई जोत जगाए दिन रात
अपनी ही लज्जते-बयाँमे^६ न हो गुम
दम भर न छुटे मन्सबे-नक्कादे-हयात^७

शारयके जब्तसे^८ नहीं तू आगाह
दिलमे किन जलजलोको^९ देता है पनाह

^१व्यक्ति ^२जलती हुई फरियाद, रुदन ^३तेज लपट ^४परस्पर
^५व्यवस्था ^६चिकित्सक ^७मधुर स्वरवाले कवि ^८वर्णनके स्वाद ^९जीवन
आलोचकका पद ^{१०}सहनशीलता ^{११}भूकम्पो

वह बन्द न कर ले जो इसे सीनेमे
आकाशको चीर जाय धरतीकी कराह
तूफानमे दिलकी नाव खेनेवाले
दमपर भी बने तो दम न लेनेवाले
खुलता नही किन वादियोमे' दफन हुए
वो गमके पहाड काट देनेवाले

ये बज्मे-खयाल चूडियाँ बजती हैं
भीगी राते उदासियाँ तजती हैं
दरिया मुखडोके उमडे आते हैं 'फिराक'
आईनए-दिलमे सूरते सजती हैं

मन मोह ले सौ रगसे जीवन सपना
ये वझे-हसी' ये खूबसूरत धोखा
गमखानए-जिन्दगीका' असली नक्शा
जब आँख खुली 'फिराक' देखा न गया

अल्लाह,^१ न अहमन, न देव^२ और जिन्नात^३
अरवाहे-खबीसा^४ न शयातीनकी^५ जात
देवी देवता न कोई भूत और चुडैल
इन्सानका इन्सान है दुश्मन हैहात^६

एक लमहा बका' से भी यहाँ लम्बा है
कौनेनकी^७ जिन्दगी भी एक लमहा है

'घाटियो' ^१कल्पनाकी सभा 'मुन्दर भ्रम' ^२जीवनके दुख-स्थान
'ईश्वर' ^३, 'शैतान, राक्षस, जिन्न' ^४प्रेतात्मा 'शैतानी' ^५अफसोस
'क्षण' ^६'सृष्टि'

कल मने 'फिराक' वक्तके चेहरेको
आईनए-हुस्ने-दोस्तमे' देखा है

कल रात गए फिक्रे-मुखनके^२ हगाम^३
विज्दाने-जमालके' छलकते हुए जाम
वह कश्फ-ओ-करामातका^४ आलम कि 'फिराक'
हर पलपर पड रहे थे सद अक्से-दवाम^५

माका के हाथ से शगूफा छूटा
सर चश्मए-आफताब खुम से फूटा
मैखानए-जिन्दगी मे दौरे-नौ के
सागर खनके खुमारे-माजी टूटा

कुछ रिन्दोको^६ सुन गुनसी मिली है साकी
नवजुगके जनमकी ये घडी है साकी
तखलीकके^७ लमहे^८ थरथराए सरे-जाम^९
यह शाम एक गोद बन रही है साकी

मय खाना नमाजे-शाम^{१०} होती है शुरूअ
शीशोके सरे-शाम सुजूद^{११} और रुकूअ^{१२}
मेह्ले-आफाक सोज^{१३} होता है गुरूब^{१४}
रिन्दाने-सियाहकार^{१५} होते है तुलूअ^{१६}

'प्रेमिकाके सौंदर्य-दर्पण', कविता करते समय, हगाम=समय
'सौंदर्यका विचार' 'भेद खोलने और चमत्कार दिखाने' 'अनन्त
'शराबियो' रचना, निर्माण क्षण 'भरे हुए प्यालेके ऊपर' 'शामकी
नमाज' 'बैठकर सिर झुकाना' 'खडे होकर आधा झुकना' 'दुनियाको
जलानेवाला सूर्य' 'अस्त होता है, डूबता है' 'पापी शराबी' 'उदय

उलभी हुई गुत्थियोंको बल देते हैं
 कब वह कोई पैगामे-अमल' देते हैं
 ये फलसफी ज़िन्दगीको समझे समझाये
 हम ज़िन्दगी यकलखत' बदल देते हैं

हाबीलके^३ दागे-खँ तो धो लेने दो
 मीरासे-बहीमियत' तो घोखो लेने दो
 फौकुद-इन्मा'की 'मुन्तज़िर' है दुनिया
 इन्सानको इन्सान तो हो लेने दो

गैरतको मुस्त असास' कर देता है
 एहसान भी बदहवास कर देता है
 इन्सानका जजबए-तशक्कुर' हमदम
 अक्सर मुँहको उदास कर देता है

वो रह्य-ओ-करमका शाखसाना' न रहा
 खैरातका खुल्कको' बहाना न रहा

'कार्य' करनेका मदेश एकदम आदमके एक बेटेका नाम
 'बर्बरताकी विरासत' "मानवसे बड़ी शक्ति रखनेवाला" 'प्रतीक्षामे' है
 कुरानमे लिखा है कि हाबील और काबील नामक आदि पुरुष
 आदमके दो बेटे थे। काबीलने हाबीलको कत्ल कर दिया था।
 वह मनुष्य द्वारा मनुष्यके कत्ल किये जानेकी पहली घटना थी। उसी
 घटनासे मनुष्यकी बर्बरता शुरू हुई। इसीलिये इस ख्वाईमे कहा गया
 है कि जब तक हम अपने पूर्वजोंकी उस विरासतको नहीं भूलते और मनुष्यता-
 से ऊपर नहीं उठते तब तक समारमे शान्ति नहीं होगी 'स्वाभिमानकी
 नौवको कमज़ोर कर देता है 'कृतज्ञताकी भावना' दया और कृपाका
 भगडा 'दान देनेका सदाचारको बहाना

ये दौरे-मसावात^१ है पैसेवालो
अब खिदमत-ओ-एहसाँका जमाना न रहा

वेहिस^२ है रगे-हमीयत^३ उनकी उक्साओ
हथ-फेर दया धर्मके इनको समझाओ
अय्याशिये-खैरात^४ मिटा देती है
इफलासजदोको दानवीरोसे बचाओ

कांग्रेस, मुस्लिम लीग और जनता

कुछ लिक्खे पटे हो पैसेवाले हो ज़रूर
हर बात बजा तामम दावे मज़र
हाथोमे अवामके ह तकदीरे-अवाम
तुम कबसे बन गए अमीने-जमहूर^५

बाँटा औरोने कब हमारे गमको
गाधीजी और कायदे-आज़मको^६
हम अच्छी तरह जानते हें यह तो बताओ
ये कौन तुम्हे सौपनेवाले हमको

^१यह साम्यवादका युग है, अर्थात् अब मनुष्य मनुष्य बराबर होंगे और कोई किसीकी दयापर या दानपर नहीं रहेगा ^२अनुभूति हीन, चेतना-हीन ^३स्वाभिमान, लज्जाकी भावना ^४दान देने लेनेकी ऐय्याशी, क्योंकि चोर बाजारमे लाखों रुपये कमाकर थोड़ा दान कर देना एक फैशन बन गया है ^५निर्धनो, गरीबो ^६जनता ^७जनताके हित-रक्षक 'पाकिस्तानके स्थापक मि० जिन्ना

हम लोगोने दुनियामे किये थे क्या पाप
 कब तक भेले ये दुख, सहे ये सन्ताप
 इस उल्फते-मादरी व पिदरीसे' पनाह
 क्यो सेठजी बन गए हमारे माँ बाप

दुनिया बदली—पुराने सम्बन्धके तौर
 बदले—यह इन्कलाब है काबिले-गौर
 अब रह्य तलब' न कोई औरत है न मर्द
 यह दोरे जमाना है मसावातका दौर

यह लीग और कांग्रेसकी माया समझो
 जनताकी पलट चुकी है काया समझो
 गांधीका देस हो कि जिन्नाका मुल्क
 दोनो हीमे इन्कलाब आया समझो

अली सरदार जाफरी—

तुम्हारी आँखें

तुम्हारी आँखें

हसीन, शफाफ,^१ मुस्कराती जवान आँखें

लरजती^२ पलकोंकी चिलमनोमें

शहाबी^३ चेहरेपे अबलओकी कमाँके नीचे

तुम्हारी आँखें

वह जिनकी नजरोके ठे सायोमें मेरी उलफत

मेरी मुहब्बत, मेरी जवानोकी रात परवान^४ चढ़ रही थी

तुम्हारी आँखें

अँधेरी रातोमें जो सितारोंकी रोशनीसे

फिजाए-जिन्दाँमें^५ भाँकनी है

मैं लिख रहा हूँ

तुम्हारी आँखें सफेद कागजपै अपनी पलकोंसे चल रही हैं

मैं पढ़ रहा हूँ

तुम्हारी आँखें हरेक सतरकी भवोंके नीचे लरज रही हैं

मैं सो रहा हूँ

तुम्हारी आँखें, तुम्हारी पलकों कहानियाँ-सी सुना रही हैं

मैं दोस्तों और साथियोंमें घिरा हुआ हूँ

गुलाब जिन्दाँकी बयारियोंमें खिले हुए हैं

तुम्हारी आँखें मेरी मसरतके फूल बनकर महक रही हैं

मुझे गिरफ्तार करके जब जेल ला रहे थे पुलीसवाले

तुम अपने बिस्तरसे, अपने दिलको

^१निर्मल ^२कम्पित पलकों ^३लाल ^४पल रही बढ़ रही ^५जेलके वायुमंडल

अधूरे ख्वाबोको लेके बेदार हो गई थी
 तुम्हारी पलकोंसे नींद अब भी टपक रही थी
 मगर निगाहोंमें नफरतोंके अजीम शोले^१ भटक उठे थे
 तुम्हारी आँखें हिकारतोंके जहन्नुमोंको^२ जगा रही थी
 निजामे-जुल्म-ओ-सितमपै बिजली गिरा रही थी

मेरी महबूबतने अपनी जन्नतका हुस्न देखा
 तुम्हारी उन शोला-बार^३ आँखोंपै मेरी नज़रोंके प्यार बरसे
 मेरी उमीदों, मेरी तमन्नाओंने सदा दी
 ये नफरतोंकी हसीन मिशअल^४ जलाये रखना
 कि यह मुहब्बतके दिलका शोला है जिसकी रगीन रोशनीमें
 हमारे मरुसदके वास्ते जगमगा रहे हैं

तुम्हारी आँखें जो मेरे सीनेमें तैरती हैं
 कँवलकी कलियाँ जो मेरे दिलमें खिली हुई हैं
 इन्हींसे दो और आँखें बेदार हो गई हैं
 वो नन्हे नन्हे चमकते हीरे, वो नन्ही कनियाँ
 जो मेरी आँखोंका नूर लेकर तुम्हारे आँचलसे भाँकती हैं
 फिर और आँखें, फिर और आँखें, फिर और आँखें
 ये सिलसिला ता अबद^५ चलेगा
 जमानेकी गोदमें सितारोंके हुस्नकी नदियाँ बहेगी
 वो सब तुम्हारी
 वो सब हमारी ही आँखें होगी
 हमारी आँखोंसे आज शोले बरस रहे हैं
 मगर वो कलका हमीन दिन देखो कितना नजदीक आ रहा है
 हमारी आँखोंमें जब बहारे छलक पड़ेगी

^१उँची ऊँची लपटे ^२धृण, के नरको ^३शोला बरमानेवाली ^४सुन्दर
 मशाल ^५कनी, हीरेका बहुत ही छोटा कण ^६अनन्त काल तक

‘मखमूर’ जालन्धरी -

चेमीगोइयाँ

(कानाफूसी)

अरी कुछ सुना तूने क्या हो गया
बहन नास पीटा ये चल्हा तेरा
कभी एक पलको न टडा हुआ
अभी बर्तनोका भरा टाकरा
तेरे सामने हे पडा

बहन ! जान मारो तो लुकमे' चबाओ
हुआ तेज इतना जमानेका ताव
कि अब हड्डियाँ अपनी घोलो तो खाओ
चलो छोडो किस्मतपै क्यो सर खपाओ
कोई ताजा किस्सा सुनाओ

बहन कुछ न पूछो हया' उठ गई
चहीती वह नाजो पली लाडली
नवेली बहू लाजपत रायकी
करेगी कही आजकल नौकरी
नही लोभकी हद कोई

उई राम । पूछो तो हम सच बतायें
 पटी और लिखी बाल खोले बलायें
 न मर्दोंसे जिम रोज कन्धा भिडायें
 न जब तक उन्हें देखकर मुस्करायें
 वह घर अपने तब तक न आयें

बहन गंगका हाथ हमपर पडे
 तो लगता है यो जैसे बिच्छू लडे
 यही चाहते हैं वहीपर खडे
 वह उतनी जगह या गले या सडे
 बुरे हाथ जिस जा पडे

बहन । मर्दकी शान है वह कमाय
 कमाया हुआ उसका कुल कुन्बा खाय
 जो कुछ रूखा सूखासा बाहरसे लाय
 उसे बीबी धोये, सँवारे, पकाय
 सियानी मुघड नाम पाय

मूर्ख देखो, यह कोई दावा नहीं
 कभी घरमें तिनका भी होता नहीं
 अगर भूखे मोये तो परवा नहीं
 जबाँपर कभी कोई शिकवा' नहीं
 गिला अपना शेवा' नहीं

बहन, तुमसे क्या अपनी बिपता छिपाऊ
 हया रोके है वरना कुरता उठाऊ

तो शलवारकी खस्ता हालत बताऊँ
कई खिटाकियाँ और गोजन^१ दिखाऊँ
कहाँ और टाँके लगाऊँ

अरी नोकरी तो बहाना है बस
नई पौद सचमुच हवस है हवस
इरादे गुनहगार नीयत नजिस^२
सदा पाएँ मर्दोकी कुरबतमे^३ रस
किं घेरे रहे पाँच दस

यही भक, दिखाती फिरे बाँकपन
कि घरमे सराहे न कोई फबन
कमर गामजन सीना भी गामजन
पयाम अखडियाँ और दावत^४ बदन
सभी देसवाके चलन

हमे तो बहन नखरे आते नही
कभी सुखी पौडर लगाते नही
पुट्टेको सरसे गिराते नही
ये बालोमे चिडिया बनाते नही
ये मीना दिखाते नही

हमारी कनाअत^५ हमारा सिगार
भला कुछ भी लगता नही रगदार

^१छेद ^२लोभ ^३नापाक ^४सम्पर्क ^५चलती हुई ^६सदेश
^७निमन्त्रण ^८सन्तोष

वो शादीके जोड़े तो थे तीन चार
लिया है सब उनपरसे गोटा उतार
कि है सादगी खद बहार

बहन अब तो गहना भी फबता नहीं
सुनो तुमसे तो कोई पर्दा नहीं
एक आवेजा^१ भी घरमे रखवा नहीं
किसी चोर उचक्केका खटका नहीं
जरा दिल धडकता नहीं

बहन बात मेरी अधरी रहा
ये अधेर है औरत और नौकरी
अभी तो जमानेकी यह गत बनी
न देखा न ऐसा सुना था कभी
अभी उलटी गंगा बही

चले देके मर्तेके हाथोमे हाथ
अगर आज इसके तो कल उसके साथ
करे भोड़े फशनमे मेमोको मात
बस एक बच्चेके बाद पाएँ निजात
कि औलाद है दुखकी रात

इधर माएँ छ सात बच्चोकी हम
करे शुक्र भगवानका दमबदम
कि जिसने किया हमपै इतना करम
करेगा वही उनकी रोजी बहम^२
मिलगा न ज्यादा न कम

बहन बात फिर बीचम कट गई
नवेली बहू लाजपत रायकी
महोनो ससुरसे भगडती रही
कि "घरमे बढी जाती है भुखमरी
मुझे करने दो नौकरी'

बहन टीक हू पेट भरता नहीं
महीना गुजारे गुजरता नहीं
मगर आदमी इससे मरता नहीं
कोई बेहयाई तो करता नहीं
कँम उतरता नहीं

बहन तेरा मह क्यो हू उतरा हुआ
लहू जैसे सारा निचोडा हुआ
तुझे बैठे बैठे भला क्या हुआ
अरी फोडा निकली तू गिस्ता' हुआ
कोई आज भगडा हुआ

बहन कोई दिन ऐसा कटता नहीं
कि जब आसमाँ मिरपै फटता नहीं
घटाया बहूत खर्च घटता नहीं
इसी वास्ते भगडा हटता नहीं
घिरा अन्न छटता नहीं

बहन, भूखका गर्म बाजार हू
फिरगी न अब उसका व्योपार हू

सरोपर टंगी फिर भी तलवार है
 यकीनन कोई हमसे बटमार है
 हमीमे रयाकार है

बहन उस निगोडेको गोली लगे
 कहीसे कोई तेज आंधी उठे
 महल उसका हो जाय ऊपर तले
 सदाके लिये उसका दीपक बभे
 जो दिन रात हमको छले

अहा हा तेरे मुंहमें मिल्नी बहन
 तेरी बात पूरी हो जल्दी बहन
 बने पूतो और दुहतोवाली बहन
 जिये तू जुगो तक चहीती बहन
 लगे उम्र मेरी बहन

गुजिया पनवाड़िन

(१)

दुकाँ चलती हुई तुम क्यों बढाओ
 उठो गुजिया इसे फिरसे सजाओ
 न जाओ और थोडे दिन न जाओ

तुम्हे जिसने सडककी धूल समझा
जुदाईमे न उसकी रज उठाओ
उठो इक पान बल खाकर लगाओ

गई आंधी बुलाई है किसीने
सँवारो ज़िन्दगी, बीती भुलाओ
कडे छनकाओ, भरके मुस्कराओ

अगर धनराज नाथया ले उद्या है
तो फिर बेकार तुम क्यों सर खपाओ
सितारा टाँककर बिन्दी लगाओ

तुम्हारा कब हुआ धनराज छोड़ो
तुम अपनी शींखियाँ वापस बुलाओ
घुली मेहदीको तलुबोम रचाओ

अदाएँ सौतकर गद्दीपै आओ
जो बैठो रान तक लहँगा उठाओ
जो उट्टो, जानकर पायल बजाओ

रचाया तुमने मेहनतको बदनमे
तो फिर क्यों हाथ मेहनतसे उठाओ
डुकाँको छोडकर गुजिया न जाओ

(२)

न जाओ और थोडे दिन न जाओ
कहाँ बैठेगे दुखियारे बिचारे
अभी दरकार है नखरे तुम्हारे

कई दिल सूने हो जाएँगे गुजिया
 लगाओ फूल जुल्फोंके किनारे
 कि जैसे घोर अँधेरेमें सितारे

अभी हिम्मत कही मचली नहीं है
 अभी कमजोर हैं फावोंके मारे
 अभी चलते हैं ले लेंके सहारे

न जाओ और थोड़े दिन न जाओ
 कि टूट खौफके य जाल सारे
 बटे बरसोंके गम छाती उभारे

चली जाओगी तुम गुंजिया तो सोचो
 कहाँ बैठेंगे दुखियारे बिचारे
 अभी दरकार है नखरे तुम्हारे

(३)

अभी दरकार है नखरे तुम्हारे
 जरा खनकाओ चूड़ों सोहन आए
 बदनमें इनका फाहा लगाए

लगाओ कहकहा बलराम नकलें
 लबोंमें पानका बीड़ा दबाए
 फटी नेकरीको पीछेसे लुप्राए

वह तंगेवाला गुजरा उसको छेड़ो
 कि सीठा पान खाने लौट आए
 इशारे मरत आँखोंमें बिठाए

कलाई मोडकर 'लमनेड' खोलो
वह चाबी दस अदासे काग उडाए
हवामे इक पटाखा गूँज जाए

उबलती गैसकी आवाज मुनकर
जम्हाई लेके उठे फज़ल आए
डली चूनेकी कल्लेमे दबाए

दुकाँपर गहमा-गहमी पाके यूनस
गलेमे बाँधके रुमाल आए
रँगोली बाँसुरी मूँहसे लगाए

न जाओ, क्या तुम्हे अब दुःख न होगा
कि यह रगीन मर्हाफिल टट जाए
उजाले फैलकर बन जाएँ साए

(४)

यह मर्हाफिल छोड़कर जाओ न गुजिया
खुशीकी क्या तुम्हे चाहत नहीं है
यह आबादी बुरी मगन नहीं है

अभी ये लोग सोकर उठ रहे हैं
अभी इनमे कोई हिम्मत नहीं है
लपककर बढनेकी जुगत नहीं है

अभी तो रौशनी आई ह इन तक
अब इनकी मलगजी रगत नहीं है
अँधेरा इनकी अब किस्मत नहीं है

गुजरती मोटरे अब सोचती है
 ये मुर्दारोकी पचायत नही है
 ये जमघट अधमुई रैयत नही है

न जाओ छोडकर इनको न जाओ
 कि पीछे हटनेकी सायत नही है
 जहाँको प्यारकी फुरसत नही है

(५)

जहाँको प्यारकी फुरसत नही है
 कि इन्साँ ओर ही गम खा रहे है
 ये बेचारे बदलते जा रहे है

मुना करते थे जो परियोंके किस्से
 सन्चाईकी वह अब अपना ग्हे है
 पुराने भूठको ठुकरा रहे है

भगी दुनियामे क्या कुछ हो रहा है
 अभी अखबार भी पढवा रहे है
 और उसपर बहस भी फरमा रहे है

तुम एंमेमे चली हो घरमे गुजिया
 कि जब तूफान बढते आ रहे है
 नए इन्सान ढलते जा रहे है

(६)

नए इन्सान ढलते जा रहे है
 लगाकर पान दो इनको अदामे
 झुकाके सरको बेपरवा हयासे

तुम्हारी हाट इनका मदरसा है
कि नपरत हो चली इनको रियासे
भयकर रूप सोनेके खुदासे

यह धन्वन्तर^१ किए हैं जिसने पैदा
बहुत इन्सान अब तक बदनुमासे
दरिन्दोंकी तरहमे खूके प्यासे

कडे छनकाओ, भरके मुस्कराओ
लगाकर पान दो इनको अदासे
कि हे बेजार जुल्मे-नारवासे^२

तुम ऐसेमे न जाओ घरसे गुजिया
यही मजबूर, तुम ऐसे सताए
बढेगे तुमको कधोपर उठाए

नरेश कुमार 'शाद'—

चरागाँ

जब भी देखा हें मेरी चउमे-तलैयुलने^३ तुम्हे
तेरे चेहरेपै उदासीके निशां देखे हैं
तू जिन्हे आज छिपाती है मेरी नज्दरोसे
यही आँसू तेरी आँखोमे रवाँ^४ देखे हैं

^१सृजनहार अनुचित अत्याचार ^३कल्पनाकी दृष्टि ^४प्रवाहित

दरहकीकृत मुझे पहले ही यकी था कि तुझे
मेरे हालात कभी रास नहीं आएंगे
तेरे दोशीजा व जरकार' खयालोके कमल
मेरे इदराकको छू लेंगे तो जल जाएंगे

यह भी मालम था जब मेरे अलमखानेमें^१
तेरे गाते हुए ख्वाबोका फसू' टूटेगा
तेरी आँखोंसे तपकने हुए छालेकी तरह
एक अरमान भरे दिलका लहू फटेगा

काबिले-रह्य है वो तेरा तसव्वुर जिसने
एक सहारामे बहारोकी तवक्काकी' थी
रेतके जरोंकी भुलसी हुई ताबानीसे^२
जगमगाते हुए तारोकी तवक्का थी

ये तवक्का तेरे होठोका तबस्सुम थी मगर
उसकी तकमोलकी' तस्वीर यही आँसू है
तूने मर मरके तराशा था जिसे आँखोंमें
उस हसी ख्वाबकी ताबीर' यही आँसू है

यही आँसू है तेरे जश्ने-उरूसीका' सिगार
जिनके परदेमें तेरे प्यारका दिल रोता है
इस तमद्दुन'में तसव्वुर' की उडानोका मआल'^३
अक्सर औकात'^४ मेरी जान यही होता है

^१कुआरे और मुनहरे चेतना दुखगृह ^२जादू आशा ^३चमक ^४पूर्णता
^५स्वप्न-फल ^६विवाहोत्सव ^७मस्कृति ^८कल्पना ^९परिणाम ^{१०}बहुधा समयपर

अपने माँ बापकी शफकत^१ भी है किस जौरसे कम
जिसने तोड़े हैं तेरी गोख उमंगोके अयाग^२
और मुझे मौपके ये तेरी मुलगती आँखे
मेरे एहसासकी तुरबतपै जलाए है चराग

कतील शिफार्द—

ताजिरोके देशमे

(एक सतका जवाब)

मा ! तेरे इफलासके सब वाहिमे बेसूद है
मेरी पलकोपर तेरे आँसू अभी मौजद है
मेरे सीनेमे तेरी ही बेबसीका दर्द है
तेरे चेहरेकी तरह मेरा भी चेहरा जर्द है
छीन लाया हूँ अगर तुझसे मैं अपने आपको
टोक सकती हूँ तेरी ममता मेरे इस पापको
लेकिन ए भूखे बुढापेकी मुकद्दस-राजदार
घर पै फाके आज भी करते हैं मेरा इन्तज़ार
दिन ढले रखता हूँ जब पहला कदम देहलीज़पर
तैर जाती है नजरकी मुर्दनी हर चीज़पर
रुखपर इतमीनानका बहुरूप भर लेता हूँ मैं
सौ बहाने अपनी मजबूरीसे कर लेता हूँ मैं

^१स्नेह प्याले कन्न वत्स, भ्रम पवित्र, पूज्य
भेद जाननेवाली निस्तेजता

माँ तेरी अफसुर्दगी ढलती है जब तहरीरमे^१
 चीखती है ज़िन्दगी एक बेसदा^२ जजीरमे
 तू कुछ अनदेखे महलकोसे^३ बुलाती है मुझे
 फिर भी तेरी खुदफरेबी^४ ढूँढ लाती है मुझे
 बेमुरव्वत फिरकी हर बात सुन लेती है तू
 मोतियोके नामपर ककर भी चुन लेती है तू
 तू समझती है कि मैं एक शायरे मशहूर हूँ
 कौन समझाए तुझे मैं किस कदर मजबूर हूँ
 मेरे बसमे हो तो शोहरतकी^५ जवानी बेच दूँ
 भूख है उनवान^६ जिसका वह कहानी बेच दूँ
 कौन इस फनको करेगा जज्ब अपनी ज़ातमे
 जो लगाए दर्दके पेवन्द एहसासातमे^७

माँ ! अगर अफलास ही वजहे-कदूरत है तुझे
 तेरी ही मानिन्द रोटीकी जरूरत है मुझे
 तूने पाया है अगर मुझमे अमारतका^८ सुराग
 तेरी इस तहकीक^९ से लौ दे उठे हैं दिलके दाग
 मेरी हस्तीमे अज़लसे^{१०} प्यार हूँ शामिल तेरा
 मेरे सीनेमे धडकता है अभी तक दिल तेरा
 तेरे ख़से आज भी रग रग मेरी सेराब है
 जिसकी मैं ताबीर हूँ तू वह मुनव्वर^{११} ख्वाब है
 लेकिन ए भखे बुआपेकी मुकद्दस राज़दार
 घर पे फाके आज भी करते हैं मेरा इन्तज़ार

^१उदासी ^२लिखावट ^३मान ^४छोटे महल ^५अपनेको धोखा देनेकी
 मनोवृत्ति ^६ख्याति ^७शीर्षक ^८भावनाओं ^९दुखका कारण ^{१०}अमीरी ^{११}छानबीन
 खोज ^{१२}आदिकाल ^{१३}चमकते

दूर कोसो दूर तुझसे इल्म-ओ-फनके^१ भेसमे
 बिक रही है भूख मेरी ताजिरोके देसमे
 माँ! तेरे नजदीक जिस नेमतका^२ शोहरत नाम है
 ताजिरोके देसमे वह एक जिन्से-खाम^३ है
 रात भर जब जेह्नुमे^४ बोता हूँ फन-पारा कोई
 काटता हूँ सुब्ह दम टूटा हुआ तारा कोई
 शाम तक हर रोज जब कगाल हो जाता हूँ मैं
 आप अपने मालका दलाल हो जाता हूँ मैं
 कौड़ियोके मोल बिक जाते हैं फन पारे मेरे
 बारहा फेके गए कीचड़पे अगारे मेरे
 फनके हस्ने-दिलनशीको^५ आम^६ कर देता हूँ मैं
 पेटकी खातिर उसे नीलाम कर देता हूँ मैं
 कौन कहता है मेरी तखलीक^७ मेरे साथ है
 ताजिरोके हाथमे शेर-ओ-अदबका हाथ है

अब्दुल मजीद भट्टी—

परवाज (उडान)

सियाहीमे फंले हुए
 सुर्ख और जर्दसे बादलोमे
 जो उलझे हुए है

^१विद्या और कला ^२अमूल्य वस्तु ^३कच्चा माल ^४मन-मस्तिष्क
^५फन=कला, पारा=टुकड़ा ^६कलाके मनोहर सौंदर्य ^७साधारण चीज
 बना देता हूँ ^८रचना ^९कविता आर साहित्य

जो पैहम^१ उलझते चले जा रहे हैं
 उडी जा रही हूँ
 उडी जा रही हूँ
 कुछ ऐसा है जैसे कि पर लग गये हैं
 मगर मैं पलटकर न जाने
 किसे देखना चाहती हूँ
 न जाने मुझे कौन याद आ रहा है
 खलाओमे बानातसी बिछ रही है
 कि नद्दी लहूकी बही जा रही है
 मैं जिसके किनारे
 फिसलते फिसलते चली जा रही हूँ
 मगर फाँस मेरे गलेमे है कसी
 न जाने नसे मेरी क्यों खिच रही है
 शहाबी लबादेसे^२ मैं देखती हूँ
 फिजा लजलजीसी^३ हुई जा रही है
 अंधेरे उजाले है दस्त-ओ-गरेबाँ
 बगूले लहूमे नहाए हुए हैं
 न जाने ये सुख आंधियाँसी है कैसी
 सियाहीमे फैले हुए—सुख दामन
 न जाने यहाँ खू हुआ है किसीका
 मगर फाँस मेरे गलेमे है कैसी
 न जाने नसे मेरी क्यों खिच रही है
 न जाने ये है कोई मजबूह^४ बकरी

^१बार-बार
^२नर्म ^३डल रहे हैं

^३गुन्यो
^४कटी हुई

मखमल

^४लाल पोशाक

कि मेरी बहनका गला कट गया है
नही यह तो मैं खुद हूँ
खुनी दरिन्दोके हलकेमे
अपने लहूकी खानीमे बहती चली जा रही हूँ

नही अब नही उनकी मुझ तक रसाई
बुलन्दी पै परवाज मैं कर रही हूँ
खलाओमे फेले हुए
सुख और जर्दसे बादलोमे
मुझे अपनी मजिल नजर आ रही है
मगर देखकर अपने हाथोकी मेहदो
न जाने मुझे कोन याद आ रहा है
न जाने ये मेरी निगाहे पलटकर
किसे देखती है
किसे देखना चाहती है

अरे आ गया तू
मेरे प्यारे नन्हे
अब इन्सानियत ओर इन्साँकी जदसे
बहुत दूर है हम
वह देखो अँधेरेमे कुछ कुछ उजाला नजर आ रहा है
वही हमसे पहले
अभी हाँ अभी तेरे अब्बा गये हैं
ये बानातसी फैलती जा रही है
कि नदी लहूकी

मगर इससे मतलब
 गनीमत है मेरे लिये मेरे नन्हे
 कि तू आ गया है
 खलाओके इन सुख और जदसे बादलोमे
 जहाँ कोई इन्साँ नहीं है
 न जाने बगूलेसे क्यो उठ रहे है
 फिज्जा लजलजीसी हुई जा रही है

चोर

काट दो हाथ मेरे, चोर हूँ मैं
 लैंकन हथियार न ठीकेपै हो बनवाया गया
 ठीकेदारोको भी मैं क्यो कोसूँ
 कि हरे नोटोसे
 पास होता है जो हर माल तो बिल मिलते हैं
 अल्लकारोका भी क्या जुर्म है, जब
 चोर बाजारमे उनकी भी गिरह कटती है
 और गिरहकट भी है मजबूर कि 'परमिट' अक्सर
 कुछ मुनाफे ही पे वो लेते हैं
 मिलके मालिक हो कि हो खुर्दाफरोश
 गुर कमाईके सभी जानते हैं
 रातका धन्धा हो या दिनके उजालेमे ब्लैंक
 कारबार और तिजारत ही तो है
 खोपरा घीमे, तो है दूधमे पानी भी हलाल^१

^१नारियल ^२उचित

आज बाज़ारका फतवा है यही
मैं कि मालिक हूँ किसी मिलका, न हूँ खुर्दाफरोश
और मेरे हाथोमे कैची भी नहीं
मंने जीना भी जो चाहा, तो फकत दूसरे ही फाके तक
काट दो हाथ मेरे, चोर हूँ मैं

इब्नेइन्दा--

सराय

नगर पराया चैत महीना, सूनी रात सराय
दीवारोपर मैले-मैले, फँले-फँले साय
आनेवाली कलका छलवा लपक झपक दिखलाय

क्या क्या स्वाग रचाय

घड़ीकी सूई सदियाँ बीत चुकी तू एक बजाय
आसकी बेल निहायत निर्बल, छायासे शर्माय
अन्धा दीपक मतवाली पुरुवाके थपेड़े खाय

काँप काँप रह जाय

नीलम नीलाकाशपै अपना पीला जाल बिछाय
मुग्धम मुग्धम सन्देसोसे अपने पास बुलाय
चंचल चन्दा दूर दूरसे देखे और मुस्काय

लेकिन हाथ न आय

दिलपर सोच, पुरानी बैरन रह रह चोट लगाय
नाहक तुमने मजिल मजिल पथ पथ दिये जलाय
चार कोट वही घोर अधियारा चार कोट अन्याय

दिन दिन बढ़ता जाय

घूँ घूँ, घूँ घूँ, चर्खी घूमे पहिया शोर मचाय
 शप शप, शप शप, पट्टोमैलिपटी किस्मत चक्कर खाय
 कही तो चक्की मोटा पीसे मैदा कही बनाय
 और कही थम जाय

टट टट, टट टट, बैलकी जोड़ी घूमे सीस नवाय
 हलकी नोक लकीरे खोदे, लेखके भेद बताय
 हलवाहा जहाँ सुबह समय था, शामको जब सुस्ताय
 वही सितारे पाय

कालके काले काले राक्षस चार कोटमे छाय
 अँतडियोमे भूखकी किरचे, जहाँ तहाँ हर जाय
 गोदामोपर खूनी पहेरे खवेसे खवा मिलाय
 सगीने चमकाय

शहका काजी फतवे छापे गली गली फेलाय
 मोड मोडपर दुखिया गोरी यादके दीप जलाय
 सोच रही हैं इतने दिनमे कितने पाप कमाय
 किसको गिनती आय

फिर जहरी बमबार फिजापर भपटे और गुराँय
 प्रब देस धुँका बादल आग पडा बरसाय
 पच्छिमके गिद्धोके लशकर आए परे जमाय
 लाशोपर सडलाय

कभी अकाब, कभी स्वास्तिका, एक आए एक जाय
 जगका लूका घर, खेती, खलिहान पडा भुलसाय
 कही तो बेरुत होली खेले कही बसन्त मनाय
 रूप अनप दिखाय

हम जागीर कलमकी लेकर क्या खोए, क्या पाये
शब्द मनोहर, बोल कटीले, रम्जें और कनाये^१
सब गजलोके कहनेवाले कवियोंने अपनाये
अपने हाथ न आय

पीतकी मीठी बाते छोडो, छोडी और पछताय
धरतीके बेंटोकी बिपताओके आट्टे गाय
चोरोकी मानिन्द बँधी मुश्कोमे पकडे आय
दीवाने कहलाय

यारोका एक गोल छनाछन जेबोको छनकाये
उन लोगोने चाकरियोमे सस्ते टके कमाये
'इन्शा' जैसे एक बार भटके तो हुए पराये
कोई न धोखा खाय

नगर पराया चेत महीना, सूनी रात, सराय
दीवारोपर मैले मैले, फँले फँले, साय
आनेवाली कलका भरोसा दिन दिन उठता जाय
यारो कोई उपाय
यारो कोई उपाय

श्रीमती 'अदा' जाफरी---

ये मेरे दिलको खयाल आता है

देख तो सुर्मयी आकाश पे तारोका निखार
रातकी देवीके माथेपे चुनी है अफशा^२

^१सकेत, इशारे

^२कुमकुम

या कुछ अइकोके चराग
 है किसी राहुगुजरमे' लज्जा
 आह ये सुर्मयो आकाश ये तारो के शरार
 यह मेरे दिलको खयाल आता है
 दम अँधेरेमे घुटा जाता है
 क्यो न ऐवाने-तसव्वुरमे' जला लूँ शमएँ
 बरबत-ओ-चग-ओ-रबाब
 मुन्तजिर हूँ मेरे मिजराबकी एक जुम्बिशके
 जिन्दगी क्यो फकत एक आहे-मुसलसल ही रहे
 क्यो न बेदार' करूँ वो नगमे
 वक्त भी सुनके जहाँ थम जाए
 राहुगुजारोमे ये बहता हुआ खू
 मौतके साये तले सिसकियाँ भरती है हयात
 इस उमडते हुए तूफाँसे किनारा कर लूँ
 ये सिसकती हुई लाशे, ये हयाते-मुर्दा
 ये जबीने' जिन्हे सजदोसे'' नही है फुरसत
 ये उमगे जिन्हे फाकोने कुचल डाला है
 ये बिकलती हुई रूहे ये तडपते हुए दिल
 इन ढलकते हुए अइकोको चुराकर मे भी
 अपने ऐवाने-तसव्वुरमे चरागाँ'' कर लूँ
 देखकर रातकी देवीका सिगार
 बहता आता है मगर

'राह, मार्ग' कम्पित 'चिनगारियाँ' 'कल्पना' भवन 'बरबत,
 चग और रबाब ये वाजो के नाम है 'जिम से सितार बजाते
 है वह यत्र 'गति' जगाऊ जीवन 'माथे' 'सिर' भुकाने
 'दीप जला लूँ

नगम-ओ-नैका^१ सहारा लेकर
जिन्दगी चल भी सकेगी कि नहीं
इन सितारोकी दमकती हुई कन्दीलोसे
रातके दिलकी मियाही भी मिटेगी कि नहीं

फेज अहमद फेज'—

मुझसे पहली सी मुहब्बत मेरी मुहब्बत न माँग

मुझसे पहलीसी मुहब्बत मेरी मुहब्बत न माँग
मने समझा था कि तू ह तो दरखा^२ हें हयात
तेरा गम हें तो गमे-दहका भगडा क्या हें
तेरी सूरतसे हें आलममे बहारोको सबात^३
तेरी आँखोके सिवा दुनियामे रक्खा क्या हें
तू जो मिल जाय तो तकदीर नगू^४ हो जाये
यू न था, मने फकत चाहा था यू हो जाये
और भी दुख हें जमानेमे मुहब्बतके सिवा
राहते और भी हें वस्लकी राहतके सिवा

अनगिनत सदियोंके तारीक बहीमाना^५ तिलिस्म
रेशम-ओ-अतलस-ओ-कमखाबमे बुनवाए हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाजारमे जिस्म
खाकमे लुथडे हुए खूनमे नहलाये हुए

^१गीत ओर वाँसुरी ^२चमकती, ^३मामारिक दुख ^४स्थायित्व
^५भुक्त जाय, ^६प्रेमिकामे मिलनका आनन्द ^७वर्गवर्गतापूर्ण

जिस्म--निकले हुए अमराजके तन्नूरोसे
 पीप बहती हुई गलते हुए नासूरोसे
 लौट जाती है उधरको भी नजर क्या कीजे
 अब भी दिलकश है तेरा हुस्न, मगर क्या कीजे
 और भी दुख है जमानेमे मुहब्बतके सिवा
 राहते और भी है वस्ल की राहत के सिवा
 मुझसे पहलीसी मुहब्बत मेरी महबूब न मांग

चन्द रोज़ और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज़

चन्द रोज़ और मेरी जान फकत चन्द ही रोज़
 जुल्मकी छाँवमे दम लेनेपे मजबूर है हम
 और कुछ देर सितम सह ले, तडप ले, रो ले
 अपने अजदादकी मीरास^१ है माजूर है हम
 जिस्मपर क़ंद है जज़्बात पे जजीरे है
 फ़िक्क महबूस है गुफ़्तार^२ पे ताज़ीरे^३ है
 अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते ह
 ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़लिसकी कबा है जिसमे
 हर घड़ी दर्दके पैवन्द लगे जाते है
 लेकिन अब जुल्मकी मीआदके दिन थोड़े है
 एक ज़रा सब्र कि फ़रियादके दिन थोड़े ह
 अरसए-दहर्का^४ भुलसी हुई वीरानीमे

^१तन्दूर ^२पुराने फोड़े ^३पूर्वजो ^४विरासत ^५असमर्थ ^६बन्दी
^७बोलने ^८दंड ^९कुर्ती ^{१०}दुनिया, युग

हमको रहना है पै यूँही तो नहीं रहना है
 अजनबी हाथोका बेनाम गराँबार' सितम
 आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है
 यह तेरे हुस्नसे लिपटी हुई आलामकी^१ गर्द
 अपनी दो रोज़ा जवानीकी शिकस्तोका शुमार
 चाँदनी रातोका बेकार दहकता हुआ दर्द
 दिलकी बेसूद तडप जिस्मकी मायूस पुकार
 चन्द रोज़ और मेरी जान फकत चन्द ही रोज़

हल्के भोंके

(१)

जाँ बेचनेको आए तो बेदाम बेच दी
 ए अह्ले-मिस्त्र वज़ए-तकल्लुफ तो देखिये
 इन्साफ है कि हुक्मे अकूबतसे^२ पेशतर
 एक बार सूए-दामने-यूसुफ तो देखिये

^१भारी 'दुखो, कण्टो 'ए मिस्त्रवालो मकोच और शालीनताकी परम्परा तो देखो 'वादम जो हुक्म हो उससे पहले 'यूसुफके दामनकी तरफ, यूसुफ एक पैगम्बर थे जो अत्यधिक सुन्दर थे, मिस्त्रकी रानी जुलैखा उनपर आशिक हो गई, उसने उनको अपने साथ व्यभिचारके लिये विवश किया पर जब यूसुफ न माने तो उनपर आरोप लगाया कि वे उसकी लाज लटना चाहते थे, परन्तु न्यायालय में यूसुफ अपने कुरतेका फटा दामन दिखाकर बच गये, क्योंकि उससे यह प्रमाणित हो गया कि उन्होंने भागनेका प्रयत्न किया था और जुलैखाने उनका कर्त्ता खीचा था और ज़बरदस्ती की थी

(२)

मताए-लौह-ओ-कलम छिन गई तो क्या गम है
 कि खूने-दिलमे डुबोई है उँगलियाँ मने
 लबो पे मोह लगी है तो क्या कि रख दी है
 हर एक हलक-ए-जजीरमे जबों मने

(३)

तेरा जमाल निगाहोमे लेके उठठा हूँ
 बिखर गई है फिजा तेरे पँरहनकीसी
 नसीम तेरे शबिस्ताँसे होके आई है
 मेरो सहर्गमे महक हं तेरे बदनकीसी

अख्तर उरनवी—

कोयल

कूक, कूक, ए कोयल कूक ।
 आँखसे ओझल तू है कोयल, तेरी हस्ती राज
 बनकी रानी तेरा जीवन है शीरी आवाज
 हूक उठती है दिलमे जब बजता है तेरा साज
 तेरी बोलीसे सौ सुन्दर सपनोका आगाज
 ए प्यारी शहनाज
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

“कागज आर कलमकी दावत जजीर की कडी मान्दर्य पोशाक
 “शयनागार प्रभात “मधुर स्वर आरम्भ

हृदय मेरा ए पछी मायूसीका स्थान
रूह पै है तारीकी छाई मिट गये सब अरमान
दिलकी दुनिया ठडी है और आशा है बेजान
जीस्तका मेरी नबशा याती एक वीरों मुनसान

मिट गये सब अरमान

कूक, कूक, ए कोयल कूक

अन्धी नगरी, लोभका धन्धा, दुनिया सारी माया
जुल्मसे पूँजीवालोके है सबपर दुखका साया
धरतीकी छातीके ऊपर दहके है अगारा
जगमे हर सू बहता है कमजोरके खूँका धारा

सारी दुनिया माया

कूक, कूक, ए कोयल कूक

जगका सेवा करनेवाले भखे मरे बिचारे
सूखा चेहरा, गर्दनमे खम,^१ सो आफतके मारे
अच्छे खासे डाकू है सरमायावाले सारे
उनकी शहसे इन्साँपर बम बरसाएँ तैयारे^२

कैसे है हत्यारे

कूक, कूक, ए कोयल कूक

देश विदेश पे छापा मारे ये पापी जल्लाद
जुल्मसे उनके खू रोती है आदमकी औलाद
लोभकी जगोसे यह आलम सारा है बरबाद
जो है जिन्दा सो अधमुए है बिपतासे नाशाद

किससे करूँ फरियाद

कूक, कूक, ए कोयल कूक

दिलमे शोरिश^१ उठती है, उठता है एक तूफान
 पापी तो सब ऐश करे और भूखे मरे दहकान^२
 जनता सारी बिपता भोगे डाकू हो प्रधान
 नेकी रोती फिरती हो और राज करे शतान
 गाफिल है भगवान
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

लूट मचे जब दुनियामे चुपचाप हो क्यो आकाश
 दिलका दर्पन टूट चुका अब भिटता है विश्वास
 जिस्म है मेरा ए कोयल एक चलती फिरती लाश
 बर्फसे ज्यादा ठडी है दिखलाऊ दिलकी काश^३
 बुझा हुआ प्रकाश
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

गीतमे तेरे पिनहां^४ कोयल, शोलेकी तासीर^५
 रागमे तेरे रक्सां^६ कोयल, हस्तीकी तनवीर^७
 प्रेमकी देवी, तेरा नगमा, उलफतकी तफसीर^८
 तानमें ऐसा सोज^९ कि यह आकाशको जाये चीर
 मेरे दिलपर तीर
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

काश, मेरे दिलको सुलगा दे नगमेकी चिनगारी
 तेरे गीतकी जोतीसे छट जाये यह अँधियारी

^१हलचल ^२किसान ^३फाँक ^४निहित ^५प्रभाव ^६नाचती ^७ज्योति
^८व्यास्था ^९जलन

बोलकी शक्तीसे पैदा हो रहूँ मे एक बेदारी'
 बहुत बड़ा यह दुख है पछी ईमाँकी नादारी'
 आत्मा है दुखियारी
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

अमर जोति ये कूक है तेरी, अमृतकी है धार
 मधुर बोलसे तेरी गूँजे बस्ती और कोहसार
 सबमे ऐसा जज्बा' भर दे जाग उठे ससार
 आशाको बल-बूता दे दे नौका है मँझधार
 टूटा है पतवार
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

महके है मसीकी तेरी जैसी मस्त अगडाई
 सनक सनककर चेतमे जैसे चलती है पछुवाई
 हृदयको फिर आससे भर दे गीतकी दिल आराई
 रहूँ मेरी रफअत' बरशे उसकी फलक पैमाई'
 कट जाये कठिनाई
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

रागमे तेरे आग है कोयल, दिलमे भरदे जोश
 हासिल हो ईमानको मेरे ईश्वरकी आगोश'
 सारे बन्धन तोडके रख दूँ नेश' को कर दूँ नोश''
 दुनियाके दोखको'' कर दूँ जन्नतका हमदोश'
 आलम हो गुलपोश''^३
 कूक, कूक, ए कोयल कूक

'जागति निर्धनता 'पर्वत 'भाव मगीत ऊँचाई 'आकाशको
 नापनेवाली 'गोद 'काँट, जह्नु भग डक पीनकी चीज 'नरक
 ''स्वर्गके बराबर 'फूलोंसे लदा

मुईन अहमन 'जज्वी'—

फितरत एक मुफ्तिसकी नजरमें

फितरतके पुजारी कुछ तो बता, क्या हुस्न है इन गुलजारोमे
है कौनसी रानाई आखिर, इन फूलोमे इन खारोमे
वो ख्वाह सुलगते हो शब भर, वो ख्वाह चमकते हो शब भर
मैंने भी तो देखा है अक्सर, क्या बात नई है तारोमे
इस चाँदकी ठंडी किरनोसे मुझको तो मुक़ होता ही नहीं
मुझको तो जुन होता ही नहीं, जब फिरता हूँ गुलजारोमे
ये चुप चुप नर्गिसकी कलियाँ, क्या जाने कैसी कलियाँ है
जो खेलती है, जो हँसती है और फिर भी ह बीमारोमें
यह लाल शफक, ये लाल-ओ-गुल, एक चिनगारी भी जिसमे नहीं
शोले भी नहीं, गर्मी भी नहीं, है तेरे आतशजारोमे^१
उस वक्त कहाँ तू होता है, जब मोसमे-गर्मा का सूरज
दोज़खकी तपिश भर देता है, दरियाओमे कोहसारोमे
जाडोकी भयानक रातोमे वह सर्द हवाओकी तेज़ी
हाँ, वह तेज़ी, वह बेमेहरी जो होती है तलवारोमें
दरियाके तलातुमका मज़र हों तुझको मुबारक हो लेकिन
एक टूटी फूटी कश्ती भी चकराती है मँझधारोमे
कोयलके रसीले गीत सुने, लेकिन ये कभी सोचा तूने
है उलझे हुए नगमे कितने एक साजके टूटे तारोमें

‘मौन्दय आगकी वाटिका गम्भी ‘निदयता तूफान

बादलकी गरज, बिजलीकी चमक, बारिशमे वो तेजी तीरोकी
 मै ठिठुरा सिमटा सडकोपर, तू जाम-बलब मयखारोमे
 सब होश-ओ-खिरदके दुश्मन है, सब कलब'-ओ-जिगरके रहजन है
 रक्खा है भला क्या इसके सिवा इन राहते-जाँ महपारोमे'
 वह लाख हिलालोसे भी हसी, कैसी जोहरा कैसी परवीं'
 एक रोटीका टुकडा जो कही मिल जाय मुझे बाजारोमे
 जब जेबमे पैसे बजते है, जब पेटमे रोटी होती है
 उस वक्त यह जर्रा हीरा है, उस वक्त ये शबनम मोती है

मौत

अपनी सोई हुई दुनियाको जगा लू तो चलू
 अपने गमखानेमे एक धम मचा लूँ तो चलू
 और एक जामे-मए-तल्ल चढा लूँ तो चलू
 अभी चलता हँ ज़रा खुदको सँभालूँ तो चलू

जाने कब णी थी, अभी तक है मए-गमका खमार
 धुंधला धुंधला नज़र आता है जहाने-बेदार'
 आँधियाँ चलती है, दुनिया हुई जाती है गुबार'
 आँख तो मल लूँ ज़रा होशमे आ लूँ तो चलू

वह मेरा सेह, वो एजाज़' कहाँ है लाना
 मेरी खोई हुई आवाज़ कहाँ है लाना

‘चेतना आर बुद्धि दिल चाँदके टुकडा ‘तारोके नाम कटवी शराबका
 प्याला ‘दुखकी मदिरा ‘जागता ममार ‘बल जादू ‘‘चमत्कार

मेरा टटा हुआ वह साज कहाँ है लाना
 एक ज़रा गीत भी इस साजपै गा लूँ तो चलूँ
 मैं थका-हारा था इतनेमें जो आए, बादल
 किमी मतवालेने चुपकेसे बढा दी बोतल
 उफ वो रगीन पुर-असरार^१ खयालोके महल
 ऐसे दो चार महल और बना लूँ तो चलूँ
 मुझसे कुछ कहनेको आई है मेरे दिलकी जलन
 क्या किया मैंने जमानेमें नहीं जिसका चलन
 आँसुओ ! तुमने तो बेकार भिगोया दामन
 अपने भीगे हुए दामनको सुखा लूँ तो चलूँ
 मेरी आँखोमें अभी तक है मुहब्बतका गुरुर
 मेरे होठोको अभी तक है सदाकत का गुरुर
 मेरे माथेपै अभी तक है शराफतका^२ गुरुर
 ऐसे वहाँसे अभी खुदको निकालूँ तो चलूँ

मखदूम मुहीउद्दीन—

वतनको आज़ादी

कहो हिन्दोस्ताँकी जय

कहो हिन्दोस्ताँकी जय

कसम है खूनसे सींचे हुए रगी गुलिस्ताँकी

कसम है खूने-दहकाँकी^३ कसम खूने-शहीदाँकी

^१रहस्यपूर्ण

^२सत्यता

^३मज्जन्तता

^४किमानका खन

ये मुमकिन है कि दुनियाके समुन्दर खुश्क हो जाएँ
 ये मुमकिन है कि दरिया बहते बहते थकके सो जाए
 जलाना छोड़ दे दोजखके अगारे ये मुमकिन है
 रवानी तर्क कर दे बर्क' के धारे ये मुमकिन है
 जमीने-पाक अब नापाकियोंको ढो नहीं सकती
 वतनकी शमए-आजादी कभी गुल हो नहीं सकती
 कहो हिन्दोस्ताँकी जय
 कहो हिन्दोस्ताँकी जय

वो हिन्दी नौजवाँ यानी अलमबरदारे-आजादी
 वतनका पासबाँ वो तेगे-जौहरदारे-आजादी
 वो पाकीजा शरारा बिर्जालियोने जिसको धोया है
 वो अगारा कि जिसमे जीस्तने^१ खुदको ममोया है
 वह शमए-जिन्दगानी आँधियोने जिसको पाला है
 एक ऐसी नाव तूफानोने खुद जिसको सँभाला है

वो ठोकर जिससे गेती लर्जा-बर अन्दाज रहती है
 वो धारा जिसके सीनेपर अमलकी नाव बहती है
 छिपी खामोश आहें शोरे-महशर^२ बनके निकली हैं
 दबी चिनगारियाँ ग्यर्झादे-ग्यावर^३ बनके निकली हैं
 बदल दी नौजवाने-हिन्दने तकदीर जिन्दाँ की
 मुजाहिदकी^४ नज़रसे कट गई ज़जीर जिन्दाकी
 कहो हिन्दोस्ताँकी जय
 कहो हिन्दोस्ताँकी जय

^१विजली ^२आजादीका झंडा उठानेवाले ^३रखवाल ^४जीवन पृथ्वी
 'काँपती है' ^५प्रलयका शोर ^६सूर्य ^७कारागार ^८सत्यके लिये लड़नेवाले

मशरिक्

जेह्ल फाका भीख बीमारी नजासतका^१ मकान
जिन्दगानी ताजगी अक्ल-ओ-फरासतका मसान
बह्मजाईदा^२ खुदाओका रवायतका गुलाम
परवरिश पाता रहा है जिससे सदियोका जजाम^३
भड चुके हें दरत-ओ-बाज् जिसके उस मशरिक्को देख
खेलती है साँस सीनेमें मरीजे-दिकको^४ देख
एक नगो लाश बेगोर-ओ-कफन^५ ठिठरी हुई
मगरिबी चीलोका लुकमा खूनमें लुथडी हुई
एक कब्रस्तान जिसमें हू न हों कुछ भी नहीं
एक भटकती रूह है जिसका मकों कोई नहीं
पैकरे-माजीका^६ ° एक बेरग और बेरूह खोल
एक मग-बेकयामत, एक बेआवाज ढोल
एक मुसलसल रात जिसकी सुबह होती ही नहीं
ख्वाबे-असहाबे-कहफको पालनेवाली जमी
इस जमीने-मौत-परवरदाको ढाया जायगा
एक नई दुनिया नया आदम बनाया जायगा

‘निरक्षरता गन्दगी विद्वन्ता ‘वह्ममें उत्पन्न रुढियो ‘कोढ
‘हाथ, बाज ‘क्षयका रोगी ‘बिना कब्र और कफन ‘अतीतकी मर्ति
‘‘मृत्यु, जो कयामतके दिन भी जीवनमें न बदले दीघनिद्रा, असहाबे
कहफके बारमें कुगनमें लिखा हैं कि वे मरे नहीं किन्तु सो रहे हैं—
चिरनिद्रा मौतकी पापक

मौतका गीत

अर्श को आड मे इन्सान बहुत खेल चुका
खने-इन्सानमे हेवान^१ बहुत खेल चुका
मोरे-बेजा^२ से सुलमान^३ बहुत खेल चुका
वक्त है आओ, दो आलमको दिगरगं कर दे
कलबे-गतीमे तबाहीके शगरे भर दे

जुलमे-कुफ्रको ईमान नही कहते हैं
सगे-खूंखारको^४ इन्सान नही कहते हैं
दुश्मनेजाँको निगहबान नही कहते हैं
जाग उठनेको है अब खका तलातुम देखो
मलकुल-मौतके^५ चेहरेका तबस्सुम^६ देखो

जान लो कहका सैलाब^७ किसे कहते हैं
नागहाँ, मौतका गिरदाब^८ किसे कहते हैं
कड़के पहलुओकी दाब^९ किसे कहते हैं
दौरे-नाशादको अब शाद किया जायेगा
रूहे-इन्सानको आजाद किया जायेगा

नालए-बेअसर^{१०} अल्लाहके बन्दोके लिये
सिलए-दार-ओ-रसन^{११} हकके रमूलोके^{१२} लिये

^१ईश्वरका निवास स्थान, ईश्वरका नाम लेकर ^२पशु ^३निर्जीव चीटी ^४एक पैगम्बर बादशाह जिसका हुक्म पशु पक्षी ओर कीड़े मकोड़े भी मानते थे ^५उलट पुलट ^६पृथ्वीका हृदय ^७खूंखार कुत्ता ^८रक्षक ^९तूफान ^{१०}यमदूत ^{११}मुस्कान ^{१२}विनाशकी वाढ ^{१३}भँवर ^{१४}दवाव ^{१५}प्रभावहीन रुदन ^{१६}त्यक्की बेंडी ओर फाँसी ^{१७}मन्यके अवतारो

कस्ने शहादके' दर बन्द है भूखोके लिये
 फूँक दो कस्त्रको गर 'कुन' का तमाशा है यही
 जिन्दगी छीन लो दुनियासे जो दुनिया है यही
 जलजलो आओ, दहकते हुए लावो आओ
 बिजलियो आओ गरजदार घटाओ आओ
 आँधियो आओ, जहन्नमकी हवाओ आओ
 आओ यह कुरए-नापाक भसम कर डाले
 कासए-दहको' मामूरे-करम कर डाले

शायर

कुछ कौस-कजहसे रगत ली कुछ नूर चुराया तारोसे
 बिजलीसे तडपको माँग लिया कुछ कफ' उड़ाया बहारोसे
 फूलोसे महक शाखोसे लवक ओर मडुओसे ठंडा साया
 जगलकी कुँआरो कलियोने दे डाला अपना सरमाया
 बदमस्त जगानीसे छोनी कुछ बेफिकरी' कुछ अल्हडपन
 फिर हुस्ने-जुन परवरने दी आशपनासरी दिलकी धडकन
 बिखरी हुई रगी किरनोको आँखोसे चुनकर लाता हूँ
 फितरतके परीशाँ नगमोसे एक अपना गीत बनाता हूँ
 फिरदौसे-खयालीमे' बैठा एक बुतको तराशा करता हूँ
 फिर अपने दिलकी धडकनको पत्थरके दिलमे भरता हूँ

'शहादका महल' शहादने दावा किया था कि वह ईश्वर है वह शब्द जिसके कहनेमे मृष्टिकी रचना हुई 'यह अपवित्र पृथ्वी', ममारके भिक्षापात्रको कृपादानमे भर दे 'इन्द्रधनुष' रम 'जुनूनका पोषक मान्दर्य' 'चंचलता' 'कल्पनाके स्वग

‘राही’ मासूमरजा—

ज़बान

(भाषा)

ज़बान रातके माथेका माहताब नही
ज़बान गुलशने-काकुलका एक गुलाब नही
ज़बान खिलवते-मीनाका^१ आफताब नही
ज़बान ओसकी बूंदोका इजतराब^२ नही
ज़बान तारोकी महफिल नही है गुलशन है
ज़बान बर्के-नशेमन^३ नही, नशेमन है
ज़बाँ जमीसे उभरती है खेतियोकी तरह
ज़बाँ जमी पे मचलती है नदियोकी तरह
घरोमे रहती है माओकी घुडकियोकी तरह
सडक पे चलती है पैरोकी आहटोकी तरह
ज़बान एक गुले-नौरसकी^४ शोख नकहत^५ है
खुदाकी देन नही है जमीकी मेहनत है
ज़बाँ मशीनोकी पुरशोर गडगडाहट है
ज़बान दूब पे शबनमकी नर्म आहट है
ज़बाँ कुँएके तरझुमकी^६ खिलखिलाहट है
ज़बान सबजए-गन्दुमकी सरसराहट है

^१शराबकी मुहरबन्द बोतलके अन्दर चमकनेवाला सूर्य ^२चंचलता,
कम्पन ^३घोसलेपर गिरनेवाली बिजली ^४नया खिला फूल ^५सुगन्ध ^६गुजन

जबान खेतोमें रहती है बालियाँ बनकर
जबाँ मिलोसे निकलती है कारवाँ बनकर

जबानसे जो लड़े जिन्दगीका दुश्मन है
चिरागसे जो लड़े रोशनीका दुश्मन है
जो एक हँसीसे लड़े, हर हँसीका दुश्मन है
जो एक कलीसे लड़े, हर कलीका दुश्मन है
भुकाना चाहे जो टँगोरके अदबकी जबी
वो मोर-ओ-गालिब-ओ-एकबालका भी दोस्त नहीं

जबाने-नज़रुल^१-ओ-टँगोरकी ये बे अदबी
ये आगही है कि दीवानावार बेखबरी
मिज़ाजे-अर्ज़^२से बेगानगीकी हद है कोई
जमी पै धानकी गेहूँ न उग सकेगा कभी
उगेगा धान कि ये धान ही की क्यारी है
जमी लहूसे डरेगी, ये बेखयाली है

तुम एक शहाब^३ हो और आस्माँसे लडते हो
गलत उरूज^४ हो और दास्ताँसे लडते हो
शरारे-मुर्दा^५ हो, आतशफिशान^६से लडते हो
ब-जोमे-जोरे-हुकूमत^७ जबाँसे लडते हो
जो राह रोकने फौजोकी लारी आएगी
तो माँकी प्यार भरी बात हार जाएगी

^१प्रसिद्ध बंगाली क्रान्तिकारी कवि काजी नज़्रुल इसलाम ^२धरती के
स्वभाव ^३तारा ^४उठान ^५मृत चिनगारी ^६ज्वालामुखी
^७सरकारी शक्तिके बलपर

ये इन्तज़ारे-सहर^१ कामयाब भी होगा
 सुनो कि धरतीपर एक इन्कलाब भी होगा
 हमारे पास तुम्हारा जवाब भी होगा
 लहू बहा लो लहूका हिसाब भी होगा
 हयात शोरिशे-तूफाँको^२ याद रखती है
 जमीन खूने-शहीदाँको याद रखती है

फिज़ाए-ढाकामे गूँजी हुई सदाओ सुनो
 जवान नारोसे गूँजी हुई फिज़ाओ सुनो
 हुदूदे-नज़रूल-ओ-टँगोरकी हवाओ सुनो
 सुनो, निहत्थे जवानो व सूरमाओ सुनो
 घना अँधेरा है एक आफताब देता हूँ
 सुनो तुम्हे खबरे-इन्कलाब देता हूँ

ये रास्तो पै जो गोलेकी तडतडाहट है
 हवाके दोश पै ख्वाबोकी गुनगुनाहट है
 फिज़ामे शहपरे-फर्दाकी^३ सरसराहट है
 अँधेरेमे सहरे-मुन्तज़िरकी आहट है
 लहू अँधेरेमे रोशन चिराग बोता है
 लहूसे रातका दामन भी लाल होता है

^१सुबहका इन्तज़ार ^२तूफानकी हलचल ^३भविष्यके पर

अदम—

सुहाग

रात कितनी मस्त है शौक क्या जवान है
फर्श-गुल है ज़ेरे-पा^१ सर पे आस्मान है
हर नज़र है इलतिजा हर अदा ज़बान है
अबरोओमे गीत है अँखडियोमे तान है
काश कोई छेड़ दे एक गिरह उधेड़ दे
गेसुओके जालको चारसू बिखेरकर
देखती हूँ रास्ता नयन फेर फेर कर
काश लाये चाँदनी कोई सैद^२ घेरकर
देख देख रे सजन अब न इतनी देरकर
आके मुझको भीच ले मयसे होठ सींच ले

मसऊद हुसैन—

गुलामोंका नाच

खी खी खी खी खी
मेरे अन्दर
आज हँसी फिर माता काली
सात पियासे जाग उठी है

^१पाँवके नीचे

^२शिकार

इस तनमे
 नाच रहा हूं मन—भैरोकी
 हर हर गतपर
 लेकिन कैसे भर पाऊंगा
 तेरा खप्पर
 खून कहाँ है, सोच यही
 खी खी खी खी खी
 सबसे बड़ा हूँ तेरा खप्पर
 बूढ़े दादा
 मुड़ोको भी तू है चाहता
 ताकि बनाके उनकी माला
 डाल गलेमे नाचे, आहा
 क्योंकि तेरे खूनमे नाची
 थी उनकी तलवारें
 अब जी भरके नाच
 और जी भरके पी
 तेरे साथ-तेरे कदमोपर
 नाचेंगे हम भी
 खी खी खी खी खी
 रोक सकेगी क्या जजीरे
 ये तो देगी ताल
 नाचो, नाचो सातो नाच
 इस चक्करसे
 इस मंदांसे
 बचके न जाए कोई भी
 खी खी खी खी खी

अहमदनदीम कासिमी—

थपकी

(एक किसान स्त्री अपने पतिसे)

मेरे बालोमें सरसोके तारे मेरे हाथोमें गन्दुमके छोशे^१
मेरी भोलीमें मक्कीके दाने मेरे दिलमें मुहब्बतके तोशे^२
तुन्द भोके मेरे हमसफर^३ हैं धूप मेरी सुनहरी सहेली
खेत मेरे खयालोके आँगन मैं इन्हीमें पली, इनमें खेली
मेरी आँखोमें तस्वीर तेरी मेरे होठो पै तेरी कहानी
मेरी बातोमें तेरे कसीदे^४ मेरा पन्दार^५ तेरी जवानी
भुटपुटे तक अभी हाथ तेरे हलकी हत्थीसे हटने न पाएँ
माँगकी तरह सीधी सियारे^६ आडी लीकोसे कटने न पाएँ
मैं यहाँ इन चटानो पै बैठी तुझको दोहे सुनाती रहूँगी
अपनी आवाजकी थपकियोसे हाथ तेरा बटाती रहूँगी

×

×

×

“सोपियोमें किसी जलपरीने कितनी मेहनतसे आँसू छिपाए
इन दहकते हुए आँसुओसे एक साहिरने^७ मोती बनाए
जब समुन्दरमें तूफान आया सोपियाँ साहिलोको^८ सिधारी
कैसा अधेर है—आँसुओसे ताजिरोने^९ दुकाने निखारीं”

×

×

×

^१गेहूँकी बाली ^२राहखर्च ^३यात्राके साथी ^४स्तुतिगान ^५अभिमान
^६हल चलानेसे जो गहरी लकीर धरतीमें पडती है ^७जादूगर ^८किनारो
^९व्यापारियो

मेरे प्यारे तेरी उँगलियोंने कितने दानोसे धरती सजाई
और दानोको सिक्के बनाकर तेरे मालिकने डफली बजाई

जलपरी हो कि दहकान मेरा लुट रहे हैं मगर, कौन जाने
आँसुओमे जहन्नम छिपे हैं गोलियाँ हैं ये गन्दुमके दाने

हाय मैंने यह क्या कह दिया है कोई सुनता न हो मेरा दोहा
आँसुओकी कहानीमे कैसे चमचमाने लगा सुख लोहा

‘तेग’ इलाहाबादी—

रात सुनसान है

(१)

मेज़ चुपचाप, घड़ी बन्द. किताबें खामोश
अपने कमरेकी उदासी पै तरस आता है
मेरा कमरा, जो मेरे दिलकी हरेक धडकनको
सालहा सालसे चुपचाप गिने जाता है
‘जह्दे-हस्तीकी’ कड़ी धूपमें थक जानेपर
जिसकी आगोशने बल्शा है मुझे माँका खलूस^१
जिसकी खामोश इनायतकी सुहानी यादें
लोरियाँ बनके मेरे दिलमें समा जाती हैं
मेरी तनहाईके एहसासको जायल^२ करने
जिसकी दीवारें मेरे पास सरक आती हैं

इसकी खामोश हँसी, इसकी बजाहिर रजिश^१
 कितनी मासूम भी है कितनी पुरअसरार^२ भी है
 जैसे कालिजकी कोई शाहिदए-सीम-बदन^३
 अपने सीनेमे मेरे राज लिये फिरती है
 सामने ताक पै रखी हुई दो तस्वीरे
 अक्सर औकात मुझे प्यारसे यँ तकती है
 जैसे मैं दूर किसी देसका शहजादा हूँ
 मेरा कमरा, मेरे माजीका हकीकी मोनिस^४
 आज हर फिक्र, हर एहसाससे^५ बेगाना है
 गर्दआलूदा^६ कलेन्डर पै अजन्ताके नकूश^७
 मेरे चेहरेकी लकीरोकी तरफ देखते हैं
 जैसे एक लाशकी फेली हुई बेबस आँखे
 अपने मजबूर अजीजोको तका करती हैं

(२)

ये किताबे भी मेरा साथ नहीं देती आज
 'कीटस'^१ की नज्म, 'अरस्तू'^२ के हकीमाना कौल^३
 सगे-मर्मरकी इमारतकी तरह साकित^४ हैं
 तू ही कुछ बात कर ए मेरे धडकते हुए दिल
 तू ही एक मेरा सहारा है मेरा मूनिस^५ है
 तू ही इस सर्द अँधेरेमे चरागाँ^६ कर दे
 लक्ष्मीदेवी मेरी बात नहीं सुन सकती
 मुझको मालूम है क्या बीत चुकी है तुझपर

^१दिखानेकी रजिश ^२रहस्यपूर्ण ^३रूपहले बदनवाली कुमारी ^४साथी
^५अनुभव ^६धूलसे अटा ^७चित्र ^८अंग्रेजीका प्रसिद्ध कवि ^९यूनानका महान
 विद्वान ^{१०}विद्वत्तापूर्ण कथन ^{११}निश्चल ^{१२}साथी ^{१३}दीप जला दे

मेरे चेहरेके सुलगते हुए जल्मोको भी देख
मेरी आँखो पै, मेरी फिफ्र पै पाबन्दी^१ है
मैं उसे चाहूँ भी तो याद नहीं कर सकता
तू उसे खोके तडप सकता है रो सकता है
और मैं लुटके भी फरियाद नहीं कर सकता

इसी आईनेने देखे हैं हमारे भगडे
यही जीना है जहाँ मैंने उसे चूमा था
इन कमीजोमे, इन उलझे हुए रुमालोमे
उसके बालोकी महक आज भी आसूदा^२ है
जो कभी मेरी थी इनकार पै भी मेरी थी
अब फकत बज्मे तसव्वुरमे नज़र आती है
रात भर जागके लिखी हुई तहरीरोसे^३
अब भी उन आँखोकी तस्वीर उभर आती है

(३)

चाँदनी खिलके निखर आई है दरवाज़ेपर
ओससे भीगते जाते हैं पुराने गमले
किस कदर नर्म है फूलोका सुहाना साया
कितनी दोशीजा^४ है सोती हुई कच्ची कलियाँ
जैसे वो होठ जिन्हे पाके भी मैं पा न सका
(ए तडपते हुए दिल और सँभल और सँभल
ये तेरी चापसे जाग उट्टेंगी तो क्या होगा)

^१प्रतिबन्ध
^४कुमारी

^२बसी है

^३कल्पनाकी महफिल

^४लेखी

सुबह क्या जाने कहाँ होती है कब होती है
जाने इन्सानने किस वक्त ये दौलत पाई
मेरी तकदीर यही सिलसिलए-शाम-ओ-सहर^१
मेरे कमरेके मुकद्दरमे^२ फकत शहनाई

तालिव बागपती—

दहक़ानी तड़की

(१)

उजला, निखरा, चोंदका टुकड़ा भूला भटका सुबहका तारा
फितरतका^३ वारस्ता^४ जलवा शबनमका आवारा कतरा
हुस्ने-मुजस्सम, पैकरे-जोहरा^५ गाँवकी मलका, दुख्तरे-सहरा^६

(२)

काँटोमे एक फूल खिला है सारा जगल महक रहा है
दुनिया उलटी घूम रही है पत्ती पत्ती भूम रही है
बेखुद है ख़ामोश फिज़ाएँ वज्दमे^७ है मदहोश हवाएँ
लूट रही है होशकी दुनिया गाँवकी मलका दुख्तरे-सहरा

(३)

बेतरतीब, परेशाँ गेसू अल्हडपन रदके-रमे-आहूँ^८
भरी भरी बिल्लोरी बाँहे तेज़ तेज़ बेबाक निगाहे

^१साँझ सवेरेका सिलसिला ^२भाग्य ^३प्रकृति ^४सजा हुआ ^५साकार
सौन्दर्य, सुन्दरताकी मूर्ति ^६जगलकी बेटा ^७मस्तीमे ^८हिरनकी चौक-
ड़ियोको भी जिसपर ईर्ष्या हो

लाला-रुख,^१ ताऊसी गर्दन^२ भोली सूरत, सादी चितवन
जूहीका नौरस्ता गुचा^३ गाँवकी मलका दुस्तरे-सहरा

(४)

जामुनकी एक शाख भुकाए चेहरेको पत्तोमे छिपाए
गालोको खोशोसे लगाए रस्तेवालोसे शर्माए
जानू पर एक पाँव उठाए यूँ खुदको तस्वीर बनाए
देख रही है रस्ता चलता गाँवकी मलका दुस्तरे-सहरा

(५)

पैरोमे केकरके बिछुए कानोमे सीकोके बाले
जेबे-गलूँ^४ कँवलकी माला आँखमे काजलका दुबाला^५
सीधे तीर चलानेवाली हिरनीको शर्मानेवाली
फरव्हे-बयाबाँ^६ आलम आरा^७ गाँवकी मलका दुस्तरे-सहरा

शेर अफज़ल जाफरी—

हीरके देसमें

आमोकी भूमती हुई मतवाली^८ छाँवमे
कोयल उँडेलती है नशे गाँव गाँवमे
आता है नींद बनके असर आस्मानसे
बरसात ऊँघती है छलकती हुआओमें

^१लाउचेहरा ^२मोरकी-सी गर्दन ^३नई कली ^४गलेकी शोभा बढ़ानेको
^५काजल की लकीर ^६जगलका गर्व ^७ससारको सजानेवाली

बूंदोकी मैगुसार^१ छमाछम पै भूमकर
 टेहरे^२ उछालता है जमाना फिजाओमे
 भूलोमे भूलती है शफक रग रानियाँ
 हलकोरे फाग खेलते हैं धूप छाँवमे
 घूँघट उलटके आती हैं चचल सुहागिने
 सूरज लजाके छिपता है काली घटाओमे
 मलमलके 'भोछनो'^३ मे थिरकते हैं जमजमे^४
 रुमान^५ घोलता है फसाने हवाओमे
 नाजुक कलाइयोमे छनकती हैं चूडियाँ
 पाजेबे भनभनाती हैं लचकीले पाँवमे
 बारीक आँचलोसे भलकती हैं दिलबारी
 एक पेग लहलहाती है उजली खिजाओमे
 मासूम अँखडियोमे चटकता है माहिया^६
 खिलती है मस्त मस्त बहारे अदाओमे
 गाती हैं नर्म नर्म धुनोमे सहेलियाँ
 पीता हैं वक्त फूल, तरघुम की^७ छाँवमें
 'अफजल' गुदाज 'भग'का यह प्यार आसपास
 कितना हसी इजाफा^८ है ताजा खुदाओमे

^१मदिरा बरसाती ^२देहाती बोल
^३पजाबी प्रेमगीत ^४लय, मगीत ^५वृद्धि

^६आँचल ^७गीत ^८रोमास

मजीद अमजद—

काँटे कलियाँ

तुमसे तो ये उसनेवाले काँटे अच्छे, हँसते फूलो
चचल काँटे—लॉबी दूबकी ठडी छाँवके मतवाले
अपनी जलती जलती जबाँसे चाट चाटके दुखते छाले
हर राहीका दामन थामके कहते हैं

“ओ जानेवाले

चलते चलते, जब तुम एक दिन फाँदके ये गुम सुम वीराना
दूर, किसी वादीके किनारे, खोलके अपने दिलका खजाना
डरते डरते छोडो कोई धीमा धीमा मस्त तराना
हमने ही यह बिसमे घोलके रस बल्शा था, भूल न जाना”
तुमसे तो ये उसनेवाले काँटे अच्छे—हँसते फूलो
जालिम फूलो—। कितने प्यासे ख्वाबोके बेताब हयूले’
कितनी ही जानोके बगूले,^१ खुशबूओके भूलेमे
घूमते लमहोके होठोको चूमके अपना रस्ता भूले
तुमसे तो ये उसनेवाले काँटे अच्छे

जॉनिसार 'अख्तर'---

हचकोले

(१)

एक लय सीनए-फिजामे जगाय नूर-ओ-जुलमतकी धूप छाँव रचाय
एक तसलमुलमे उड रहा है वक्त एक सियह एक सफेद पर फैलाय

(२)

यो दिलकी फिजामे खेलते हैं रह रहके उमीदके उजाले
छिप छिपके कोई शरीर लडकी आईनेका अक्स जैसे डाले

(३)

एक नई नज़्म कह रहा हूँ मैं अपने जज़्बातकी हसी तफसीर^१
किस मुहब्बतसे तक रही है मुझे दूर रखी हुई तेरी तस्वीर

शादीकी सालगिरह

[यह कविता श्री जॉनिसार अख्तरने २५ दिसम्बर '५२ को अपनी शादीकी सालगिरहपर अपनी पत्नी सफियाके नाम लिखी थी। लेकिन इसके तीसरे सप्ताह ही श्रीमती सफियाका लखनऊमे देहान्त हो गया। श्रीमती सफिया, हमीदा गर्ल्स कालिज भूपालमे प्रोफेसर थी। श्री

जाँ निसार 'अख्तर' ने दूसरी कविता 'खाके-दिल' पत्नीके मरनेपर लिखी है। दोनो कविताएँ किस दर्दमे डूबकर लिखी गई हैं इसका अन्दाज़ा पढ़ने से ही हो सकता है]

ये तेरे प्यारकी खुशबसे महकती हुई रात
अपने सीनेमे छिपाए तेरे दिलकी धड़कन
आज फिर तेरी अदासे मेरे पास आई है
अपनी आँखोमे तेरी जुल्फका डाले काजल
अपनी पलकोमे सजाए हुए अरमानोका ख्वाब
अपने आँचल पे तमन्नाके सितारे टाँके
रातकी जुल्फ पे फिर से तेरी अफशाँ^१ भलकी
नर्म किरने है कि लचकी हुई बाँहे तेरी
मेरे आगोशमे फिर चाँद उतर आया है
गुनगुनाती हुई यादोकी लवे जाग उठी
कितने गुज़रे हुए लमहोके^२ चमकते जुगनू
दिलको हालेमे लिये नाच रहे हैं कबसे
कितने लमहे कि तेरी जुल्फके सायेके तले
गर्क^३ होकर तेरी आँखोके हसी सागरमे
गमे-दौराँसे^४ बहुत दूर गुज़ारे मैंने
कितने लमहे कि तेरी प्यार भरी नज़रोने
किस सलीक़ेसे सजाई मेरे दिलकी महफ़िल
किस करीनेसे सिखाया मुझे जीनेका शऊर
कितने लमहे कि हसी, नर्म, सुबुक आँचलसे
तूने बढकर मेरे माथेका पसीना पोछा

^१कुमकुम

^२क्षणो

^३डूबकर

^४ससारके दुखो

चाँदनी बन गई राहोकी कडी धूप मुझे
 कितने लमहे कि गमे-जीस्तके^१ तूफानोमें
 ज़िन्दगानीकी जलाए हुए बासी मिशअल
 तू मेरा अज्मे-जवाँ^२ बनके मेरे साथ रही

कितने लमहे कि गमे-दिलसे उभरकर हमने
 एक नई सुबहे-मुहब्बतकी लगन अपनाई
 सारी दुनियाके लिये सारे जमानेके लिये
 उन ही लमहातके गुल रग शरारोका^३ तुझे
 गूँधकर आज कोई हार पिन्हा दूँ, आ जा
 चूमकर माँग तेरी तुझको सजा दूँ आ जा

खाके-दिल

(अपनी पत्नी सफिया अख्तरके स्वर्गवासपर लखनऊसे जाते हुए)

लखनऊ, मेरे वतन, मेरे चमनज़ार^४ वतन
 तेरे गहवारए-आगोशमें^५ ए जानेबहार
 अपनी दुनियाए-हसी दफन किये जाता हूँ
 तूने जिस दिलको धडकनेकी अदा बख्शी थी
 आज वह दिल भी यही दफन किये जाता हूँ

दफन है देख मेरा अहदे-बहाराँ^६ तुझमे
 दफन है देख मेरी रूहे-गुलिस्ताँ^७ तुझमे

^१जीवनका दुख ^२जवान साहस, सकल्प ^३फूलो ऐसी चिनगारियाँ
^४चमन, बाग ^५गोदका पालना ^६बसन्तका समय

मेरी गुलपोश^१ जवाँ साल उमगोका सुहाग
 मेरी शादाब तमझाके महकते हुए स्वाब
 मेरी बेदार जवानीके फरोजाँ मह-ओ-साल^२
 मेरी शामोकी मलाहत,^३ मेरी सुबहोका जमाल
 मेरी महफिलका फसाना, मेरी खिलवतका^४ फसूँ^५
 मेरी दीवानगिये-शौक,^६ मेरा नाज़े-जुनूँ^७
 मेरे मरनेका सलीका,^८ मेरे जीनेका शऊर^९
 मेरा नामूसे-वफा,^{१०} मेरी मुहब्बतका ग़रूर
 मेरी नब्जोका तरझुम,^{११} मेरे नगमोकी पुकार
 मेरे शैरोकी सजावट,^{१२} मेरे गीतोका सिगार
 लखनऊ ! अपना जहाँ सौप चला हूँ तुझको
 अपना हर स्वाबे-जवाँ सौप चला हूँ तुझको
 अपना सरमाय-ए-जाँ सौप चला हूँ तुझको
 लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन
 यह मेरे प्यारका मदफन^{१३} ही नहीं है तनहा
 दफन है इसमे मुहब्बतके खजाने कितने
 एक उनवानमे मुज़मर है फसाने कितने
 एक बहन अपनी रफाकतकी^{१४} कसम खाए हुए
 एक माँ मरके भी सीनेमे लिये माँका गुदाज़^{१५}
 अपने बच्चोके लडकपनकी कलेजेसे लगाय

^१फूलोकी पोशाक पहननेवाली ^२चमकते मास और वर्ष ^३नमकीनी
^४एकान्त ^५जादू ^६शौककी दीवानगी, पागलपन ^७जुनून
 दीवानगीका गर्व ^८ढग ^९ढग ^{१०}वफाका मान ^{११}नाडियोका मगीत
^{१२}कविताओकी सजावट ^{१३}कब्र,जहाँ दफन हो ^{१४}साथ देने ^{१५}नर्मि

अपने खिलते हुए मासूम शगूफोको^१ लिये
बन्द आँखोमे बहारोके जवाँ ख्वाब बसाये

यह मेरे प्यारका मदफन ही नहीं है तनहा
एक साथी भी तहे-खाक^२ यहाँ सोती है
अरस-ए-जीस्तकी बेरह्मा कशाकशका^३ शिकार
जान देकर भी जमानेसे न माने हुए हार
अपने तेवरमे वही अज्मे-जवाँ साल^४ लिये

यह मेरे प्यारका मदफन ही नहीं है तनहा
देख एक शमअ सरे-राहगुज़र^५ जलती है
जगमगाता है अगर कोई निशाने-मजिल
जिन्दगी और भी कुछ तेज़ कदम चलती है

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमन ज़ार वतन
देख इस ख्वाबगहे-नाज पै^६ कल मौजे-सबा^७
लेके नौरोजे-बहारोंकी^८ खबर आएगी
सुख फूलोका बडे नाजसे गूँधे हुए हार
कल इसी खाक प गुलरग सहर आएगी
कल इन्ही खाकके ज़रोंमे समा जायगा रग
कल यही प्यारकी तस्वीर उभर आएगी

ए मेरी रूहे चमन ! खाके-लहदसे^९ तेरी
आज भी मुझको तेरे प्यारकी बू आती है

^१अबोध कलियो अर्थात् बच्चो ^२खाकके नीचे, ^३जीवनकाल
^४सघर्ष ^५जवान डरादे, मकल्प ^६राहमे ^७प्यारके शयनका स्थान ^८पुरवा
हवाकी लहर ^९वसन्तके प्रथम दिन ^{१०}कब्रकी मिट्टी

जल्म सीनेके महकते हैं तेरी खुशबूसे
वह महक है कि मेरी साँस रुकी जाती है
मुझसे क्या बात बनाएगी जमानेकी जफा^१
मौत खुद आँख मिलाते हुए शर्माती है

मैं और इन आँखोंसे देखू तुझे पेवन्दे-जमी^२
इस कदर जुल्म ! नहीं, हाय नहीं ! हाय नहीं
कोई ऐ काश बुझा दे मेरी आँखोंके दिये
छीन ले मुझमें कोई काश निगाहे मेरी
ऐ मेरी शमए-वफा ऐ मेरी मजिलके चिराग
आज तारीक हुई जाती है राहे मेरी

तुझको रोऊँ भी तो क्या रोऊँ कि इन आँखोंमें
अटक पत्थरकी तरह जमसे गए हैं मेरे
जिन्दगी अरसागहे जेह्दे-मुसलसल^३ ही सही
एक लमहेको कदम थमसे गए हैं मेरे

फिर भी इस अरसागहे-जेह्दे-मुसलसलसे मुझे
कोई आवाज पैं आवाज दिये जाता है
आज सोता ही तुझे छोड़के जाना होगा
नाज यह भी गमे-दौराँका^४ उठाना होगा

जिन्दगी देख मुझे हुक्मे-सफर देती है
एक दिल शोला ब-जाँ "साथ लिये जाता हूँ
हर कदम तूने कभी अजमे-जवाँ बल्शा था
मैं वही अजमे-जवाँ साथ लिये जाता हूँ

^१समयके अत्याचार ^२धरतीका पेवन्द ^३अनवरत मघर्षकी जगह
^४जमानेके दुख ^५जलता हुआ

चूमकर आज तेरी खाके-लहदके ज़र्रें
 अनगिनत फूल मुहब्बतके चढ़ाता जाऊँ
 जाने इस सिम्त कभी मेरा गुज़र हो कि न हो
 आखिरी बार गले तुझको लगाता जाऊँ
 लखनऊ । मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन
 देख इस खाकको आँखोंमे बसाकर रखना
 इस अमानतको कलेजेसे लगाकर रखना

अनवर जलाल—

छः कविताएँ

इन्सान

मैं हूँ एक तस्वीर पुरानी
 लेकिन मेरे रंग नये हैं

इल्म

कितनी दिलचस्प-ओ-पुर-सुकून है ये
 रहगुज़र जिसकी इन्तहा ही नहीं

चाय

एक दोशीज़ाके^१ लबोकी तरह
 इसमें गर्मी भी है मिठास भी है

बिरहन

रोज सावनमे आस्मानके हाथ
आँसुओके खत भेजती हँ

तलाश

हर नई रात नई शमए-फरोजाँ लकर
यह सिसकता हुआ महताब किसे देखता है

बाल-रूम

रातको महवे-हमदमी^१ थे सब
सुबह जागे तो अजनबी थे सब

मजाज—

रात और रेल

फिर चली है रेल स्टेशनसे लहराती हुई
नीम शबकी^२ खामशीमे जेरे-लब गाती हुई
डगमगाती, भूमती, सीटी बजाती, खेलती
वादि-ओ-कोहसारकी^३ ठडी हवा खाती हुई
तेज भोकोमे वो छम-छमका मुरुदे-दिलनशी^४
आँधियोमे मेह बरसनेकी सदा आती हुई

^१जलती शमा ^२चाँद ^३एक दूसरेके साथ मगन ^४आधी रात
^५होठोमे ^६घाटी और पहाडी ^७मनोहर गाना

जैसे मौजोका तरन्नुम^१ जैसे जलपरियोके गीत
 एक एक लयमे हजारो जमजमे^२ गाती हुई
 नौनिहालोको सुनाती मीठी मीठी लोरियाँ
 नाजनीनोको सुनहरे ख्वाब दिखलाती हुई
 ठोकरे खाकर लचकती^३, गुनगुनाती, भूमती
 सरखुशीमे^४ घुघरुओकी तालपर गाती हुई
 नाजसे हर मोडपर खाती हुई सौ पेच-ओ-खम^५
 एक दुल्हन अपनी अदासे आप शर्माती हुई
 रातकी तारीकियोमे झिलमिलाती, कांपती
 पटरियोपर दूरतक सीमाब छलकाती हुई
 जैसे आधी रातको निकली हो एक शाही बरात
 शादियानोकी सदासे वज्दमे^६ आती हुई
 मुतशिर^७ करके फिजामे जाबजा चिगारियाँ
 दामने-मौजे-हवामे फूल बरसाती हुई
 तेजतर होती हुई मजिल-ब-मजिल दम-ब-दम
 रफता-रफता अपना असली रूप दिखलाती हुई
 सीन-ए-कोहसारपर चढ़ती हुई बेएख्तियार
 एक नागिन जिस तरह मस्तीमे लहराती हुई
 एक सितारा टूटकर जैसे रवाँ हो अंशसे
 रफअते-कोहसारसे^८ मैदानमे आती हुई
 एक बगूलेकी तरह बढती हुई मैदानमे
 जगलोमे आँधियोका जोर दिखलाती हुई

^१राग गीत ^२मस्ती ^३भूमती, लचकती ^४पारा ^५मस्ती ^६बिखेरकर
^७पहाडकी ऊँचाई

रअशा-बर अन्दाम^१ करती अजुमे शब-ताबको^२
आशियाँमे तायरे-वहशीको^३ चौकाती हुई
याद आ जाए पुराने देवताओका जलाल^४
इन कयामत-खेजियोके साथ बल खाती हुई

एक रस्से-बेअनाँकी^५ बर्क-रफ्तारीके साथ
खन्दकोको फाँदती टीलोसे कतराती हुई
मर्गजारोमे दिखाती जूए-शीरीका खराम^६
वादियोमे अब्रके मानिन्द मडलाती हुई

एक पहाडीपर दिखाती आबशारोकी^७ झलक
एक बयाबाँमे चरागे-तूर दिखलाती हुई
जुस्तजूमे मजिले-मकसूदकी दीवानावार
अपना सर धुनती फिजामे बाल बिखराती हुई

छेडती एक वज्रके आलममे साजे-सरमदी^८
गैजके आलममे मुँहसे आग बरसाती हुई
रेगती, मुडती, मचलती, तिलमिलाती हाँपती
अपने दिलकी आतिशे-पिनहाँको भडकाती हुई

खुदबखुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई
शोरे-पैहमसे दिले गेतीको धडकाती हुई
पुल पै दरियाके दमादम कौँदती, ललकारती
अपनी इस तूफान-अगेजी^९ पै इतराती हुई

^१कम्पित ^२रातको चमकनेवाले तारे ^३जंगली पक्षी ^४तेज ^५बेलगाम
घोडा ^६विद्युतगति ^७भीठे जलवाली नहरका प्रवाह ^८भरनो ^९ईश्वरीय
ज्योति, जो मूसाने तूर पर्वतपर देखी थी ^{१०}स्वर्गीय-सगीत ^{११}तूफानी चाल

पेश करती बीच नद्दीमें चरागाँका सम^१
साहिलोपर रेतके जर्रोको चमकाती हुई
मुँहमे घुसती है सुरगोके यकायक दौडकर
दनदनाती, चीखती, चिघाडती, गाती हुई

आगे आगे जुस्तज-आमेज^२ नजरे डालती
शबके हँबतनाक^३ नज्जारोसे घबराती हुई
एक मुजरिमकी तरह सहमी हुई सिमटो हुई
एक मुफलिसकी तरह सर्दीमे थरती हुई

तेजिए-रफ्तारके सिक्के जमाती जा-ब-जा
दस्त-ओ-दरमे^४ ज़िन्दगीकी लह लह दौडाती हुई
डालकर गुजरे मनाज़िरपर^५ अँधेरेका नकाब
एक नया मज़र नज़रके सामने लाती हुई

सफह-ए-दिलसे^६ मिटाती अहदे-माज़ीके^७ नक़्श
हाल-ओ-मुस्तकबिलके दिलकश ख़्वाब दिखलाती हुई
डालती बेहिस^८ चटानोपर हिकारतकी^९ नज़र
कोहपर हँसती, फलकको आँख दिखलाती हुई

दामने-तारीकिये-शबकी उडाती धज्जियाँ
कखे-ज़ुलमतपर^{१०} मुसलसल तीर बरसाती हुई
जदमे^{११} कोई चीज़ आ जाए तो उसको पीसकर
इरतकाए-ज़िन्दगीके^{१२} राज़ बतलाती हुई

^१जिज्ञासामय ^२भयानक ^३जगल-पहाड ^४दृश्यो ^५हृदयपट ^६अतीत
काल ^७निश्चेष्ट ^८घृणा ^९अन्धकारके महल ^{१०}बीचमे, ^{११}रास्तेमे
^{१२}जीवनके विकास

जोममें पेशानिये-सहरापै^१ ठोकर मारती
फिर सुबुक-रफ्तारियोके^२ नाज दिखलाती हुई
एक^३ सरकश फौजकी सूरत अलम^४ खोले हुए
एक तूफानी गरजके साथ दरती^५ हुई
एक एक हरकतसे अन्दाजे-बगावत आशकार
अजमते-इन्सानियतके^६ जमजमे गानी हुई
हर कदमपर तोपकीसी घन गरजके साथ साथ
गोलियोंकी सनसनाहटकी सदा आती हुई
वह हवामे सैकड़ो रगी दोहल^७ बजते हुए
वह बिगुलकी जाँफिजा^८ आवाज लहराती हुई
अलगरज उड़ती चली जाती है बेखौफ-ओ-खतर
शायरे-आतिश-नफसका^९ खून खौलाती हुई

अंधेरी रातका मुसाफिर

जवानीकी अंधेरी रात है जुलमतका तूफाँ है
मेरी राहोसे नूरे-माह-ओ-अजुम तक गुरेजाँ है^१
खुदा सोया हुआ है अहमन^२ महशर बदामों^३ है
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढता ही जाता हूँ
गम-ओ-हिरमाँकी यूरिश^४ है, मसायबकी^५ घटाएँ है
जुनूकी फितना-खेजी हुस्नकी खूनी अदाएँ है

^१जगलके माथे ^२मन्द गति ^३झुंडे ^४घुसती ^५मानवताकी महानता
^६नगाडे ^७जोश बढ़ानेवाली ^८आगकी-सी साँस लेनेवाले कवि, जिस
कविकी साँस आगकी-सी हो, क्रान्तिकारी कवि ^९चाँद तारोकी ज्योति तक
भाग रही है ^{१०}, ^{११}शैतान प्रलयको साथ लिये हुए ^{१२}हमला ^{१३}विपत्तियो

बड़ी पुरजोर आँधी है, बड़ी काफिर बलाएँ हैं
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

फिजामे मौतके तारीक साये थरथराते हैं
हवाके सर्द भोके कल्बपर खजर चलाते हैं
गुज़शता अज़मतोके ख्वाब आईना दिखाते हैं
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

जमी ची बरजबी^१ है आस्माँ तखरीबपर^२ मायल
रफीकाने-सफरमे कोई बिसमिल है कोई घायल
तआकुबमे लुटेरे हैं, चटाने राहमे हायल^३
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

उफकपर जिन्दगीके नज़ारे-जन्मनमा डेरा है
हवादिसके^४ कयामतखेज तूफानोने घेरा है
जहाँ तक देख सकता हूँ अंधेरा ही अंधेरा है
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

चरागे-देर,^५ फानूसे-हरम,^६ कन्दीले-रहबानी
ये सब है मुद्तोसे बेनियाज़े-नूरे-इरफानी^७
न नाकूमे ब्रह्मन है, न आहगे-हुदी ख्वानी^८
मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

तलातुमखेज दरिया आगके मैदान हायल है
गरजती आँधियाँ, बिफरे हुए तूफान हायल है

^१माथेपर बल डाले विगाड़ने, विध्वंस पीछा करने ^२बाधक
^३अन्धकारकी मेना ^४दुर्घटनाओ ^५मादिग-दीप ^६मसजिदका चिराग
^७गिरजाकी कन्दील ^८ईश्वरीय ज्योति ^९ईश्वरीय स्तुति

तबाहीके फरिश्ते जन्नके शैतान हाथल है
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ
 फिजामे शोलाअफशाँ देवे-इस्तिब्दादका' खजर
 सियासतकी सनाने अहले-जरके खूँचकाँ तेवर
 फरेबे-बेखुदी देते हुए बिल्लूरके सागर
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ
 बदीपर बारिशे-लुत्फ-ओ-करम, नेकी पै तकरीरे
 जवानीके हसी ख्वाबोकी हैबत नाक ताबीरे
 नुकीली तेज सगीने है, खूँ आशाम शमशीरे
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ
 हुकूमतके मज्जाहिर' जगके पुरहौल' नक्शे है
 कुदालोके मुकाबिल तोप, बन्दूके है नेजे है
 सलासिल, ताजियाने, बेडियाँ फाँसीके तरस्ते है
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ
 उफकपर जगका खूनी सितारा जगमगाता है
 हर एक भोका हवाका मौतका पैगाम लाता है
 घटाकी घन-गरजसे कल्बे-गेतो' काँप जाता है
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ
 फनाके आहनी वहशत असर कदमोकी आहट है
 धुँकी बदलियाँ है, गोलियोंकी सनसनाहट है
 अजलके कहकहे है जलजलोकी गडगडाहट है
 मगर मैं अपनी मजिलकी तरफ बढ़ता ही जाता हूँ

^१दमनका देवता ^२तलवारे ^३धनवान ^४क्रुद्ध ^५कृपाकी वर्षा ^६खून-भरी तलवारे ^७प्रदर्शन ^८भयानक ^९जजीरे ^{१०}क्षितिज ^{११}पृथ्वीका हृदय

‘साहिर’ लुधियानवी—

तुलूए-इश्तराकियत

(समाजवादका उदय)

जश्न बपा है कुटियाओमे ऊँचे ऐवाँ काँप रहे हैं
मजदूरोके बिगड़े तेवर देखके मुलताँ काँप रहे हैं
जागे हैं अफलासके मारे, उट्ठे हैं बेबस दुखियारे
सीनोमे तूफाँका तलातुम^१ आँखोमे बिजलीके शरारे^२

चौक चौकमे गली गलीमें सुख फरेरा लहराते हैं
मजलूमोके बागी लशकर सैलसिफत उमडे आते हैं
शाही दरबारोके दरसे फौजी पहरे खत्म हुए हैं
जातो जागोरोके हक और मुहमल दावे खत्म हुए हैं

शोर मचा है बाज़ारोमे टूट गए दरज़िन्दानो के
वापस माँग रही है दुनिया गसबशुदा^३ हक इन्सानोके
रुसवा बाज़ारी खातूने^४ हक्के-निसाई^५ माँग रही है
सदियोकी खामोश ज़बानें सेह्नवाई^६ माँग रही है

रौंदी कुचली आवाज़ोके शोरसे धरती गूँज उठी है
दुनियाके अन्याय नगरमे हककी पहली गूँज उठी है

^१महल ^२वादशाह दरिद्रता ^३उथल पुथल ^४चिनगारियाँ
^५जेलो, कारागारोके द्वार ^६छीने हुए ^७बदनाम-बाज़ारी स्त्रियाँ,
वेश्याएँ ^८भली स्त्रीयोके अधिकार ^९जादू भरी आवाज

जमा हुए हैं चौराहोपर आकर भूखे और गदागर
 एक लपकती आँधी बनकर एक लपकता शोला होकर
 काँधोपर सगीन कुदाले, होठोपर बेबाक तराने
 दहकानोके^१ दल निकले हैं, अपनी बिगड़ी आप बनाने
 आज पुरानी तदबीरोसे आगके शोले थम न सकेंगे
 उभरे जज्बे दब न सकेंगे उखड़े परचम^२ जम न सकेंगे
 राजमहलके दरबानोसे ये सरकश तूफाँ न रुकेगा
 चन्द किरायेंके तिनकोसे सैले-बेपायाँ न रुकेगा
 काँप रहे हैं जालिम सुलताँ, टूट गए दिल जब्बारोके^३
 भाग रहे हैं जिल्ले-इलाही, मुँह उतरे हैं गद्दारोके
 एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी जौबारी^४ है
 खत्म हुई अफरादकी^५ शाही, अब जम्हूरकी^६ सालारी है

आवाजे-आदम

(मानवकी आवाज)

दबेगी कब तलक आवाजे-आदम^१ हम भी देखेंगे
 रुकेंगे कब तलक जज्बाते-बरहम^२ हम भी देखेंगे
 चलो यूँ ही सही, यह जौरे-पैहम^३ हम भी देखेंगे

^१किसानो ^२ध्वज ^३भारी बाढ़ ^४जुलम-ज्यादती करनेवाले
 "भगवानकी छाया, बादशाहको भगवानकी छाया कहा जाता
 था ^५प्रकाशकी वर्षा ^६व्यक्तियों ^७जनता ^८मानवकी आवाज
^९बिगड़े, रोषपूर्ण भाव ^{१०}लगातार जुलम

दरे जिन्दाँसे देखे या उरूजे-दारसे^१ देखे
 तुम्हे रुसवा सरे-बाजारे-आलम हम भी देखेंगे
 ज़रा दम लो मआले शौकते-जम हम भी देखेंगे
 ब-जोमे, कूवते-फौलाद-ओ-आहन देख लो तुम भी
 ब-फंजे-जज्बए-ईमाने-महकम^२ हम भी देखेंगे
 कहाँ तक है तुम्हारे जुलमे^३से दम हम भी देखेंगे
 ये हगामे-विदाए-शब^४ है ए जुलमतके फरजन्दो
 सहरके दोशपर गुलनार परचम हम भी देखेंगे
 तुम्हे भी देखना होगा ये आलम हम भी देखेंगे

तस्त्वमिह—

भून्ती बिसरी रात

पिछली रातका चाँद दिखाई देता था कुछ यो तारोमे
 जैसे कोई जानबूझकर कूद रहा हो अगारोमे
 धरतीसे आकाश तलक किन्नोका सुन्दर जाल बिछा था
 राज था सपनोका सब जगपर छाया हुआ एक सन्नाटा था
 लहरोकी मुँहजोर सिलबटोमे नद्दी बिस घोल रही थी
 धीमे धीमे मधुर स्वर्गोमे शायद वह कुछ बोल रही थी
 पेड किनारे पर भीगी पुरवासे काँप रहे थे थरथर
 रह रहकर एक आध अनदेखा पछी चीख उठता था जिनपर

^१फाँसीकी ऊँचाई ^२शहशाहीकी शानका अन्त ^३दृढ़ ईमानकी भावनाके कारण ^४रातके विदा होनेके समय

दूर एक पर्वतकी ऊँची चोटीपर एक छोटीसी बदली
 क्या जाने पूरबके धुंधले मडलमे क्या ढूँढ रही थी
 ऐसेमे हम दोनो एक हलकीमी नन्ही नावमे बैठे
 झिलमिल झिलमिल करते पानीकी छातीपर तैर रहे थे
 तेरे खूब पै परेशाँ काकुल खेल रही थी नर्म हवासे
 रूपमे तेरा सुन्दर मुखडा कही सुहाना था चन्दासे
 बिजली ऐसा नूर आँखोमे दिखाई देता था कुछ ऐसे
 जलते हो दो नन्हे नन्हे दीपक काली रातमे जैसे
 रह रहकर सारीका आँचल कन्धेपरसे ढलक जाता था
 रह रहकर तुझसे कुछ कहनेको मेरा जी ललचाता था
 लेकिन रुक जाती थी होठोपर जो बात उठती थी मनमे
 प्रेमकी चंचलता उलझी थी लालकी अनसुलझी उलझनमे
 भूम रहा था जागते सपनोका ससार आँखोमे ऐसे
 ओसके मोती भूल रहे हो फूलोके भूलोमे जैसे
 अग अग बेचैन था, चप्पू हाथोसे छूटा जाता था
 और यूँ मेरे सबका प्याला रह रहकर छलका जाता था
 एकाएकी तूने भरी एक ठडी साँस अँगडाई लेकर
 चुपकी थकनसे बाज़ आई थी, सरको रखा मेरे काँधेपर
 फिर क्या था दिल ऐसा मचला अपने आपको भूल गया मैं
 जोरसे तुझको भीचकर अपनी बाँहोमे कुछ बोल उठा मैं
 एक मैं क्या आकाशके तारे भी वह रात नही भूले हैं
 जिसको गुजरे आज तो लगभग चार महीने बीत गये हैं
 अब भी उसकी याद मचा देती है एक हलचलसी मनमें
 ऐसी रात नही आती है पलटकर क्यो मेरे जीवनमें

राजा मेहदी अली खाँ—

टेढ़ी लकीर

दुनिया हरगिज गोल नहीं है ढोलके अन्दर पोल नहीं है
मजनूँकी दुश्मन थी लैला मुसलमान था भाई छैला
उल्लू रातको सो जाते हैं तोते गुलाबी हो जाते हैं
अफलातूनकी छै माँ थी कुछ भैसे थी, कुछ गाये थी
जुगनूसे सिंग्रेट सुलगाओ धूपमे अपने अश्क सुखाओ
चोरको चोरीसे मत रोको शेर कहे शायर तो टोको
सबसे बड़ी हस्ती है शैताँ दुबला है राजा मेहदी अली खाँ

रज़ी अख्तर शौक—

उनके नाम

(जिनके और मेरे बीच मीलोका फासला है)

रात है सलोनीसी
रात है सुहानीसी
निस्फ शबका^१ सन्नाटा
जैसे सोगमें बेवा
मृतशिर^२ हवाओमें

^१आधी रात

^२बिखरी

गेसुओकी खुशबू है
 चाँदनीकी अँगड़ाई
 दिलको गुदगुदाती है
 नीलगूँ दरीचेसे
 भाँकते हुए तारे
 रोशनीके फौवारे
 पुरस्कृत' हैं धरती
 रास्तोके मोड़ोपर
 खामुशीकी शहनाई
 रहगुजरकी शमओपर
 यासकी' हकूमतसी
 कारवाँ सितारोका
 थक गया है चल चलकर
 चाँद, जैसे यरकाँका
 एक मरीज बिस्तरपर
 करवटें बदलता हो
 औजे-चखपर जोहरा'
 हाथमे लिये बरबत
 रागिनीके फूलोको
 सामेआके दामनमें
 फेकती है रह रहकर
 कहकशाँके' माथेपर
 नूरपाश' है भूमर
 एक मल्ल खामोशी'

'शान्तिपूर्ण' निराशा 'कँवल' रोग 'आकाशकी' ऊँचाई, पर मुन्दरी
 'बाजा' 'कानो' 'आकाशगंगा' 'ज्योति' फैला रहा है उदास मौन

जैसे रक्समे^१ नागिन
बह्ल-ओ-बर पै तारी है
घटा घरका रह रहकर
दिल धडकने लगता है

(२)

ऊँचे ऊँचे बगलोके
खशनुमासे कमरोमे
पास नर्म सोफोके
रेशमीसे बिस्तरपर
रूपयोके घुँघुरूपर
पायलोके बरबतपर
हाथमे लिये सागर
हुस्न रक्स करता है
और हवसके^३ कदमोमे
इश्क तिलमिलाता है
गुचे रौंदे जाते हैं
इसमते सिसकती है
ताजगी बिलखनी है
और हवसके आसूदा^४
कहकहे उमँडते हैं

(३)

मुफलिसोके ख्वाबोमे
भूतकी तरह खुश-रू^५

^१नाचमे ^२सागर ओर धरती ^३लोभ ^४सन्तुष्ट ^५शैतान

साँप जसे साहूकार
 आदमीनुमा डबलीस'
 अहले-गर्बका कुत्ता
 जिस्मे-अदलका नासूर
 दागे-आरिजे तहजीब'
 कर्जके तकाजोके
 डकसे लगता है
 और यह असीरे-यास'
 सर्वसी जबीनोपर
 खौफका लिये भौचाल
 चौक चौक पडते हैं

(४)

अपने सर्व बिस्तरपर
 मैं पडा हुआ तनहा
 सोचता हूँ रह रहकर
 घूरता हूँ तारोको
 पासके मज्जारोको
 सीमतन फिज्जाओको
 सोचनेके आलममे
 बेखुदीसी' होती है
 कोई याद आता है
 ख्वाब जाग उठते हैं

'पश्चिमवालो' न्यायके शरीरका नासूर 'सभ्यताके कपोलका
 दाग 'निराशाका वन्दी' रुपहले 'वायुमंडल' 'आत्म-विस्मृति

नाचती हैं आशाएँ
 और फिर फिजाओमे
 एक परी उतरती हैं
 महके महके फलोका
 हाथमे लिये एक हार
 गेमुओको बिखराए
 आरिजोको दहकाए
 भीगी भीगी पलकोपर
 आँसुओका भुर्मुटसा
 आहका धुआँ लेकर
 कर्ब ओर फुगाँ लेकर
 सुमगी निगाहोमे
 यासकी लिये जुलमत
 हाथमे लिये शमएँ
 रास्ता दिखाती हैं
 और मेरे पास आकर
 मोडती हुई आँचल
 मुस्कराने लगती हैं
 और मेरी रग रगमे
 आगसी दहकती हैं
 टीससी लहकती हैं
 और मेरी आँखोमे
 अश्क झिलमिलाते हैं
 चाँद काँप उठता है
 तारे थरथराते हैं
 आस्मोंके दामनसे

चार छै सितारोकी
 एक लकीर लहराकर
 सूए-अज्जे-बेपायाँ
 लडखडाके गिरती है
 और वह परी बढकर
 मुझसे कहने लगता है
 मैं हूँ गो कि सरहद पार
 तुमसे फासलेपर हूँ
 पर उदास मत होना
 मेरा दिल तुम्हारा है
 मेरी चश्मे-मयगूँकी
 मस्तिष्माँ तुम्हारी ह
 मेरे पतले पतले लब
 मेरा चाँदसा मुखडा
 मेरी रातसी जुल्फे
 मेरा खन्दए-मीमी
 सबके सब तुम्हारे हे
 आओ कि तुम्हारे अश्क
 अपनी आँखमे ले लूँ
 मेरी रेशमी पलके
 पोछ दे इन्हे हमदम
 आओ हार पहनाऊँ
 पहनो हार पहनाऊँ

'पृथ्वीकी ओर जिम्का ओर छोरे न हो 'गराबी आँख 'रुपहली
 हँसी 'माथी

‘पयाम’ फतेहपुरी—

चौपदे

हर घड़ी तीरा-गाम’ आती है
सुब्ह भी बनके शाम आती है
मौत देती है आदमीको पनाह
जिन्दगी किसके काम आती है

बेदिली गम-असर न हो जाए
इश्ककी पर्दादिर’ न हो जाए
मौतकी आरजूसे डरता हूँ
जिन्दगीको खबर न हो जाए

केफ-ओ-मस्तीसे’ खेलता हूँ मैं
अपनी हस्तीसे खेलता हूँ मैं
जिससे बढ़ती है अजमते-इन्साँ
ऐसी पस्तीसे खेलता हूँ मैं

मुशकिले है लाख कोई गम नहीं
मैं नहीं या गर्दिशे-आलम’ नहीं
जिन्दगी फिक्र-ओ-अमलका नाम है
जिन्दगी तकरीरका मातम नहीं

‘अँधियारेमे चलती’ दुखका प्रभाव रखनेवाली पर्दा उठानेवाली
‘नशा और मस्ती’ मनुष्यकी महानता कालचक्र

मुजफ्फर अली मैयद—

होरी

खेल खेलकर छोरी

हमने

होरी रग भरी

मन ही मनमे रग बसावे, मिलकर बज चले

साँवरियोके दर्शन पावे, काहे बंठे जले

आँगनमे पिचकारि चलावे, मुँह पे गुलाल मले

नयननमे, सखी, धूम मचावे, खेले मनकी होरी

हमने खेल खेलकर छोरी

होरी रगभरी

त्यागका भेस उतार, सखीरी, कुमकुम बिदिया लगाएँ

लाल हमार, खिलार भये है, हम काहे शर्माएँ

अग भिचे रसरगमे, आली, रैन दिना सुख पाएँ

केसर इत्र मले भर भोरी, साजन द्वार चलोरी

हमने, खेल खेलकर छोरी

होरी रग भरी

कैफी आजमी--

हक्कीकतें

(वास्तविकताएँ)

आज हर दिनसे ज़ियादा है हलाकतका' अमर
दद रग रगमे है दोहरी हुई जाती है कमर
ये गिरानी, ये मेरा खर्च, ये कुछ सिक्का-ज़र
कजख्वाहोकी युरिश होगी अभीसे घरपर
और घरमे गमे-उसरतके सिवा कुछ भी नही
उफ ये सिक्के, ये शब-ओ-रोज़की मेहनतका मआल
जिनका पाना भी बबाल' और न पाना भी बबाल
जिनको मुट्ठीमे ज़रा देर ठहरना है महाल
खीचे लेता है जिन्हे ज़र के खुदाओं का जलाल
हक मेरा उन पै ज़ियारतके सिवा कुछ भी नही
वो रफीका वो मेरी मूनिसे-इखलास पनाह
जिसकी मदकूक जवानी है मसायबकी गवाह'
दामने-कस्दे-तबस्सुममे समेटे हुए आह
देरसे होगी मेरे वास्ते जो चश्म-बराह''
नज़्रको उसकी निदामतके'' सिवा कुछ भी नही

'मोत' हमले 'दरिद्रता' 'भभट, बवाल' 'असम्भव'
'तेज, प्रताप' 'सगिनी, सच्ची साथी जिसमे मच्चाई शरण लेती है'
'जिसकी क्षयग्रस्त जवानी विपदाओकी गवाह है' 'मुस्कराहटके इरादेके'
अचलमे 'आँखे बिछाए' 'पश्चात्ताप'

पजए-मर्गसे हस्तीको छुड़ाऊँ क्योकर
 लटको रह्यो आईन सिखाऊँ क्योकर
 फर्कजर' पाय मशक्कत पे भुकाऊँ क्योकर
 गर्द-अफलासको अक्सीर बनाऊँ क्योकर
 मेरे कब्जेमे तो मेहनतके सिवा कुछ भी नही
 बेक, ये बेक, ये फिरदौसे-हवस, जन्नते-जर
 ये लचकती हुई लबरेज खजानोकी कमर
 बह्ये-बेआब-ओ-तलातुमके ये खुशआब गुहर'
 बाग्ये-बेखार-ओ-खिजाके ये तिलापोश समर
 हाँ मेरी फालत मेहनतके सिवा कुछ भी नही
 रास आता है जिन्हे मशगल-ए-जौर-ओ-जफा
 जिनकी आँखोमे शराबत है तबीअतमे दगा
 खने-मुफलिससे किया करते हे जो कस्बे-हिना'
 उनकी दुनियामे सभी कुछ है मुसीबतके सिवा
 मेरी दुनियामे मुसीबतके सिवा कुछ भी नही
 लटके मुँह पे ये तक्मीमे-अजलका' पर्दा
 कालिबे-अद्लमे ढाली हुई ये रुहे-जफा'
 लौहे-अफलास पे यह कतबए-मशाए-खुदा''

'धनके मिर, पजीपतिके मिर' मेहनतके पाव गरीबीकी धूल
 'लोभका स्वर्ग' धनका स्वर्ग भरे खजानो एसे मागरके आबदार
 मानी जिसमे न पानी हो न तूफान 'एसे बागके मुनहरे फल जिनमे
 न काँटे हो न पतभट्ट हो जिन्हे दूसरोपर जुल्म ज्यादाती करनका
 खेल पसन्द आता है जो गरीबोके खूनसे अपने चेहराको लाल बनाते हे
 "आदिकालमे बँटवारेका पर्दा" न्यायके ढाँचेमे "अत्याचारकी आत्मा
 "दरिद्रताके कागजपर लिखित ईश्वरेच्छा

ताके-हस्तीमे ये रक्खा हुआ बुत किस्मतका
एक अमल सोज सियासतके' मिवा कुछ भी नही

गुलशने-जौरकी सम-रेज -ओ-खिजाँ पाश बहार
दोजखे-जरके उडाए हुए जा सोज शरार'
नफा खोरोको निगाहोमे लचकतो तलवार
बढते जाते हैं शब-ओ-रोज' ये सारे आसार
कि इलाज इसका बगावतके सिवा कुछ भी नही

सैयद मुन्तलबी फगीदावादी—

इस सावनमे उस सावनकी याद

मनाजिर वहाँके, वहाँकी हवाएँ वो रगी फिजाएँ वो शीरीं^१ सदाएँ
बहुत चाहते हैं कि अब भूल जाएँ मगर क्या करे जब वो खुद याद आएँ

वो सावन, वो बरखा, वो ठडी हवाएँ हसीनोके भुर्मुट पैं रोखोकी' छाएँ
भुके डाले अँबियाकी, जब ले वो पेगे वो कोयलसी कूके, हँसे खिलखिलाएँ
हर एक भूँटा पुरवाके सीनेको चीरे डुपट्टोके पल्लू उडे फडफडाएँ
वो ले अन्तरा मुँकियोको लगाकर तो मद्धमसे उठठे वो पचमको जाएँ

×

×

×

पडे थाप ढोलक पैं तो भूले छोडे नए राग छेडे, नए सुर उठाएँ
भरे राग दिलमे, हवामे, फिजामे वो बेखुद हो इतनी कि खुदको भुलाएँ

‘अमल, क्रियाको जलानेवाली राजनीति , विषाक्त आर पतभङ्ग
लानेवाला वसन्त ‘पूँजीके नरककी जानको जलानेवाली
चिनगारियाँ रात दिन दृश्यावली ‘मधुर ‘पेड

कोई मदमे गर आके ठुमकी लगा दे वो यो मिलके नाचे कि धरती उठाएँ
जो ढोलक रुके, फिर ये सब थकके बैठे पसीनोको पोछे, हँसे, गुदगुदाएँ

×

×

×

कोई गैर गुजरे तो घूँघटसे भाँके जो हो आशना उस पै बिजली गिराएँ
नज़रबाजियाँ इनका शेवा नही ह कोई रुकके टीपे तो गाली सुनाएँ
भरन आए एकदम तो हुल्लड मचाती ये सब चीखती-भीगती, भाग जाएँ

×

×

×

सरे-शाम नही पै परियोंके मेले कुछ ऐसे कि पानीमे लूका लगाएँ
हरी दूबमे पीले बानोकी हलचल चँबेलीमे कलियोका जलवा दिखाएँ
भुके कुछ जो पानीको चुल्लूमे लेने तरंगो पै कुछ आएँ धक्के लगाएँ

जवानीका आलम, तरंगे उमगे कई गिर पडे और कई कूद जाएँ
वो पानीमे लहरे, वो लहरो पै आँचल वो डुबकी, वो गोते कि दिल डूब जाएँ
चिमट जाय कुर्ती, उभर आएँ छतियाँ वो कुन्दन बदन, वो जवानीकी बाँहे

उतारे वो कपडे किनारे पै फेके वो यो 'बोझ' से अपना पीछा छुड़ाएँ
निहग अब बनी सब वो नगी धडगी या उतरी हे आकाशसे अप्सराएँ

×

×

×

अँधेरा पडे यो हो वो घरमे दाखिल कि आती हँ भीगी हुई फास्ताएँ

×

×

×

जो चाहे मैं ये भूल जाऊँ नज़ारे महीनोसे सावनके कहदो 'न आएँ'

धरती मां

तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले धरती माँ छातीसे लगा ले
पच्छिम उमड़े बादल काले पूरब फँले धुँके गाले
पटम हुए सब आँखोवाले कौन भला इस कालीको टाले
खाँडा बाजे चमके भाले नाग खड़े जूँ जीब निकाले
तोपे खोल रही धम्माले तड तड, तड तड गोली चाले
कट कट गिरते गोरे काले बह लागे खूनके नाले
सारे किसान हैं सारे ग्वाले सब मजदूरी करनेवाले
आ अम्बरमे कौन सँभाले तेरे ही बच्चे, तेरे ही बाले
धरती माँ छातीसे लगा ले

रैन अँधेरी फिर अँधियारी सागर काले धरती काली
जगल भुलसे फक गई डाली हर हर डाली काली काली
गरजे तोप तो फँले लाली ये लाली खूँ पीनेवाली
कशनी तेरी धूनी काली तू बन और बन तू बनवाली
सागर हिल गया तोप बो चाली डूबी नाव न डूबनवाली
डूबनवालोंने कुल्ली निकाली ना कोई वारिस न कोई माली
इन डूबोको कौन निकाले तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
धरती माँ छातीसे लगा ले

ये मेहनतमे जुटनेवाले रात दिना ये लुटनेवाले
सूत बान ये बटनेवाले मीलो सडकोमे पटनेवाले

दीन धर्मपर मिटनेवाले जेलोमे ये कुटनेवाले
 शोरो जैसे डटनेवाले अडकर फिर ना हटनेवाले
 देश पै मरने कटनेवाले गिरनेवाले उठनेवाले
 नाम खुदाका रटनेवाले धोकोपर मर मिटनेवाले
 इन फँसतोको कौन बचा ले तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
 धरती माँ छातीसे लगा ले

दोनो ओर किसानोके दल ह भूखो और कगालोके दल हें
 मूरख और अनजानोके दल हें मजदूरोके किसानोके दल हें
 सबपर छाए जालोके दल ह गोरो पीलो कालोके दल हें
 धन और दौलतवालोके दल हें लक्ष्मीके मतवालोके दल हें
 मसजिद, गिरजा, शिवालोके दल हें भूटे सच्चे खयालोके दल हें
 मौ धोकोमे किसानोके दल हें मरते कटते जवानोके दल हें
 इन धोकोसे कौन निकाले तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
 धरती माँ छातीसे लगा ले

इस बादलके पीछे माता देखे गहरी ऊखोकी माला
 इसपर मुन्दर उनपर छाया इस छायामे लाल फरेरा
 इस भडके नीचे माता बाजे है मजदूरोका डका
 कही है कगालीका रोना ना कोई बैरी ना कोई दुखिया
 ना कही साहूकारोका डाका ना राजा खू पीनेवाला
 फूलो जैसा सबका चेहरा हर एक जिन्दा बूढा बच्चा
 ये भी हें माता तेरे ही पाले तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
 धरती माँ छातीसे लगा ले

किस बिधि बदलेगी हमारी दुनिया में तेरा दास हूँ कह दे माता
 अच्छा अच्छा, समझा समझा पूरा पूरा तेरा सँदेसा

दुनिया भरका हो एक जत्था मजलूम उठाएँ लाल फरहरा
 पलट पड़े ये सारी सेना दोनो ओर तो फिर क्या कहना
 कुचले जायेंगे मोहरे राजा निमटेगा सबका लेखा खाता
 जुल्मका यूँ निकलेगा जनाज्जा यूँ बिपताकी डूबे नैया
 चूमेगे मुख तेरा तेरे बाले तेरे ही बच्चे तेरे ही बाले
 धरती माँ छातीसे लगा ले

उर्दू-साहित्य हिन्दीमें

सम्पादक 'फिराक' गोरखपुरी

१. नजीरकी बानी—डी० सी० पृष्ठ २३६, २॥) ('नजीर' अकबराबादीकी लोकप्रिय संगीतपूर्ण कविताओंका संग्रह)

२. राग-विराग—डी० सी० पृष्ठ २२०, २॥) (उर्दू साहित्यकी जगतप्रसिद्ध, चुटीली तथा संगीतपूर्ण छन्द-बद्ध प्रेम-कहानियों व नीति-पूर्ण उक्तियोंका संग्रह। उर्दू साहित्यकी प्रसिद्ध मसनविया भी इसमें है)

३. जंजीरें टूटती हैं—डी० सी० पृष्ठ २५० से ऊपर, ३) (देश-प्रेमकी भावनासे लदी हुई उर्दूकी आधुनिक नवीनतम कविताओंका संग्रह)

४. धरतीकी करबट—डी० सी० पृष्ठ २५०, २॥) ('फिराक' की नवीनतम कविताओंका कवि द्वारा ही सङ्कलन)

उपर्युक्त पुस्तकोंमें बहुत कम उर्दूके कठिन शब्द आये हैं। प्रत्येक पुस्तकमें भूमिका, कवि और काव्य-परिचय तथा सम्पूर्ण टिप्पणियाँ दी गई हैं।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

यात्रा और देश-दर्शन

हिमालय परिचय—गढ़वाल

(नक्शा तथा कई चित्रो सहित)

इसी पुस्तकपर हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकारने १९०७ का नवद पुरस्कार लेखकको दिया है।

(पन्ना उलटिये)

“यह पुस्तक न केवल गहनजीकी ही वरन् समस्त हिन्दी समारमे अपने विषयकी एक है इस पुस्तकमे हिन्दी ज्ञान भांडारकी वृद्धि हुई केवल रेफ्रेन्स बुकके तोरण ही इमे देखे तो इसका मूल्य आर महत्त्व बहुत बड़ा है।” दिद्यालयो, मग्रहालयो तथा पुस्तकालयोके लिए ता यह पुस्तक अनिवार्य है।

डो० सी० ५६९ पृष्ठ • कपडेकी जिल्द,

दुरगा कवर • मूल्य दस रुपया

हरिनारायण मेणवाल कृत

कृष्ण-वियोगिनी

(एकाकी नाटक)

तीव्र सम्बेदना सन्हाले हुए, गागरम सागर भर हुए, यह छोट-छोटे, चुटीले एकाकी हिन्दी साहित्यमे निस्मदह नवीन है। विद्यार्थियोके लिए भी उपयुक्त।

डो० सी० १०८ पृष्ठ • मूल्य डेढ रुपया

लेखकका दूसरा संग्रह

“मानिनी गोपा”

वैसा ही रुचिकर तथा भारतीय गौरव एवं भावात्मक आदर्शवादमे भरा हुआ जैसा पहला-संग्रह ‘कृष्ण-वियोगिनी’ ह। विद्यार्थियोके लिए भी उपयुक्त।

डो० सी० १०४ पृष्ठ • मूल्य सवा रुपया

